छिन्नमस्ता एवं भुवनेश्वरी

तन्त्र शास्त्र



तन्त्राचार्य
राजेश दीक्षित

एवं भुवनेश्वरी तन्त्र शास्त्र

दशमहाविद्या तन्त्र-ग्रन्थ माला, संख्या-४

भुवनेश्वरी एवं छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र

[भगवती भुवनेश्वरी तथा छिन्नमस्ता के मन्त्र, यन्त्र, जप,
पूचन, साधन एवं काम्य-प्रयोग विधि, स्तोत्र, कवच
हृदय, सहस्रनामादि का विस्तृत तथा शास्त्रीय
विवेचनात्मक संकलन रेणुका शवरी मन्त्र
प्रयो तथा 'मातृकाभेद' तन्त्र
सहित]



सम्पादक :
विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-वृहस्पति
आचार्य पं. राजेश दीक्षित
[सहस्राधिक ग्रन्थों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध लेखक]



प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट, होस्पीटल रोड, आगरा- 282 003

प्रकाशक :

दीप पब्लिकेशन

कंचन मार्केट

अस्पताल रोड, आगरा-३

लेखक/सम्पादक:

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

संस्करण :

प्रथम, १९८८

द्वितीय, १९९०-९१

तृतीय, १९९५

मूल्य : स्वदेश में - 45/- रुपये

विदेश में - (5) डालर

(4) पौण्ड

मुद्रक :सुमन कम्पोजिंग हाऊस, अमरपुरा, आगरा।

ब्रज प्रिंटिंग प्रेस, नयाबांस, आगरा-२

BHUWANESHWARI EVAM CHHINNAMASTA TANTRA SHASTRA

By : Pt. Rajesh Dixit

दो शब्द

- 'दशमहाविद्या तन्त्र ग्रंथ माला' के अन्तर्गत प्रकाशित इस चौथी पुस्तक में चतुर्थी विद्या भगवती भुवनेश्वरी एवं पंचमी विद्या भगवती छिन्नमस्ता से सम्बन्धित मन्त्र, यंत्र, पूजा, जप एवं पुरश्चरण विधि तथा काम्य-प्रयोगों की शास्त्रीय विधियाँ संकलित की गई हैं।
- उक्त दोनों महाविद्या में से संबंधित सभी साधनविधियों का विस्तृत वर्णन ऐसी सरल भाषा में किया गया है, जिससे सामान्य पाठकों को भी विषय-वस्तु के समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।
- उक्त दोनों महाविद्याओं से सम्बन्धित कवच, हृदय, स्तोत्र तथा सहस्रनाम आदि देकर ग्रंथ को अधिकाधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है। अन्त में 'मातृका भेद तन्त्र' भी संकलित है।
- आशा है, भगवती भुवनेश्वरी एवं छिन्नमस्ता के उपासक इस संकलन से लाभान्वित होंगे। कोई बात समझ में न आये अथवा तन्त्र सम्बन्धी किसी भी जानकारी सामग्री आदि के लिए हमसे पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

महाविद्या कालोनी
मथुरा (उ. प्र.)
संवत्सरारम्भ : सं. २०४४ वि.

—राजेश दीक्षित

समर्पण



अपने परम आत्मीय

डा० श्रीभगवान शर्मा

एम. ए. (त्रय), पी. एच. डी.

अध्यापक : हिन्दी विभाग

सेन्टजौन्स कॉलिज, आगरा

को

सस्नेह



विषय सूची

क्रमांक | पृष्ठाङ्क

(१) भुवनेश्वरी तन्त्र

१. भुवनेश्वरी-तत्त्व १७–१८

२. भुवनेश्वरी एकाक्षर-मन्त्र प्रयोग १९–३२

एकाक्षर मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास, मन्त्रवर्णन्यास, पञ्चवक्त्रन्यास, ध्यान, आवरण-पूजा, पुरश्चरण, काम्य-प्रयोग।

३. भुवनेश्वरी त्र्यक्षर-मन्त्र प्रयोग ३३–३४

त्र्यक्षर मन्त्र, करन्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास, ध्यान-मन्त्र, पुरश्चरण, काम्य प्रयोग।

४. भुवनेश्वरी स्तोत्र, कवच, हृदय आदि ३५–८४

(१) भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मङ्गल कवचम्
(२) भुवनेश्वरी पञ्चर स्तोत्रम्
(३) भुवनेश्वरी हृदय स्तवः
(४) भुवनेश्वरी रहस्य स्तवः
(५) भुवनेश्वरी अष्टोत्तर शत नामः
(६) भुवनेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्रम्
(७) भुवनेश्वरी स्तवराजाष्टकम्
(८) श्रीभुवनेश्वरी स्तुतिः
(९) भुवनेश्वरी खड्गमाला स्तोत्रम्
(१०) भुवनेश्वरी आनन्दमयी स्तवः
(११) भुवनेश्वरी चंचदिति स्तोत्रम्
(१२) भकारादि भुवनेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्रम्

(२) छिन्नमस्ता तन्त्र

१. छिन्नमस्ता-तत्व ८७–८६

भगवती छिन्नमस्ता,

२. छिन्नमस्ता मन्त्र-प्रयोग ६०–१०२

मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, कराङ्गन्यास, हृदयादि षडङ्ग-न्यास, ध्यान, पीठ-पूजा, पीठ-शक्ति पूजा, आवरण-पूजा पद्धति, पुरश्चरण, काम्य-प्रयोग गोपनीय-प्रयोग, उत्कीलन-विधि ।

३. श्रीछिन्नमस्ता नित्यार्चन विधि १०३–१४०

प्रातः कृत्य विधि-गुरुध्यान मन्त्र, गुरु-नमस्कार मन्त्र, पर देवता ध्यान मन्त्र, सङ्कल्प, स्थान-विधि, सन्ध्योपासन, अर्घ्य-तर्पण-ध्यान, छिन्नमस्ता गायत्री, नित्यार्चन-विधि—द्वार-पूजा, पूजा-गृहादि शोधन, भूत-शुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, बहिर्मातृका न्यास, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, अन्तर्मातृका न्यास, बीजन्यास, इष्ट-पूजा, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, षडङ्गन्यास, षोढा-न्यास, व्यापक न्यास, मानसोपचार-पूजा—मुद्रा-प्रदर्शन, सामान्य-अर्घ्य स्थापन, शङ्ख-स्थापन, यन्त्र-स्थापन, पीठ शक्ति-पूजा, ध्यान, आसन-प्रदान, आवाहन, प्राण-प्रतिष्ठा, प्रार्थना, षडङ्ग-न्यास, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, पुनराचमनीय, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, अक्षत, दीप, नैवेद्य, पुनराचमनीय, ताम्बूल, बलि-समर्पण, अन्य; आवरण-पूजा, मन्त्र-जप आदि, विसर्जन ।

४. प्रचण्ड चण्डिका मन्त्र-प्रयोग १४१–१५१

भगवती प्रचण्ड चण्डिका मन्त्र, ध्यान, पूजा यन्त्र, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, पुरश्चरण, भगवती छिन्नमस्ता के अन्य मन्त्र ।

५. रेणुका शबरी मन्त्र-प्रयोग १५२–१५५

भगवती रेणुका शबरी, मन्त्र, विनियोग कराङ्गन्यास, ध्याम, जप एवं हवन, पीठ-पूजा एवं आवरण-पूजा, काम्य-प्रयोग ।

छिन्नमस्ता स्तोत्र, कवच, हृदय आदि १५६-१८४

(१) त्रैलोक्य विजय छिन्नमस्ता कवचम्

(२) श्री छिन्नमस्ता स्तोत्रम्

(३) श्रीप्रचण्ड चण्डिका स्तोत्रम्

(४) श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

(५) श्री छिन्नमस्ता सहस्रनाम स्तोत्रम्

(६) श्री छिन्नमस्ता हृदय स्तोत्रम्

७. मातृकाभेद तन्त्रम् १८५-२



विद्या वारिधि दैवज्ञ बृहस्पति

आचार्य पं० राजेश दीक्षित

लिखित/सम्पादित

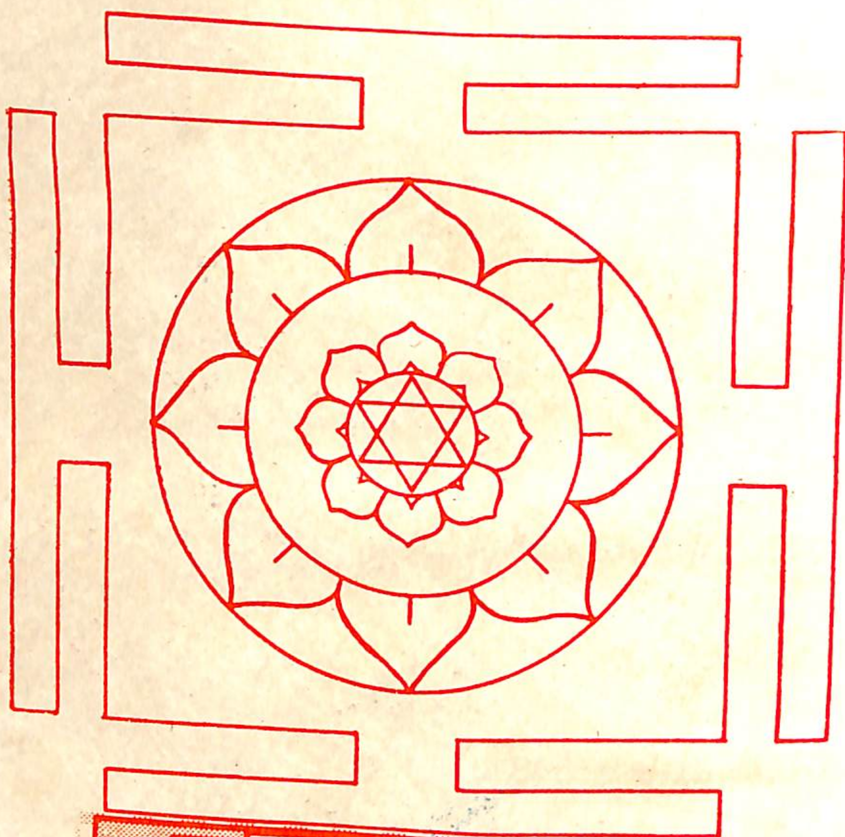
तन्त्र सम्बन्धी श्रेष्ठ साहित्य

●

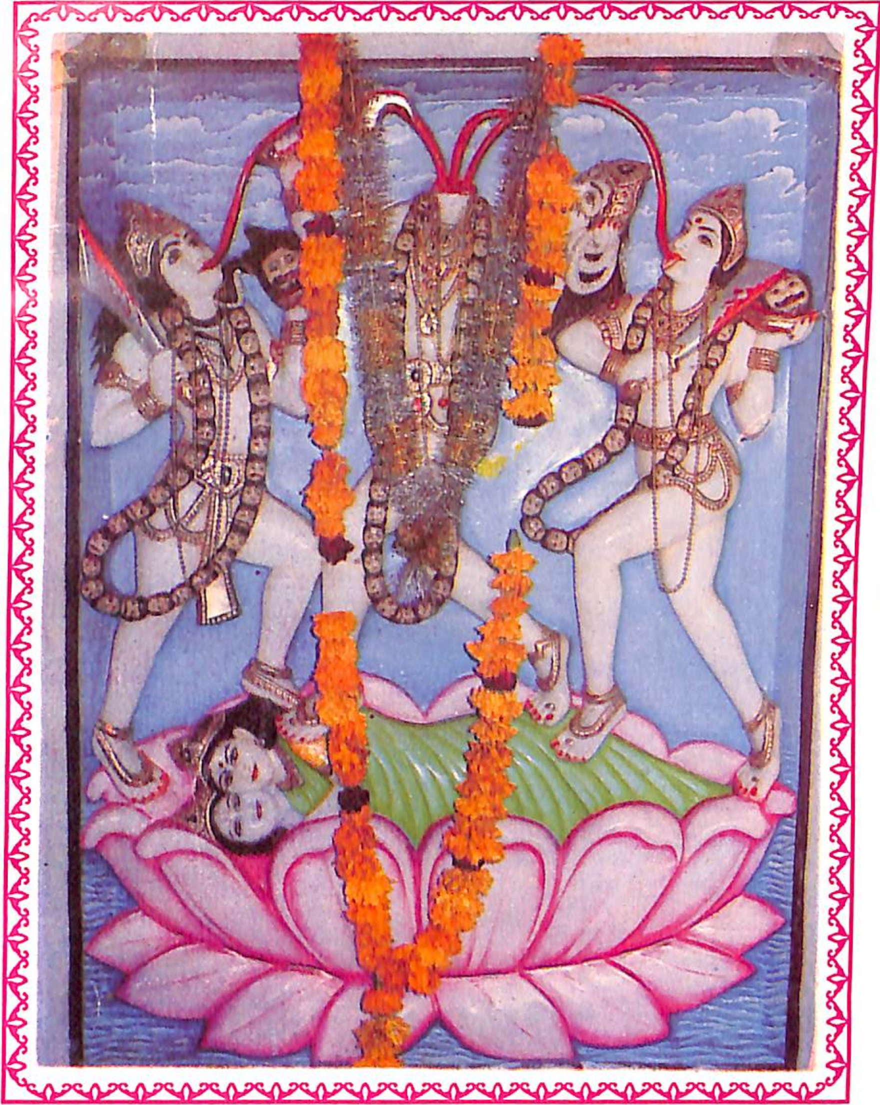


श्री भुवनेश्वरी

उद्यदिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्ग-कुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

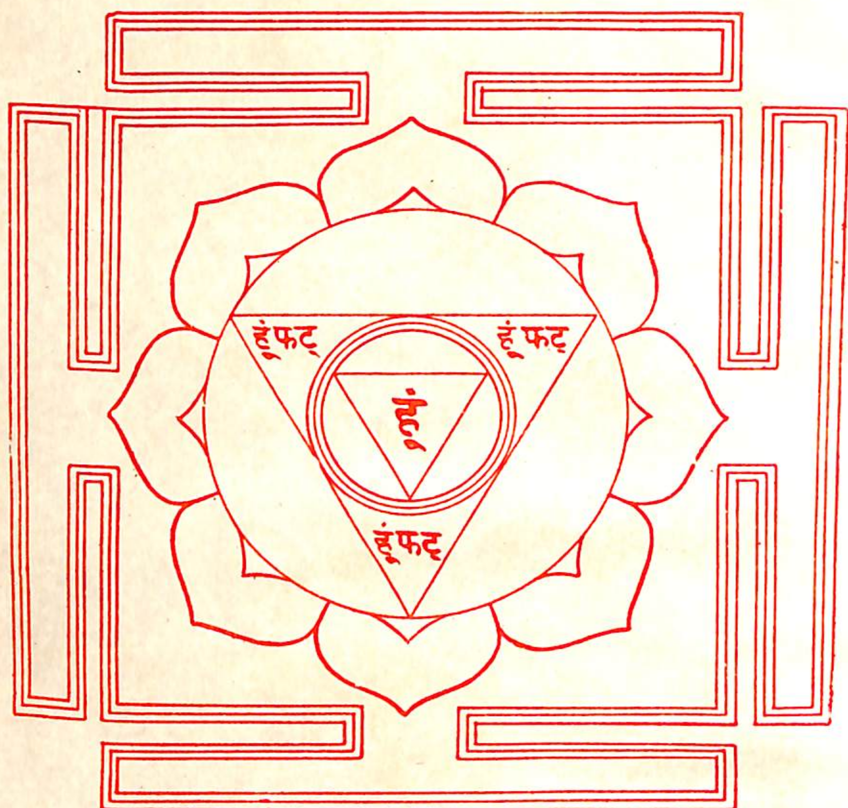


भुवनेश्वरी यन्त्र



श्री छिन्नमस्ता

छिन्नमस्तां करे वामे धारयन्तीं स्वमस्तकम्।
प्रसारितमुखीं भीमां लेलिहानाग्रजिह्विकाम्।।
पिबन्तीं रौधिरीं धारां निजकंठविनिर्गताम्।
विर्कीणकेशपाशाञ्च नाना पुष्पसमन्विताम्।।
दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
दिगम्बरीं महाघोरां प्रत्यालीढ़पदे स्थिताम्।।
अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
डाकिनीवर्णिनीयुक्तां वामदक्षिणयोगतः।।



छिन्नमस्ता यन्त्र

१ | # भुवनेश्वरी-तत्व

भगवती भुवनेश्वरी

दशमहाविद्याओं में भगवती 'भुवनेश्वरी' 'चतुर्थ विद्या' है। इनकी पूजा-उपासना करके जगत् के जीवमात्र को सम्मोहित किया जा सकता है। ये वाणी को स्तम्भित भी कर देती हैं तथा शक्तिहीन को शक्ति प्रदान करने वाली महाशक्ति हैं। इनका अमरनाम 'राजराजेश्वरी' है। ये सिद्ध दात्रि तथा सिद्ध विद्या है। इनके शिव 'त्र्यम्बक' हैं।

जैसाकि 'तारातन्त्र शास्त्र' में दशमहाविद्याओं का परिचय देते हुए बताया जा चुका है। सूर्य के उत्पन्न (उदय) होने पर जब उसमें परमेष्ठ्य सोम की आहुति होकर यज्ञ सम्पन्न हुआ, तब उसके द्वारा त्रैलोक्य का निर्माण हुआ, विश्वोत्पत्ति के उस उपक्रम में 'षोडशी' की सत्ता थी। भुवनों को उत्पन्न कर, उनका संचालन करती हुई वही आद्याशक्ति अब 'भुवनेश्वरी' बन गई। यह चतुर्थ सृष्टिधारा चतुर्थ सृष्टि-विद्या है। इसका स्वरूप बताते हुए ऋषि कहते हैं—

"उद्यदिनद्युति मिन्दु किरीटां
तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशा
भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥"

यदि सूर्य में सोमाहुति न होती तो यज्ञ असम्भव था और यज्ञ के बिना भुवन-रचना नहीं हो पाती। बिना भुवन के 'भुवनेश्वरी' भी उन्मुग्ध थीं।

सूर्य के मस्तक (ऊपरीभाग) पर प्रतिष्ठित ब्राह्मणास्पत्य सोम आहुत हो रहा है, इसीसे भुवनोत्पत्ति हुई है। इसीसे भुवनेश्वरी उद्बुद्ध है। 'इन्दु किरीट' इसी अवस्था का रूपक है।

वे तीनों लोकों पर दृष्टि रखती हैं, यही उनके 'त्रिनेत्र' होने का निदान है।

संसार में जितनी भी प्रजा है, सबको उसी भुवनेश्वरी से अन्न प्राप्त हो रहा है। चौरासी लाख योनियाँ उसीसे अन्न लेकर जीवित हैं, यही उनका 'वरदा' स्वरूप है।

जो भुवन प्रलय-समुद्र में विलीन था, वही इस शक्ति के प्रभाव से विकसित हो रहा है, जैसे वह शक्ति अपनी उग्रता छोड़कर विश्व पर कृपा दृष्टि कर रही है। 'स्मेरमुखी' शब्द इसी भाव का पर्याय है।

भगवती के हाथों में अंकुश-पाश आदि का होना उनकी शासन-शक्ति का परिचायक हैं।

भगवती भुवनेश्वरी की उपासना मुख्यतः वशीकरण, सम्मोहन, वाक्‌सिद्धि, सौभाग्य लाभ एवं शत्रुओं पर विजय पाने के लिए किया जाता है।

अगले प्रकरण में भगवती भुवनेश्वरी के एकाक्षर मन्त्र तथा उसकी साधन-विधि का विस्तृत उल्लेख किया गया है। उससे अगले प्रकरण में त्र्यक्षर मन्त्र का विवरण है।

भगवती के मन्त्र-जप-पूजा आदि के पश्चात् पठनीय स्तोत्र, हृदय, कवच, सहस्रनामादि भी अन्त में संकलित हैं।



२ | भुवनेश्वरी एकाक्षर मन्त्र प्रयोग

एकाक्षर मन्त्र

भगवती भुवनेश्वरी का एकाक्षर मन्त्र निम्नलिखित है—

"ह्रीं।"

इसका 'विनियोग' तथा न्यासादि निम्नानुसार हैं—

विनियोग :

"अस्य श्री भुवनेश्वरी मन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो हकारो बीजं ईकार: शक्तीरेफ: कीलकं श्रीभुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग: ।"

विनियोग के बाद निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास' करें—

ऋष्यादि न्यास :

शक्ति ऋषये नम:–शिरसि ।

गायत्रीच्छंदसे नम:–मुखे ।

भुवनेश्वर्यै देवतायै नम:–हृदि ।

हंबीजाय नम:–गुह्ये ।

ईंशक्तये नम:–पादयो ।

रं कीलकायनम:—नाभौ ।

विनियोगाय नम:–सर्वाङ्गे ।

(इतिऋष्यादि न्यास:)

इसके बाद निम्नानुसार 'करन्यास' करें—

करन्यास :

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

इसके बाद निम्नानुसार 'हृदयादि षडङ्गन्यास' करें—

हृदयादि षडङ्गन्यास :

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ ह्रैं कवचाय हुँ ।
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्ग न्यासः)

उक्त न्यासों को करने के बाद सर्वदेवोपयोगी-पद्धति मार्ग से 'सृष्टि-स्थिति-संहार मातृका न्यास' करना चाहिए । यदि इन्हें करने में असमर्थ हो तो फिर निम्नानुसार 'मन्त्रवर्ण न्यास' आदि करने चाहिए—

मन्त्र वर्ण न्यास :

ॐ हृल्लेखायै नमः–शिरसि ।
ॐ एं गगनायै नमः–मुखे ।
ॐ उं रक्तायै नमः–हृदि ।
ॐ इं करालिकायै नमः–गुह्ये ।
ॐ अं महोच्छुष्मायै नमः–पादपोः

(इति मन्त्रवर्ण न्यासः)

इसके बाद निम्नानुसार 'पञ्च वक्त्रन्यास' करें—

पञ्चवक्त्रन्यास :

ॐ ओं हृल्लेखायै ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि ।

ॐ एं गगनायै पूर्ववक्त्राय नमः मुखे ।

ॐ उं रक्तायै दक्षिणवक्त्राय नमः हृदि ।

ॐ इं करालिकायै उत्तरवक्त्राय नमः गुह्ये ।

ॐ अं महोच्छुष्मायै पश्चिमवक्त्राय नमः पादयोः ।

(इति पंचवक्त्र न्यासः)

विन्यास :

इसके बाद निम्नानुसार 'विन्यास' करें—

ॐ गायत्री सहित ब्रह्मणे नमः भाले ।

ॐ सावित्री सहित विष्णवे नमः दक्षिण कपोले ।

ॐ वागीश्वरी सहित महेश्वरायनमः वाम कपोले ।

ॐ श्रीसहितधनवतये नमः वामकर्णाग्रे ।

ॐ रतिसहितस्मराय नमः मुखे ।

ॐ पुष्टि सहित गणपतये नमः दक्षिणकर्णोपरि ।

ॐ शंख निधये नमः दक्षिणगण्डकर्णान्तिराले ।

ॐ पद्म निधये नमः वामगण्ड कर्णान्तिराले ।

ॐ ह्रीं मूलदेवता भुवनेश्वर्यै नमः मुखे ।

इसके पश्चात्—

ॐ गायत्री सहित ब्रह्मणे नमः कण्ठमूले ।

ॐ सावित्री सहित विष्णवे नमः दक्षिणस्तने ।

ॐ वागीश्वरीसहित महेश्वराय नमः वाम स्तने ।

ॐ श्रीसहित धनपतये नमः वामांसे ।

ॐ रति सहितस्मराय नमः हृदयकमले ।

ॐ पुष्टि सहितगणपतये नमः दक्षिणांसे ।

ॐ शंखनिधये नमः दक्षिण पार्श्वे ।

ॐ पद्मनिधये नमः वाम पार्श्वे ।

ॐ ह्रीं मूलदेवता भुवनेश्वर्यै नमः नाभौ ।

इसके पश्चात्—

ॐ ब्राह्मयै नमः भाले ।

ॐ माहेश्वर्यै नमः वामांले ।

ॐ कौमार्यै नमः वामपार्श्वे

ॐ वैष्णव्यै नमः जठरे ।

ॐ वाराह्यै नमः दक्षिण पार्श्वे ।

ॐ इन्द्राण्यै नमः दक्षिणांसे ।

ॐ चामुण्डायै नमः कण्ठे ।

ॐ महालक्ष्यै नमः हृदि ।

उक्त विधि से विन्यास करने के बाद हृदय पर हाथ रखकर—

"ॐ ह्रीं मूलदेवता भुवनेश्वर्यै सर्वाङ्गे व्यापकं भव ।"

इस प्रकार से विन्यास करके देवतारूप की भावना करते हुए निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"उद्यदिनद्युतिमिन्दु किरीटां,
तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशा,
भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।"

उक्त प्रकार से ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पद्धति-मार्ग से पीठ-देवता को स्थापित करके अथवा—

"मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र द्वारा पीठ देवताओं की पूजा करके पूर्वादि क्रम से पीठ-शक्तियों की निम्नानुसार पूजा करें—

ॐ जयायै नमः ।

ॐ विजयायै नमः ।

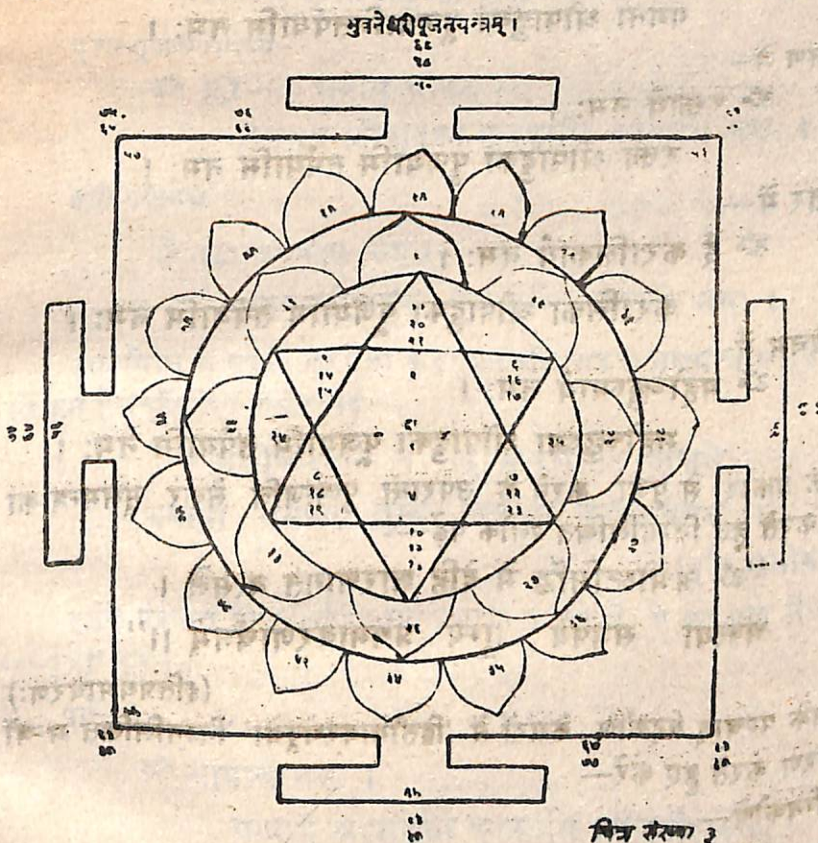
ॐ अजितायै नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।
ॐ नित्यायै नमः ।
ॐ विलासिन्यै नमः ।
ॐ दोग्ध्र्यै नमः ।
ॐ अघोरायै नमः ।

पीठमध्ये—

ॐ मङ्गलायै नमः ।

उक्त विधि से नव पीठ क्तियों की जा करने के बादपू षट्कोणाष्टदलवृत्त तथा षोडशदल पुष्पा भूपुर वाले स्वर्णादि से निर्मित अग्न्युत्तारण पूर्वक यन्त्र (यन्त्र का स्वरूप आगे प्रदर्शित है) को "ॐ **ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः**"—इस मन्त्र द्वारा पुष्पाद्यासन देकर, पीठ के मध्य उसे स्थापित कर, उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर, पुनः ध्यान करके, मूलमन्त्र द्वारा मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर



(भुवनेश्वरी पूजन यन्त्र)

पुष्पाञ्जलि प्रदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके, देवी की आज्ञा लेकर आवरण-पूजा करें—

आवरण-पूजा

आवरण पूजा का क्रम निम्नानुसार है। पहले 'प्रथमावरण-पूजा' की विधि लिखी जाती है इसमें निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजा करें—

देवी के समीप, मध्य में—

ॐ हृल्लेखायै नमः।

हृल्लेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूर्व में—

ॐ एं गगनायै नमः।

गगना श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः।

दक्षिण में—

ॐ रक्तायै नमः।

रक्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

उत्तर में—

ॐ ई करालिकायै नमः।

करालिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पश्चिम में—

ॐ महोच्छुष्मायै नमः।

महोच्छुष्मा श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः।

उक्त प्रकार से पूजा करने के उपरान्त पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥"

(इतिप्रथमावरणः)

इसके पश्चात् षट्कोण केसरों में 'द्वितीयावरणपूजा' निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए करें—

अग्निकोणे—

ॐ ह्रां हृदयाय नमः।

हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

निर्ऋतिकोणे—

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

शिर: श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

वायव्ये—

ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ।

शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

ईशान्ये—

ॐ ह्रैं कवचाय हुं ।

कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

पूज्य-पूजकयोर्मध्ये—

ॐ ह्रौं नेत्र भयाय वौषट् ।

नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

देवी पश्चिमे—

ॐ ह्र: अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

उक्त विधि से षडगों की पूजा कर पुष्पांजलि लेकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शारणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीया वरणार्चनम् ।।"

(इति द्वितीयावरण:)

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा षट्कोणों के अग्रभाग में तृतीयावरण-पूजा' करें—

पूर्वे—

ॐ गायत्र्यै नम: ।

गायत्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

ॐ ब्रह्मणे नम: ।

ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

नैर्ऋते—

ॐ सावित्र्यै नमः ।

सावित्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विष्णवे नमः ।

विष्णु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

वायुकोणें—

ॐ सरस्वत्यै नमः ।

सरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ रुद्राय नमः ।

रुद्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

अग्निकोणे—

ॐ श्रियै नमः ।

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ धनपतये नमः ।

धनपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पश्चिमे—

ॐ रत्यै नमः ।

रति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ स्मराय नमः ।

स्मर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ईशान्याम्—

ॐ पुष्ट्यै नमः ।

पुष्टि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गणपतये नमः ।

गणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

षट्कोण दक्षिणे—

ॐ शंखनिधयेनमः ।

शंखनिधि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ पद्मनिधये नमः ।

पद्मनिधि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त विधि से पूजा कर, पुष्पांजलि लेकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।"

(इति तृतीयावरणः)

इसके पश्चात् पूर्वादि अष्ट दलों में आठ शक्तियों की निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'चतुर्थावरणपूजा' करें—

ॐ अनंगकुसुमायै नमः ।

अनंगकुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनंग कुसुमातुरायै नमः ।

अनंगकुसुमातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः ।

ॐ अनंगदमनायै नमः ।

अनंगदमना श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनंग मदनातुरायै नमः ।

अनंगमदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भुवनपालायै नमः ।

भुवनपाला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गगन वेगायै नमः ।

गगनवेगा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ शशिरेखायै नमः ।

शशिरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गगन रेखायैनमः ।

गगनरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त विधि से पूजा कर, पुष्पांजलि लेकर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्रलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।"

(इति चतुर्थावरण:)

इसके पश्चात् षोडश दलों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा षोडश देवियों की 'पंचमावरण पूजा' करें—

ॐ करालयै नम: ।
करालो श्रीपादुकां पूजयामि तपर्यामि नम: ।
ॐ विकरालयैनम:
विकराली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ उमायै नम:
उमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ सरस्वत्यै नम:
सरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ श्रियैनम:
श्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ दुर्गायै नम:
दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ उषायै नम:
उषा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ लक्ष्यै नम:
लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ श्रुत्यैनम:
श्रुति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ स्मृत्यै नम:
स्मृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
ॐ धृत्यैनम:
धृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

ॐ श्रद्धायै नमः

श्रद्धा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मेधायैनमः

मेधा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मत्यै नमः

मति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कान्त्यै नमः

कान्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ आर्ध्यायै नमः

आर्ध्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त विधि से पूजा कर पुष्पांजलि लेकर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥"

(इति पञ्चमावरणः)

इसके बाद भूपुर के अभ्यन्तर में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'षष्ठावरण पूजा' करें—

ॐ अनङ्गरूपायै नमः

अनङ्गरूपा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनङ्गमदनायै नमः

अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनङ्ग मदनातुरायै नमः

अनङ्गमदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भुवय रेखायै नमः

भुवनरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भुवन पालिकायै नमः

भुवन पालिका श्रीपादकां पजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सर्वशिशिरायै नमः

सर्वशिशिरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनङ्ग वेदनायै नमः

अनङ्ग वेदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अनङ्ग मेखलायै नमः

अनङ्ग मेखला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त विधि से पूजा कर, पुष्पांजलि लेकर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ।।"

(इति षष्ठावरणः)

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से सायुध, सवाहन तथा सपरिवार इत्यादि दस दिक्पालों का निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'सपामावरण-पूजा' करें—

ॐ लं इन्द्राय देवाधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ रं अग्नेय तेजोधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मां यमाय प्रेताधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षंनिर्ऋतये रक्षोधिपतये सामुधाय सवाहनाम सपरिवाराय नमः ।

निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

वरुण श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

वायु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ सौं सोमाय ताराधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

सोम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ हं ईशानाय गणाधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इन्द्रेशानयोर्मध्ये

ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

निर्ऋति वरणोर्मध्ये

ॐ ह्रीं अनन्ताय नामाधिपतये सामुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः ।

अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि पर्पयामि नमः ।

इस प्रकार दिक्पालों की पूजा करने के पश्चात् भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए आयुधों का पूजन करें—

ॐ वं वज्राय नमः ।
ॐ शं शक्तये नमः ।
ॐ दं दण्डाय नमः ।
ॐ खं खड्गाय नमः ।
ॐ वां वाशाय नमः ।
ॐ अं अंकुशाय नमः ।
ॐ गं गदाय नमः ।
ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ।
ॐ पं पद्माय नमः ।
ॐ चं चक्राय नमः ।

उक्त विधि से वस्त्रों की पूजा कर, पुष्पांजलि लेकर, मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्नलिखित श्लोक पढ़ें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥"

(इति सप्तमावरण)

पुरश्चरण

उक्त प्रकार से आवरण-पूजा सम्पन्न करके धूप-दान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके मन्त्र-जप करें ।

इस मन्त्र का पुरश्चरण ३२,००००० (बत्तीस लाख) जप है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

(१) पीपल, (२) गूलर, (३) पलाश एवं (४) बरगद की समिधाएँ तथा (५) पीली सरसों, (६) तिल, (७) खीर और (८) घृत—इन आठों को 'होम-द्रव्य' कहा गया है। इन पदार्थों से होम करने वाला समस्त देवताओं से पूजित होता है।

काम्य प्रयोग

मन्त्र-सिद्ध हो जाने के बाद काम्य-प्रयोग निम्नानुसार करने चाहिए—

१—मधु, घृत, शर्करा तथा पीपल की समिधाओं से होम करने पर ब्राह्मण वशीभूत हो जाते हैं।

२—कमल के पुष्पों से होम करने पर राजा वश में हो जाता है।

३—पलाश के फूलों से होम करके राज-पत्नियों को वश में किया जा सकता है।

४—कुमुद पुष्पों का होम करने से मन्त्री वश में हो जाते हैं।

५—मन्त्र द्वारा पच्चीसबार अभिमन्त्रित जल से प्रतिदिन अपना ही अभिषेक करने वाला साधक सर्व सौभाग्यवान् होता है।

६—मन्त्र द्वारा पच्चीस बार अभिमन्त्रित जल को नित्य प्रातःकाल पीने वाला मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान होकर श्रेष्ठ कवि बन जाता है।

७—कपूर तथा अगर युक्त केसर से सिद्ध किए हुए तिलक को धारण करने से राजा का वशीकरण होता है।

८—घृत, मधु तथा शक्कर के साथ चावल के आटे द्वारा निर्मित पुतली को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके उसे रविवार के दिन खाने वाला साधक राजा तथा स्त्री-पुरुषों को वश में कर लेता है।

९—अकण्ठ पानी में खड़े होकर जल में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखते हुए, तीन हजार की संख्या में मन्त्र-जप करने वाला मनुष्य इष्ट-कन्या को पत्नी के रूप में प्राप्त करता है।

१०—मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित अन्न को सेवन करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

११—अमावस्या के दिन लकड़ी के पटरे पर उक्त मन्त्र को लिखकर गर्भवती स्त्री को दिखाने से उसे तत्काल ही सुखपूर्वक प्रसव होता है।

●●

३ | भुवनेश्वरी त्र्यक्षर मन्त्र प्रयोग

त्र्यक्षर मन्त्र

भगवती भुवनेश्वरी का तीन अक्षरों वाला मन्त्र निम्नलिखित है—

"ऐं ह्रीं श्रीं।"

इसके न्यास तथा अन्य विधान पूर्वोक्त भगवती के एकाक्षर-मन्त्र की भाँति ही हैं। षडङ्गन्यास में निम्नलिखित विशेष हैं—

करन्यास :

ऐं ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ऐं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ऐं ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ऐं ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(इति करन्यासः)

हृदयादि षडङ्गन्यास :

ॐ ऐं ह्रां हृदयाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रूं शिखायै नमः।
ॐ ऐं ह्रैं कवचाय हुम्।
ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐं ह्रः अस्त्राय फट्।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यासः)

उक्त विधि से न्यास करने के बाद निम्नानुसार ध्यान करना चाहिए—

ध्यान-मन्त्र :

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुर-
त्तारानायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थ सव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ।।

उक्त प्रकार से ध्यान करें। इस मन्त्र की पूजा आदि की विधि पूर्व मन्त्र की भाँति ही है।

पुरश्चरण :

इसका पुरश्चरण १२,००,००० (बारह लाख) जप है। जपका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करावें।

होम के लिए घृत, मधु तथा शक्कर युक्त खीर का प्रयोग करें एवं पूर्वोक्त पीठ पर पूजा करें।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

काम्य-प्रयोग :

१—मनोरम गंध तथा पलाश पुष्पों से होम करने पर वाक्सिद्धि प्राप्त होती है।

२—मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित ब्राह्मी-घृत को एक वर्ष तक सेवन करते रहने से कवित्व-शक्ति प्राप्त होती है।

३—नमक के साथ पीली सरसों का होम करने से नर-नारी तथा राजा का वशीकरण होता है।

४—चन्दन के जल से सिक्त चार अंगुल वाले फूलों से होम करके साधक तीनों लोकों को वश में कर सकता है।

५—घृत, मधु तथा शक्कर युक्त लाल कमलपुष्पों से होम करने से राज्यश्री प्राप्त होती है।

६—जल युक्त चावलों का होम करने से भी अभीष्ट-सिद्धि प्राप्त होती है।



४ | भुवनेश्वरी स्तोत्र, कवच, हृदय आदि

भगवती भुवनेश्वरी के पूजन, मन्त्र-जप आदि के बाद उनके कवच, हृदय, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करने से अक्षय पुण्य एवं वांछित लाभ मिलता है।

मन्त्र-जप आदि के बिना भी यदि इन स्तोत्र आदि का पाठ किया जाता है, तो भी साधक की मनोभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

इस प्रकरण में भगवती भुवनेश्वरी से सम्बन्धित कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि सङ्कलित किए गए हैं। साधकों को चाहिए कि वे इनके नित्य पाठ द्वारा पुण्य-लाभ करें तथा इष्ट-सिद्धि में सहायक बनें।

भुवनेश्वरी त्रैलोक्यमंगल कवचम्

देव्युवाच

भुवनेश्वर्याश्च देवेश या या विद्याः प्रकाशिताः।
श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥१॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत्पुरोदितम्।
कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम् ॥२॥

ईश्वर उवाच

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानाऽवधारय।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥३॥
सिद्धविद्यामयं देवि सर्वैश्वर्यप्रदायकम्।
पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ॥४॥
त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य ऋषिश्शिवः।
छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्वरी ॥५॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ॥६॥
ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम् ।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ॥७॥
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ।
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम ॥८॥
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका ।
श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा ॥९॥
क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ।
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेश सदावऽतु ॥१०॥
क्रौं पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।
सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी ॥११॥
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ।
माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम् ॥१२॥
अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम् ।
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णात्मिका पुरा ॥१३॥
तारं माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परम् ।
शिरस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥१४॥
तारं दुर्गे-युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी ।
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा ॥१५॥
मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च परा तथा ।
उत्तप्तकाञ्चनाभासा जयदुर्गाऽननेऽवतु ॥१६॥
तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा ।
शङ्खचक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु ॥१७॥
महिषमर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा ।
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ॥१८॥

माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता ।
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥१९॥
पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वधा ।
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनलेऽवतु ॥२०॥
सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ।
स्वाहारव्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु ॥२१॥
तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः ।
हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा ॥२२॥
त्वरिताष्टाहिभिः पायात् शिवकोणे सदा च माम् ।
ऐं क्लीं सौः सततं बाला मूर्ध्वदेशेततोऽवतु ॥२३॥
बिद्वन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु ।
इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम् ॥२४॥
सारं सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम् ।
अस्यापि पठनात् सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः ॥२५॥
इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद्धारणाद्यतः ।
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥२६॥
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥२७॥
प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ।
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः ॥२८॥
यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।
कवचं परमं पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः ॥२९॥
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥३०॥
बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सुतम् ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तति तं जनम् ॥३१॥

एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भुवनेश्वरीम् ।
दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥३२॥

॥ इति रुद्रयामले त्रैलोक्यमङ्गलं नाम श्री भुवनेश्वरी कवचं ॥



भुवनेश्वरी पञ्जरस्तोत्रम्

इदं श्री भुवनेश्वर्याः पञ्जरं भुवि दुर्लभम् ।
येन संरक्षितो मर्त्यो वाणैः शस्त्रैर्न बाध्यते ॥१॥
ज्वर-मारी-पशु - व्याघ्र - कृत्या - चौराद्युपद्रवैः ।
नद्यम्बु - धरणी - विद्युत्कृशानु - भुजगारिभिः ॥२॥
सौभाग्यारोग्य - सम्पत्ति -
कीर्तिकान्ति यशोर्थदम् ।
ओं क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौः पूर्वेऽधिष्ठाय
मां पाहि चक्रिणि भुवनेश्वरि ॥३॥
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते ।
कृष्णवर्णे महद्भूते वृहत्कर्णे भयङ्करि ॥४॥
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ।
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं ॥५॥
यदि शक्यमशक्यं तन्मे
भगवति शमय स्वाहा ।
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥६॥
ममाग्नेयां स्थिता पाहि गदिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये योगिनी - गण - सेविते ॥७॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि ।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ॥८॥

उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं ।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ।।९।।
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि
शङ्खिनी भुवनेश्वरी ।।१०।।
नैर्ऋत्ये मां स्थिता पाहि खड्गिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।११।।+
पश्चिमे मां स्थिता पाहि पाशिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१२।।
वायव्ये मां स्थिता पाहि शक्तिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१३।।
सौम्येऽधिष्ठाय मां पाहि चापिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१४।।
ईशेऽधिष्ठाय मां पाहि शूलिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१५।।
ऊर्ध्वेऽधिष्ठाय मां पाहि पद्मिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१६।।
अधस्तान्मां स्थिता पाहि वाणिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१७।।
अग्रतो मां स्थिता पाहि प्रासिनी भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१८।।
पृष्ठतो मां स्थिता पाहि वरदे भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये···शंखिनी भुवनेश्वरी ।।१९।।

+ यहाँ चतुर्थ श्लोक 'योगविद्ये' से लेकर दशम श्लोक में उल्लिखित गायत्री मन्त्र के अन्त तक 'शङ्खिनी भुवनेश्वरी' तक पाठ करे ।

पश्चिमो मां सदा पाहि सांकुशे भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये''शंखिनी भुवनेश्वरी ।।२०।।
सर्वतो मां सदा पाहि सायुधे भुवनेश्वरी ।
योगविद्ये महामाये''शंखिनी भुवनेश्वरी ।।२१।।
प्रोक्ता दिङ्मनवो देवि चतुर्दश शुभप्रदाः ।
एतत् पञ्जरमाख्यातं सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
न भक्ताय प्रदातव्यं नाशिष्याय कदाचन ।।
सिद्धिकामो महादेवि गोपयेन्मातृजारवत् ।
भयकाले होमकाले पूजाकाले विशेषतः ।।
दीपस्यारम्भकाले वै यः कुर्यात्पञ्जरं सुधीः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति प्रत्यूहैर्नाभिभूयते ।।
रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत् ।
कृत्या-रोग-पिशाचाद्यैर्न कदाचित् प्रबाध्यते ।।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्यायामर्द्धरात्रके ।
यः कुर्यात् पञ्जरं मर्त्यो देवीं ध्यात्वा समाहितः ।।
कालमृत्युमपि प्राप्तं जयेदत्र न संशयः ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रं न लगन्ति च ।।
पुत्रवान् धनवाँल्लोके यशस्वी जायते नरः ।।

।। इति श्री रुद्रयामले भुवनेश्वरी-पञ्जर-स्तोत्रं समाप्तम् ।।



भुवनेश्वरी हृदयस्तवः

देव्युवाच

भगवन् ब्रूहि तत्स्तोत्रं सर्वकामप्रसाधनम् ।
यस्य श्रवणमात्रेण नान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते ।।
यदि मेऽनुग्रहः कार्यः प्रीतिश्चापि ममोपरि ।
तदिदं कथय ब्रह्मन् विमलं यन्महीतले ।।

ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सवकामप्रसाधनम् ।
हृदयं भुवनेश्वर्याः स्तोत्रमस्ति यशोदयम् ।।

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रस्य शक्तिर्ऋषिः, गायत्री छंदः, भुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, सकल-मनोवांच्छित-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।।

ह्रीं श्रीं ऐं एवं हृदयादि, षडङ्गानि तथा एवं करन्यासः ।

अथ ध्यानम्—

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृतजनिजननों योगिनों योगयोंनि । देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-परंज्योतिरुग्राङ्गधात्रीम् ।। शंखचक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैर्मायामाद्यां विशिष्टां भवभव-भुवनां भूभवा भारभूमिम् ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य पठेत्—

यदाज्ञया यो जगदाद्यशेषं सृजत्यजः श्रीपतिरौरसं वा ।
विभर्ति संहन्ति भवस्तदन्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ।।१।।
जगज्जनानन्दकदीं जयाख्यां यशस्विनीं यन्त्रसुयज्ञयोनिम् ।
जितामितामित्रकृतप्रपञ्चां भजामहे श्री भुवनेश्वरीं ताम् ।।२।।
हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिजपाद्म जन्मा ।
विधिस्ततोऽब्धे विदधार यत्पदं भजामहे श्रीभुवनेश्वरी ताम् ।।३।।

न विद्यते क्वापि तु जन्म यस्या
न वा स्थितिः सान्ततिरो ह यस्याः ।
न वा निरोधेऽखिलकर्म यस्याः
भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ।।४।।

कटाक्षमोक्षा चरणोग्रवित्ता निवेशितार्णाः करुणार्द्रचित्ता ।
सुभक्तये एति समीप्सितं या भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ।।५।।
यतो जगज्जन्म बभूव योनेस्तदेव मध्ये प्रतिपाति यां वा ।
तदत्ति यान्तेऽखिलमुग्रकाली भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ।।६।।

सुषुप्तिकाले जनमध्ययन्त्या यया जनः स्वप्नमवैति किञ्चित् ।
प्रबुध्यते जाग्रति जीव एष भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥७॥
दयास्फुरत्कोरकटाक्षलाभान्नैकत्र यस्या प्रलभन्ति सिद्धाः ।
कवित्वमीशित्वमपि स्वतन्त्रा भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥८॥
लसन्मुखाम्भोरुहमुत्स्फुरन्तं हृदि प्रणिध्याय दिशि स्फुरन्तः ।
यस्याः कृपार्द्रं प्रविकाशयन्ति भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥९॥
प्यदानुरागानुगतालि - चित्राश्चिरन्तनप्रेमपरिप्लुतांगा ।
सुनिर्भयाः सन्ति प्रमुद्य यस्याः भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥१०॥
हरि-विरञ्चि-हर-ईशितारः पुरोऽवतिष्ठन्ति परव्रताङ्गाः ।
यस्या समिच्छन्ति सदानुकूल्यं भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥११॥
मनुं यदीयं हरमग्निसंस्थं ततश्च वामश्रुतिचन्द्रसक्तम् ।
जपन्ति ये स्युः सुरवन्दितास्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं तां ॥१२॥
प्रसीदतु प्रेमरसार्द्रचित्ता सदा हि सा श्री भुवनेश्वरी मे ।
कृपाकटाक्षेण कुबेरकल्पा भवन्ति यस्याः पदभक्तिभाजः ॥१३॥
मुदा सुपाठ्यं भुवनेश्वरीयं सदासतां स्तोत्रमिदं सुसेव्यं ।
सुखप्रदं स्यात् कलिकल्मषघ्नं सुश्रृण्वतां सम्पठतां प्रशस्यम् ॥१४॥

एतत्तु हृदयस्तोत्रं पठेद्यस्तु समाहितः ।
भवेत्तस्येष्टदा देवी प्रसन्ना भुवनेश्वरी ॥१५॥
ददाति धनमायुष्यं पुण्यं पुण्यभतिं तथा ।
नैष्ठिकी देवभक्ति च गुरुभक्ति विशेषतः ॥१६॥
पूर्णिमायां चतुर्दश्यां कुजवारे विशेषतः ।
पठनीयमिदं स्तोत्रं देवसद्मनि यत्नतः ॥१७॥
यत्र कुत्रापि पाठेन स्तोत्रस्यास्य फलं भवेत् ।
सर्व-स्थानेषु देवेश्याः पूतदेहः सदा पठेत् ॥१८॥

॥ इति श्री नील सरस्वती तन्त्रे भुवनेश्वरी पटले श्रीदेवीश्वर सम्बोद श्रीभुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रं समाप्तम् ॥



भुवनेश्वरी रहस्य-स्तवः

अधुना शृणु देवेशि स्तोत्रं तत्वनिरूपणम् ।
सर्वस्वं भुवनेश्वर्य्याः परापररहस्यकम् ॥१॥
यस्य कस्य न वक्तव्यं विना शिष्याय पार्वति ।
अस्य स्तोत्रस्य देवेशि ऋषिर्भैरव उच्यते ॥२॥
छन्दोऽनुष्टुप्समाख्यातं देवता भुवनेश्वरी ।
श्रीतत्वरूपिणी बीजं माया ह्रैं शक्तिरुच्यते ॥३॥
ह्रः कीलकं समाख्यातं मोक्षार्थे विनियोगकः ।
उद्यत्सूर्यसहस्राभां शशाङ्ककृतशेखरां ॥४॥
पद्मासनां स्मेरमुखीं सूर्येन्द्वग्निविलोचनां ।
रक्तवस्त्रधरां पद्मपाशांकुशवरान् करैः ॥५॥
दधतीं भुवनेशानीं ध्यायेत् हृत्पङ्कजे शिवां ॥६॥
वाग्भवं तव शिवे प्रिय बीजं ध्यायते यदि नरोऽचलचेताः ।
तस्य त्वच्चरणपूजनमात्राज्जायते हि कमलैव तदानीम् ॥७॥
शक्तिबीजमनघं सुधाकरं साधको यदि जपेद्धृति भक्त्या ।
तस्य स्वर्गललना चरणाब्जौ रञ्जयन्ति मुकुटैर्मणियुक्तैः ॥८॥
मायाबीजं यो जपेत्ते महेशि
तत्व मन्त्री भक्तिमान्मुक्तिकांक्षी ।
त्वत्सादृश्यात् याति त्वद्धाम रम्यं
नाकस्त्रीभिर्वीज्यमानः मृणालैः ॥९॥
त्वन्मन्त्रमध्ये भुवनेश्वरीति, यो नाम रम्भापरिरम्भकांक्षी ।
ध्यायेद्धृदब्जे शशिखण्डचूडे, स याति रम्भां परिरभ्य नाकम् ॥१०॥
मायार्णं यः साधको ध्यायतेऽम्ब, तस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रादयस्ते ।
देवाः पादौ रञ्जयन्ति स्म नित्यं, मौलिस्थैस्तैरिन्द्रनीलादिरत्नैः ॥११॥
तत्वरूपिणि भवन्मनुमध्ये, यो जपेत्तव सुधाकरमाख्यम् ।
देवि तस्य खलु साधकराज्ञो, विश्वमेतदखिलं वशमेति ॥१२॥

मायाबीजं देवि मन्त्रान्तसस्थं, रात्रौ बह्नि ध्यायते यो हृदन्तः ।
भूमौ भूयास्तस्य पादाब्जयुग्मं, रञ्जन्ति स्वैर्मौलिरत्नांशुभिस्तैः ॥१३॥

इतीदं परमं तत्वं तत्वविद्यास्तवोत्तमम् ।
रहस्यं भुवनेश्वर्याः सर्वस्वं मम पार्वति ॥१४॥
सम्पूज्य भुवनेशानीं यः पठेत्साधकोत्तमः ।
तस्याऽष्टौ सिद्धयौ देवि करसंस्था महेश्वरि ॥१५॥
अस्य स्तवस्य देवेशि प्रभावं कथितं विभुः ।
नास्म्यहं भुवनेश्वर्याः पञ्चवक्त्रैर्न संशयः ॥१६॥

॥ इति श्री भुवनेश्वरी-रहस्ये श्रीभुवनेश्वर्याः स्तोत्रम् ॥



भुवनेश्वरी अष्टोत्तरशत नामः

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
नरनारीहितार्थाय शिवं पप्रच्छ पार्वती ॥१॥

देव्युवाच

भुवनेश्वरी महाविद्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा ॥२॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि महाभागे स्तवराजमिदं शुभम् ।
सहस्रनाम्नामधिकं सिद्धिदं मोक्षहेतुकं ॥३॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः सर्वकामफलप्रदं ॥४॥

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्य्यष्टोत्तरः शतनामस्तोत्रस्य शक्तिर्ऋषि-र्गायत्री छन्दो भुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसाधने विनियोगः ।

ॐ महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा ।
माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥५॥

वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटिसेविता ।
जया च विजया चैव कौमारी सर्वमङ्गला ॥६॥
हिंगुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी ।
ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी ॥७॥
वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता ।
वामांगा वामाचारा च वामदेवप्रिया तथा ॥८॥
डाकिनी योगिनीरूपा भूतेषी भूननायिका ।
पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती ॥९॥
भूचरी खेचरी माया मातङ्गी भुवनेश्वरी ।
कान्ता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥१०॥
उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिनी ।
इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा ॥११॥
सर्वधातुमयीमूर्तिर्जलरूपा जलोदरी ।
आकाशी रणगा चैव नृकपालविभूषणा ॥१२॥
नर्म्मदा मोक्षदा चैव कामधर्मार्थदायिनी ।
गायत्री चाथ सावित्री त्रिसन्ध्या तीर्थगामिनी ॥१३॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।
पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्तिस्वरूपिणी ॥१४॥
सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला ।
अनला अर्द्धमात्रा च अरुणा पीनलोचना ॥१५॥
लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी ।
नागपाशधरा मूर्तिरगाधा धृतकुण्डला ॥१६॥
क्षयरूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता ।
अव्यक्ता व्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी ॥१७॥
मातङ्गी मत्तमातङ्गी महादेवप्रिया सदा ।
दैत्यहा चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा ॥१८॥

य इदं पठते भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः ।
अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत् ॥१९॥
मूर्खोपि लभते शास्त्रं चौरोपि लभते गतिम् ।
वेदानां पाठको विप्रः क्षत्रियो विजयी भवेत् ॥२०॥
वैश्यस्तु धनवान् भूयात् शूद्रस्तु सुखमेधते ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥२१॥
ये पठन्ति सदा भक्त्या न ते वै दुःखभागिनः ।
एककाल द्विकालं वा त्रिकालं वा चतुर्थकम् ॥२२॥
ये पठन्ति सदा भक्त्या स्वर्गलोके च पूजिताः ।
रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा पन्नगा गरुडं यथा ॥२३॥
शत्रवः प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रविलोकनात् ।

॥ इति श्रीरुद्रयामले भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं ॥



भुवनेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्रीपार्वत्युवाच—

देव देव महादेव सर्वशास्त्रविशारद ।
कपालखट्वाङ्गधर चित्रभस्माङ्गलेपन ॥१॥
या आद्या प्रकृतिर्नित्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता ।
तस्याः श्रीभुवनेश्वर्या नामाष्टकसहस्रकम् ॥२॥
कथयस्व महादेव येन देवी प्रसीदति ।

श्रीमहेश्वर उवाच

साधु पृष्टं महादेवि साधु लोकहिताय च ॥३॥
या आद्या प्रकृतिर्नित्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता ।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥४॥
आराधनाद्भवेद्यस्या जीवन्मुक्तो न संशयः ।
तस्या नामसहस्राणि कथयामि शृणुष्व तत् ॥५॥

अस्य श्रीभुवनेश्वरी नाम स्तोत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्तिविराट् छन्द आद्या भुवनेश्वरी देवता मम धर्मार्थकाममोक्षार्थ विनियोगः ।

ॐ आद्या कमला वाणी माया श्रीभुवनेश्वरी ।
भुवना भावना भव्या भवानी भवमोचनी ॥६॥
रुद्राणी रुद्रभक्ता च तथा रुद्रप्रिया सती ।
उमा कामेश्वरी दुर्गा सर्वाणी सर्वमंगला ॥७॥
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी सुन्दरप्रिया ।
रमणी रमणा रामा कामकार्यकरी शुभा ॥८॥
ब्राह्मी नारायणी चण्डा चामुण्डा चण्डनायिका ।
माहेश्वरी च कौमारी वाराही चापराजिता ॥९॥
महामाया मुक्तकेशी महात्रिपुरसुन्दरी ।
सुन्दरी शोभना रक्ता रक्तवस्त्रपिधायिनी ॥१०॥
रक्ताभा रक्तवर्णा च रक्तबीजनिसूदिनी ।
रक्तचन्दनलिप्ताङ्गी रक्तपुष्पप्रिया सदा ॥११॥
लक्ष्मीर्लोलाञ्चला चञ्चलाक्षी च चपलप्रिया ।
भैरवी भयकर्त्री च महाभयप्रदायिनी ॥१२॥
भयङ्करी महाभीमा भयदा भयनाशिनी ।
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे संस्थिता भयवर्द्धिनी ॥१३॥
जया च विजया चैव जयपूर्वा जयप्रदा ।
यमुना यामुना याम्या यमश्रेष्ठा यमप्रिया ॥१४॥
सर्वेशी जनिका जन्या जयवर्द्धनकारिणी ।
काली कपालिनी कुल्या कालिका कालरात्रिका ॥१५॥
महाकालहृदिस्था च कालभैरवरूपिणी ।
कपालखट्वाङ्गधरा पाशांकुशविधारिणी ॥१६॥
अभया च भया चैव तथा चाभयदायिनी ।
महामाया भीमवेगा महावेगा महास्तनी ॥१७॥

गौरी गौराङ्गका गौरा गौरवर्णा जयप्रदा ।
उग्रा उग्रप्रभा शान्ता शान्तिदा शान्तिदायिनी ॥१८॥
उग्रतारा तथा चोग्रा नीला चैकजटा तथा ।
हंसरूपा महातारा तथा च सिद्धिकालिका ॥१९॥
तारा नीला च वागीशी तथा नीलसरस्वती ।
गङ्गा काशी सती सत्या सर्वतीर्थमयी तथा ॥
तीर्थपुण्यानार्थरूपा तीर्थदा तीर्थसेविका ॥२०॥
पुण्यापुण्यस्वरूपा च पुण्यदात्री सनातनी ।
पुण्यकान्ता पुण्यसंस्था तथा पुण्यजनप्रिया ॥२१॥
तुलसी तुलना तुल्या बालिका वेधसः प्रिया ।
सत्य सत्यवती भीमा रुक्मिणी कृष्णवल्लभा ॥२२॥
देवकी कृष्णमाता च सुभद्रा भद्ररूपिणी ।
मनोहरा तथा सौम्या सोमांगी सोमदर्शना ॥२३॥
कुमारी बालिका क्षुद्रा कुमारीरूपधारिणी ।
युवती युवतीरूपा युवतीरसरञ्जिका ॥२४॥
पीनस्तनी क्षीणमध्या प्रौढ़ा च जनवल्लभा ।
अतिवृद्धा स्थाणुरूपा चार्वङ्गी चञ्चलानना ॥२५॥
देवमाता देवरूपा देवकार्यकरी शुभा ।
देवमाता देवदीक्षा सर्वमाता सनातनी ॥२६॥
प्राणप्रिया पालिनी च चपला पललप्रिया ।
मत्स्यमांसप्रिया मांसाशिनी च जनवल्लभा ॥२७॥
तपस्विनी तपी तप्या तपःसिद्धिप्रदायिनी ।
हविष्याशी हविर्भोक्ती हव्यकव्यविलासिनी ॥२८॥
स्वधा स्वाहा स्वधाधारा यज्ञाङ्गी यज्ञभुक् सदा ।
दक्षा दाक्षायणी दुर्गा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥२९॥
पार्वती पर्वतप्रीता तथा पर्वतवासिनी ।
हैमी हैमा हेमरूपा मौलिमान्या मनोरमा ॥३०॥

कैलासवासिनी शुक्ला शिवक्रोडनिवासिनी ।
चार्वंगी चारुरूपा च शुभा चैव शुभानना ॥३१॥
चलत्कुण्डलगण्डा च लौहकुण्डलधारिणी ।
हेमसिंहो॰ ॰स्था च हेमभूषणभूषणा ॥३२॥
हेमाङ्गदा हेमभूषा सूर्यकोटिसमप्रभा ।
तरुणादित्यसङ्काशा सिन्दूरार्चितविग्रहा ॥३३॥
यवा यावकरूपा च रक्तचन्दनरूपधृक् ।
कोटरी कोटराक्षी च निर्लज्जा च दिगम्बरी ॥३४॥
पूतना वत्समाता च सूर्यमण्डलवासिनी ।
श्मशानवासिनी शून्या हृप्तचत्वरवासिनी ॥३५॥
मधुकैटभसंहर्त्री महिषासुरघातिनी ।
निशुम्भशुम्भशमनी चण्डमुण्डविनाशिनी ॥३६॥
शिवानी शिवरूपा च शिवदूती शिवप्रिया ।
शिवदा शिववक्षस्था शिवेष्टा शिवकारिणी ॥३७॥
इन्द्राणी इन्द्रकन्या च राजकन्या सुरप्रिया ।
लज्जाशीला साधुशीला कुलस्त्री कुलपूजिता ॥३८॥
महाकुलीना निष्कामा विलज्जा भूषणान्विता ।
कुलीना कुलकन्या सा तथैव कुलभूषिता ॥३९॥
अनन्तानन्तपाणिकाऽनन्तासुरविनाशिनी ।
सदाशिवसुसङ्गेन राजिताऽऽनन्ददायिनी ॥४०॥
नागांगी नागभूषा च नागहारविधायिनी ।
धरणी धारिणी माया महासिद्धिप्रदायिनी ॥४१॥
भूतप्रेतपिशाचा च राकिनी लाकिनी तथा ।
भूतप्रेतपिशाचानां वलदा यक्षिणी शिवा ॥४२॥
धृतिः कीर्तिः स्मृतिर्मेधा पुष्टिस्तुष्टिरुमा उषा ।
शङ्करी शाम्भवी मेना रतिः प्रीतिः सुलोचना ॥४३॥

अनङ्गमदना देवी अनंगमदनाऽऽतुरा ।
भुवनेशी महामाया तथा भुवनपालिनी ॥४४॥
ईश्वरी ईश्वरप्रीता चन्द्रशेखरभूषिता ।
चित्तानन्दकरी नन्दा चित्तसंस्था चितायुता ॥४५॥
स्वरूपा सर्वरूपा च ब्रह्मरूपा चिदात्मिका ।
आनन्दरूपिणी नित्या तथाऽऽनन्दप्रदायिनी ॥४६॥
त्वरिता तरुणा भव्या भाविका च विभाविनी ।
चन्द्रसूर्यसमा दीप्ता चन्द्रसूर्यस्य पालिका ॥४७॥
नारसिंही हंसग्रीवा हिरण्याक्षविनाशिनी ।
वैष्णवी विष्णुभक्ता च शालग्रामनिवासिनी ॥४८॥
चतुर्भुजा चाष्टभुजा सहस्रभुजसंज्ञिता ।
आद्या कात्यायनी नित्या सर्वाद्या सर्वदायिका ॥४९॥
सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वलोकमयी तथा ।
सर्वसम्मोहनी देवी सर्वलोकवशङ्करी ॥५०॥
रंजिनी रञ्जिता रागा देहलावण्डयरञ्जिता ।
घटी नटी प्रिया धूर्ता तथा धूर्त्तजनप्रिया ॥५१॥
महामाया महामोहा महासत्वविमोहिता ।
वलिप्रिया मांसरुचिर्मधुमांसप्रिया तथा ॥५२॥
मधुमत्ता माधविका मधुमाधवरूपिका ।
दिवामयी रात्रिमयी सन्ध्या सन्ध्यास्वरूपिणी ॥५३॥
कामरूपा सूक्ष्मरूपा सूक्ष्मिणी सूक्ष्मरूपिणी ।
तिथिरूपस्वरूपा च तथा वासर-रूपिणी ॥५४॥
सर्वभूतमयी देवी पञ्चभूतनिवासिनी ।
ग्रहाणां स्थितिरूपा च इन्द्रादीनां च सम्भवा ॥५५॥
ऋषीणां ब्रह्मपुत्राणां तपःसिद्धिप्रदायिनी ।
शवस्था शवरूपा च शवसङ्गकुतूहला ॥५६॥

योगिनी योगरूपा च योगीन्द्रस्वान्तहारिणी ।
सुप्रसन्ना महादेवी यामिनो भुक्तिदायिनी ।।५७।।
महामाया विष्णुमाया मोहिनी सुरमोहिनी ।
कार्यसिद्धिकरी देवी सर्वकार्यनिवासिनी ।।५८।।
कार्याकार्यकरी रौद्री महाप्रलयकारिणी ।
स्त्री पुम्भेदा अभेदा च भेदिनी भयनाशिनी ।।५९।।
सुप्रशस्तो समस्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
त्रिरूपा विश्वरूपा च चित्तरूपा चिदात्मिका ।।६०।।
बहुशास्त्रा अशास्त्रा च सर्वशास्त्रप्रहारिणी ।
शास्त्रा शास्त्रविवादे च नानाशास्त्रार्थवादिनी ।।६१।।
काव्यशास्त्रप्रमोदा च काव्यालङ्कारवासिनी ।
रसज्ञा रसना जिह्वा रसनाग्रया रसप्रदा ।।६२।।
नानाकौतुकसंयुक्ता नानारसनिवासिनी ।
अरूपा च स्वरूपा च विश्वरूपा च रूपिणी ।।६३।।
रूपा जीवा तथा वेश्या वेश्याद्या वेशधारिणी ।
नानावेशधरा देवी नानावेशेषु संस्थिता ।।६४।।
कुरूपा कुस्थिता कृष्ण कृष्णरूपा च कालिका ।
लक्ष्मीप्रदा महालक्ष्मी: सर्वलक्षणसयुता ।।६५।।
कुबेरगृहसंस्थाना धनरूपा धनप्रदा ।
नानारूपप्रदा देवी रत्नपुष्पेषु संस्थिता ।।६६।।
वर्णस्था वर्णरूपा च सर्ववर्णमयी तथा ।
ॐकाररूपिणी आद्या आप्तिस्था ज्योतिरूपिणी ।।६७।।
संसारमोहिनी देवी संसारजयदायिनी ।
जयस्वरूपा जयदा जयिनी जयकारिणी ।।६८।।
मान्या मानप्रिया मान्य-मानिनीनां महोदया ।।६९।।
साधका साधिका साध्या साधना साधनप्रिया ।
स्थावरा जङ्गमा सूक्ष्मा चपला चपलप्रिया ।।७०।।

ऋद्धिदा वृद्धिरूपा च सिद्धिदा सिद्धिरूपिणी ।
क्षेमंकरी शङ्करी च सर्वसम्मोहकारिणी ॥७१॥
वाञ्छिता वाञ्छनीया च सर्ववाञ्छाप्रदायिनी ।
भगलिङ्गप्रमोदा च भगलिङ्गप्रदायिनी ॥७२॥
भगरूपा भगाभोग्या लिङ्गरूपा च लिङ्गिनी ।
भगगीतिर्महाप्रीति लिङ्गनीतिसुखावहा ॥७३॥
स्वयंभूकुसुमाराध्या स्वयंभूकुसुमाकुला ।
स्वयभूपुण्यरूपा च स्वयंभूकुसुमप्रिया ॥७४॥
शुक्लरूपा महाशुक्ला शुक्लसिन्धुनिवासिनी ।
अक्षमालाधरा देवी पानद्रव्यविशायिनी ॥७५॥
शूलहस्ता चक्रहस्ता पाशिनी पाशरूपिणी ।
खड्गिनी गदिनी चैव तथा सर्वास्त्रधारिणी ॥७६॥
भाव्या भव्या भवानीया भवभुक्तिप्रदायिनी ।
चतुरा चतुरप्रीता चतुराननपूजिता ॥७७॥
देवस्तव्या देवपूज्या सर्वपूज्या सुरेश्वरी ।
जननी जनपुण्या च जनमानसचारिणी ॥७८॥
जटिनी केशबन्धा च सुकेशी केशवासिका ।
अहिंसा वेशिका वेश्या सर्वविद्विट्विनाशिनी ॥७९॥
उच्चाटिनी स्तम्भिनी च मोहिनी मधुरेक्षणा ।
क्रीडाक्रीडावती लेखा करुणा करुणाकरी ॥८०॥
सर्वज्ञा सर्वगम्या च सर्वभक्षा सुरारिहा ।
सर्वरूपा सर्वशास्त्री सर्वेषां प्राणधारिणी ॥८१॥
सृष्टिस्थितिकरी देवी तथा प्रलयकारिणी ।
सर्वतत्त्वात्मिका गौरी नानामूर्तिविधारिणी ॥८२॥
गक्तानि यानि देनेशयनुक्तानि च महेश्वरि ।
यत्किञ्चिद्दृश्यते देवि तत्सर्वं भुवनेश्वरी ॥८३॥

इति श्रीभुवनेश्वर्या नामान्युक्तानि ते प्रिये ।
सहस्राणि महादेवि फलमेषां निगद्यते ।।८४।।

फलश्रुति ।

यः पठेत् प्रातरुत्थाय अर्द्धरात्रौ तथा परे ।
प्रातःकाले तथा मध्ये सायाह्ने हरवल्लभे ।।८५।।
यथाकाले यथास्थाने तस्य सिद्धिर्न संशयः ।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणुयाद्ध्यायते तथा ।।८६।।
तस्य सर्वं भवेत् सत्यं मनसा यच्च वाञ्छितं ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च विशेषतः ।।८७।।
कुहूमङ्गलसंयुक्ते संक्रांत्यां शनिभौमयोः ।
यः पठेत् पाठयेद्भक्त्या देव्या नामसहस्रकम् ।।८८।।
तस्य देहे च संस्थानं कुरुते भुवनेश्वरी ।
तस्य सर्वं भवेद्देवि अन्यथा न कदाचन ।।८९।।
श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे च पार्वति ।
चतुष्पथे चैकलिङ्गे जलमध्ये विशेषतः ।।९०।।
रणमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये ।
जप्त्वा मन्त्र सहस्रन्तु पठेन्नामसहस्रकम् ।।९१।।
तस्य तुष्टा भवेद्देवि सर्वदा भुवनेश्वरी ।
धूपदीपादिभिश्चैव बलिदानादिभिस्तथा ।।९२।।
दत्वा नानाविधैर्देवि नैवेद्यैर्भुवनेश्वरीम् ।
संपूज्य विधिवज्जप्त्वा स्तुत्वा नामसहस्रकैः ।।९३।।
अचिरात् सिद्धिमाप्नोति साधको नात्र संशयः ।
भूर्जपत्रे समालिख्य कुंकुमारक्तचन्दनैः ।।९४।।
तथा गोरोचनाभिश्च विलिखेत्साधकोत्तमः ।
सुतिथौ शुभनक्षत्रे लिखित्वा दक्षिणे भुजे ।।९५।।
धारयेत्परया भक्त्या देवीरूपेण पार्वति ।
तस्य सिद्धिर्महादेवि अचिराद्धि भविष्यति ।।९६।।

रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत ।
देवाः सर्वे वशं यान्ति किं पुनःमानवादयः ॥९७॥
वाय्वादीनां गतिस्तम्भं करोत्येव न संशयः ।
पठेद्वा धारयेद्वापि देवीबुद्ध्या च पार्वति ॥९८॥
इह भुक्त्वा वरान् भोगान्
कृत्वा काव्यान् सुविस्तरान् ।
अन्ते देव्या गणत्वं च
साधको मुक्तिमाप्नुयात् ॥९९॥
प्राप्नोति देवदेवेशि सर्वदा नात्र संशयः ।
न्यूनाङ्गे चातिरिक्ताङ्गे शठाय परशिष्यके ॥१००॥
न दातव्यं महादेवि प्राणान्तेपि कदाचन ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय विनीताय महेश्वरि ॥१०१॥
दातव्यं स्तवराजञ्च सर्वसिद्धि समायुतम् ।
य इदं भुवनेश्वर्य्याः स्तवराजं महेश्वरि ॥१०२॥
लिखित्वा धारयेद्देहे तस्य विघ्नो न जायते ।
इति प्रकथितमेतद्देवि ! नाम्नां सहस्रं,
सुरतरुमिव कान्तं सिद्धिसंधैकसेव्यम् ।
यदि पठति मनुष्यो नान्यचेताः सदैव,
व्रजति तव समीपं लोकसंस्तूयमानः ॥१०३॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले भुवनेश्वरीसहस्रनाम स्तोत्रम् ॥



भुवनेश्वरी स्तवराजाष्टकम्

श्री देव्युवाच

प्रभो श्रीभैरवश्रेष्ठः दयालु भक्तवत्सलः ।
भुवनेशी-स्तवं ब्रूहि यद्यहं तव वल्लभा ॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भुवनेश्यष्टकं शुभम् ।
येन विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशगं भवेत् ॥

ॐ नमामि जगदाधारां भुवनेशीं भवप्रियां ।
भुक्तिमुक्तिप्रदां रम्यां रमणीयां शुभावहां ॥
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा देवि त्वं यज्ञा यज्ञनायिका ।
त्वं नाथस्त्वं तमोहन्त्री व्याप्य-व्यापक-वर्जिता ॥
त्वमाधारस्त्वमिज्वाल्य ज्ञानाज्ञेयं परं पदं ।
त्वं शिवस्त्वं अजः विष्णुस्त्वमात्मा परमोऽव्ययः ॥
त्वं कारणं च कार्यं च लक्ष्मीस्त्वं च हुताशनः ।
त्वं सोमस्त्वं रविः कालस्त्वं धाता त्वं च मारुतः ॥
गायत्री त्वं च सावित्री त्वं माया त्वं हरिप्रिया ।
त्वमेवैका पराशक्तिस्त्वमेव गुरुरूपधृक् ॥
त्वं कला त्वं कलातीता त्वमेव जगतां श्रियः ।
त्वं सर्वकार्यं सर्वस्य कारणं करुणामयी ॥

फलश्रुति

इदमष्टकमाद्याया भुवनेश्या वरानने ।
त्रिसन्ध्यं श्रद्धया मर्त्यो यः पठेत् प्रीतमानसः ॥
सिद्धयो वशगास्तस्य सम्पदो वशगा गृहे ।

॥ इति रुद्रयामले भुवनेशीस्तवराजः समाप्तः ॥



श्री भुवनेश्वरी-स्तुतिः

प्रसीद प्रपञ्चस्वरूपे प्रधाने प्रकृत्यात्मिके प्राणिनां प्राणसंज्ञे ।
प्रणोतु प्रभो प्रारभे प्राञ्जलिस्त्वां प्रकृत्याप्रतर्क्यप्रकामप्रवृत्ते ॥१॥
स्तुतिर्वाक्यबद्धा पदात्मैव वाक्यं पदं
त्वक्षरात्माक्षरं त्वं महेशि ।
ध्रुवं त्वां त्वमेवाक्षरैस्त्वन्मयैः
स्तौष्यतस्त्वन्मयी वाक्प्रवृत्तिर्यतः स्यात् ॥२॥

अजाधोक्षजश्रीक्षणाश्चापि रूपं परं नाभिजानन्ति मायामयं ते ।
स्तुवन्तीशि तां त्वाममी स्थूलरूपां तदेतावरम्बेह युक्तं ममापि ॥३॥
नमस्ते समस्तेशि विन्दुस्वरूपे नमस्ते परत्वेन तत्वाभिधाने ।
नमस्ते महत्वं प्रपन्ने प्रधाने नमस्ते त्वहङ्कारतत्वस्वरूपे ॥४॥
नमः शब्दरूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्शरूपे नमो वायुरूपे ।
नमो रूपतेजोरसाम्भःस्वरूपे नमस्तेऽस्तु गन्धात्मिके भूस्वरूपे ॥५॥

नमः श्रोत्रचर्माक्षि जिह्वाख्य-नासास्य-
वाक्पाणिपत्पायु - सोपस्थरूपे ।
मनो बुद्ध्यहङ्कारचित्तस्वरूपे विरूपे
नमस्ते विभो विश्वरूपे ॥६॥

रवित्वेन भूत्वान्तरात्मा दधासि प्रजाश्चेन्द्रम स्त्वेन पुष्णासि भूयः ।
दहस्यग्निमूर्ति दधत्याहुति वा महादेवि तेजस्त्रयं त्वत्त एव ॥७॥
चतुर्वक्त्रयुक्ता लसद्धसवाहा रजःसंश्रिता ब्रह्मसंज्ञां दधाना ।
जगत्सृष्टिकार्या जगन्मातृरूपे वरं त्वत्पदं ध्यायसीशि त्वमेव ॥८॥

विराजत्किरीटा लसच्छङ्खचक्रा बहन्ती
च नारायणाख्यां जगत्सु ।
गुणं सत्वमास्थाय विश्वस्थिति यः
करोतीह सोंऽशोऽपि देवि त्वमेव ॥९॥

जटाबद्धचन्द्राहिगङ्गां त्रिनेत्रां जगत्संहरन्तीं च कल्पावसने ।
तमः संश्रितां रुद्रसंज्ञां दधाना वहन्ती परश्वक्षमाले विभासि ॥१०॥
सचिन्ताक्षमाला सुधाकुम्भलेखाधरा त्रीक्षणार्धेन्दुराजत् कपर्दा ।
सुशुक्लांशुकाकल्पदेहा सरस्वत्यपि त्वन्मयैवेशि वाचामधीशा ॥११॥
लसच्छङ्खचक्रा चलद्खङ्गभीमा नदत् सिंहवाहा ज्वलत्तुङ्गमौलिः ।
द्रवद् दैत्यवर्गा स्तुवत् सिद्धवर्गा त्वमम्बेशि दुर्गापि सर्गादिहीने ॥१२॥
पुरारातिदेहार्धभागा भवानी गिरीन्द्रात्मजात्वेन यैषा विभासि ।
महायोगिवन्द्या महेशा सुनाथा महेश्यम्बिका तत्वतस्त्वन्मयैव ॥१३॥

लसत्कास्तुभोद्भासिते व्योमनीले वसन्तीं च वक्षःस्थले कैटभारेः ।
जगद्वल्लभां सर्वलोकैकनाथां श्रियं त्वां महादेव्यह तामवैमि ।।१४।।

अजाद्रीड्-गुहाब्जाक्षपोत्रीन्द्रकाणां महाभैरवस्यापि चिह्नं वहन्त्यः ।
विभो मातराः सप्त तद्रूपरूपाः स्फुरन्त्यस्त्वदंशा महादेवि ताश्च ।।१५।।

समुद्यद्दिवाकृत्सहस्राभभासा सदा सन्तताशेषविश्वावकाशे ।
लसन्मौलिबद्धेन्दुलेखे सपाशांकुशाभीत्यभीष्टात्तहस्ते नमस्ते ।।१६।।

प्रभा कीर्तिकान्ती दिवारात्रिसन्ध्याः
क्रियाशा तमिस्रा क्षुधाबुद्धिमेधाः ।
धृतिर्वाङ् मतिः सन्मतिः श्रीश्चका-
न्तिस्त्वमेवेशि येऽन्ये च शक्तिप्रभेदाः ।।१७।।

हरे विन्दुनादैः सशक्त्याख्यशान्तैर्नमस्तेऽस्तु भेदप्रभिन्नैरभिन्ने ।
सदा सप्तपाताललोकाचलाब्धिगुहद्वीपधातुस्वरादिस्वरूपे ।।१८।।

नमस्ते नमस्ते समस्तस्वरूपे समस्तेषु वस्तुष्वनुस्यूतरूपे ।
अतिस्थूलसूक्ष्मस्वरूपे महेशि स्मृते बोधरूपेऽप्यबोधस्वरूपे ।।१९।।

मनोवृत्तिरस्तु स्मृतिस्ते समस्ता तथा
वाक् प्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि ।
शरीरप्रवृत्तिः प्रणामक्रिया स्यात्
प्रसीद क्षमस्व प्रभो सन्ततं मे ।।२०।।

हृल्लेखा - जपविधिसमर्चनविशेषाने-
तांस्तां स्तुतिमपि नित्यमादरेण ।
योऽभ्यसेत् स खलु परां श्रियं च गत्वा
शुद्ध तद् व्रजति पद परस्य धाम्न ।।२१।।

।। इति प्रपञ्चसारतन्त्रे श्रीभुवनेश्वरी-स्तुतिः ।।



भुवनेश्वरी खड्गमाला स्तोत्रम्

अस्य श्रीभुवनेश्वरी-खड्गमाला-मन्त्रस्य प्रकाशात्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बाप्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

स्मरेद्रवीन्द्वग्निविलोचनां तां,
सत्पुस्तकां जाप्यवटीं दधानाम्।
सिंहासनां मध्यमयन्त्रसंस्थां,
श्रीतत्त्वविद्यां पराम्बां भजामि॥
य एनां सञ्चिन्तयेन्मन्त्री सर्वकामार्थसिद्धिदां।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः॥
तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्ठादशमहाद्वीपे सम्राट्भोक्ता भविष्यति॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीभुवनेश्वरी-हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेवि अस्त्रदेवि कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये श्रीभुवनेश्वरि दिव्यौघगुरुरूपिणि सिद्धौघगुरुरूपिणि मानवौघगुरुरूपिणि श्रीगुरुरूपिणि परमगुरुरूपिणि परमेष्ठगुरुरूपिणि अमृतभैरव-सहित-श्रीभुवनेश्वरिहृदय शक्ति शिरः शक्ति शिखाशक्ति कवचशक्ति नेत्रशक्ति अस्त्रशक्ति हृल्लेखे गगने रक्ते करालिके महोच्छूष्मे सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि।

गायत्री-सहित-ब्रह्ममयि सावित्री-सहित-विष्णुमयि सरस्वती-सहित रुद्रमयि लक्ष्मी-सहित कुबेरमयि रति-सहित काममयि पुष्टि-सहित-विघ्नराजमयि शङ्खनिधि-सहित-वसुधामयि पद्मनिधि-सहित वसुमतिमयि गायत्र्यादिसह श्रीभुवनेश्वरि ह्रां हृदयदेवि ह्रीं शिरोदेवि ह्रूं शिखादेवि ह्रैं कवचदेवि ह्रौं नेत्रदेवि ह्रः अस्त्रदेवि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि।

अनङ्गकुसुमे अनङ्गकुसुमातुरे अनङ्गमदने अनङ्गमदनातुरे भुवनपाले गगनवेगे शशिरेखे अनङ्गवेगे सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि।

कराले विकराले उमे सरस्वति श्री दुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये सर्वसंक्षोणचक्रस्वामिनि ।

ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे महालक्ष्मि अनङ्गरूपे अनङ्गमदने मदनातुरे भुवनवेगे भुवनपालिके सर्वशिशिरे अनङ्गवेदने अनङ्गमेखले सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि ।

इन्द्रमयि अग्निमयि यममयि निर्ऋतिमयि वरुणमयि वायुमयि सोममयि ईशानमयि ब्रह्ममयि अनन्तमयि वज्रमयि शक्ति अग्निमयि शक्ति दण्डमयि शक्ति खड्गमयि शक्ति पाशमयि शक्ति अंकुशमयि शक्ति गदामयि शक्ति त्रिशूलमयि शक्ति पद्ममयि शक्ति चक्रमयि शक्ति वरमयि शक्ति अंकुशमयि शक्ति पाशमयि शक्ति अभयमयि शक्ति बटुकमयि योगिनीमयि क्षेत्रपालमयि गणपतिमयि अष्टवसुमयि द्वादशादित्यमयि एकादशरुद्रमयि सर्वभूतमयि अमृतेश्वरसहित श्रीभुनेश्वरि त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि नमस्ते-नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ।।

कथयामि महादेवि भुवनेशीं महेश्वरीं ।
अनया सदृशी विद्या नान्या ज्ञानस्य साधने ।।
नात्र चित्तविशुद्धिर्वा नारिमित्रादिदूषणं ।
न वा प्रयास-बाहुल्यं समयासमयादिकं ।।
देवैर्देवत्वविधये सिद्धैः खेचरसिद्धये ।
पन्नगै राक्षसैर्मर्त्यैर्मुनिभिश्च मुमुक्षुभिः ।।
कामिभिर्धर्मिभिश्चार्थलिप्सुभिः सेविता परा ।
न तथा व्यय-बाहुल्यं कामक्लेशकरं तथा ।।
य एवं चिन्तयेन्मन्त्री सर्वकामार्थसिद्धिदां ।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः ।।
गद्यपद्यमयी वाणी सभायां विजयी भवेत् ।
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्कृतादरः ।।
राजानोऽपि हि दासत्वं भजन्ते किं प्रयोजनः ।
दिवारात्रौ पुरश्चर्या कर्तुश्चैव शमो भवेत् ।।

सर्वस्यैव जनस्येह वल्लभः कीर्तिवर्धनः ।
अन्ते च भजते देवी–गणत्वं दुर्लभं नरः ।।
चन्द्रसूर्यसमो भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ।
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् यो वेत्ति भुवनेश्वरीं ।।

।। इति श्रीभुवनेश्वरी-रहस्ये खड्ग माला-स्तोत्रम्



भुवनेश्वरी आनन्दमयी-स्तवः

अथानंदमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीं ।
ईडे सकलसपस्यैं जगत्कारणमंबिकां ।।१।।

आद्यामशेषजननीमरविन्दयोनेर्विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीं । सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमंबिके त्वां ।।२

पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतांबरेण ह्योत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्त्तिभाजः । देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि ।।३।।

त्रिःस्रोतसः सकलदेवसमर्श्चितताया वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः । त्वत्पादपंकजपरागपवित्रितासु शंभोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत् ।।४।।

आनंदयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा । एकस्य मोदनाविधौ परमेकमिष्टे त्वं तु प्रपंचभिनंदयसि स्वदृष्ट्या ।।५।।

आद्याऽशेषजगतां नवयौवनासि शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि । त्रय्याः प्रसूरपि तया न समीक्षितासि ध्येयासि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ।।६।।

आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद् दुरापं तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणां । नाभ्यर्चयंति जगतां जनयित्रि ये त्वां निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतंति ।।७।।

कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन ये चंदनेन कुसुमैश्च सुगंधिगंधैः। आराधयंति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां ते खल्वशेषभुवनाधिभुवः प्रथन्ते ॥८॥

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे सप्ताहिराजसदृशीं विरचय्य विश्वं। विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहंती पद्मानि पंच विदलय्य समश्नुवाना ॥९॥

तन्निर्गतामृतरसैः परिषिक्तगात्री मार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता। येषां हृदि स्फुरसि जातु न ते भवेयुर्मातर्महेश्वरकुटुंबिनि गर्भभाजः ॥१०॥

आलम्बिकुंडलभरामभिरामवक्त्रामापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्यां। चिंताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तामावर्त्तयामिः मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥११॥

आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाबध्य चेंद्रियगणं मनसि प्रसन्ने। पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रामालोकयंति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वां ॥१२॥

उत्तप्तहाटकनिभा करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृत घटैरभिषिच्यमाना। हस्तद्वयेन रुचिरे नलिने वहंती पद्मापि साभयवरा भवसि त्वमेव ॥१३॥

अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभिर्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजं। दूर्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान्न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गा ॥१४॥

आविर्निदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां गुंजाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम्। पीतांशुकामसितकांतिमनंगतंद्रामाद्यां पुलिंदतरुणीमसकृत्स्मरामि ॥१५॥

हंसैर्गति-क्वणितनूपुर-दूरदृष्टैर्मूर्तैरिवार्थवचनैरनुगम्यमानौ। पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ श्रीकंठपत्नि शिरसा विदधे तवांघ्री ॥१६॥

द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्यामुत्पाद्य भालनयनं वृषकेतनेन। सांद्रानुरागतरलेन निरीक्ष्यमाणे जंघे शुभे अपि भवानि तवानतोस्मि ॥१७॥

ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ स्थौल्येन मार्द्दवतया परिभूतरंभौ। श्रोणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ स्तंभाविवांग वयसा तव मध्यमेन ॥१८॥

श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत्प्रथयिष्यतोश्चै बाल्यात्परेण वसया परिकृष्टसारः। रोमावली-विलसितेन विभाव्य मूर्तिर्मध्यस्तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥१६॥

सख्युः स्मरस्य हरनेत्रहुताशशांत्यै लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन। आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं नाभि कदापि तव देवि न विस्मरेयं ॥२०॥

ईशोपगूहपिशुनं भसितं दधाने काश्मीरकर्दममनु स्तनपंकजे ते। स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्ष्यफेनौ सिंदूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥२१॥

कंठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकांतिधारा शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन। कंठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ मातर्मम स्मृतिपथं न विलंघयेथाः ॥२२॥

नात्यायतं रचितकंबुविलासचौर्यं भूषाभरेण विविधेन बिराजमानं। कठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये संचित्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहं॥२३॥

अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं मंदस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखां। बिबाधरं वदनमुन्नतदीर्घ नासं यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः ॥२४॥

आविस्तुषारकरलेखमनल्पगंधं पुष्पोपरि भ्रमदलिव्रजनिर्विशेषं। यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥२५॥

श्रुतिसुचरितपाकं श्रीमतां स्तोत्रमेतत्पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा। स भवति पदमुच्चैः संपदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥

॥ इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे आनन्दमयी-स्तवः समाप्तम् ॥

●

श्रीभुवनेश्वरी चंचदिति स्तोत्रम्

श्री चंचन्मौक्तिक हेममंडलयुता मातातिरक्तां बरा । तन्वंगी नयन-त्रयातिरुचिरा बालार्कवद् भासुरा । या दिव्यांकुशपाश-भूषितकरा देवी सदाभीतिदा । चितस्था भुवनेश्वरी भवतु नः सेयं मुदे सर्वदा ॥१॥

कर्णस्वर्ण विलोलकुंडलधरामापीनवक्षोरुहां । मुक्ताहारविभूषणां परिलसद्धम्मिल्ल सन्मल्लिकाम् । लीलालोलितलोचनां शशिमुखीमाबद्धकांचीस्त्राजं । दिव्यन्तीं भुवनेश्वरीमनुदिनं वन्दामहे मातरम् ॥२॥

ऐन्दव्या कलयावतंसितशिरोविस्तारिनादात्मकं । तद्रूपं जननि स्मरामि सततं सन्मात्रमेकं तव । यत्रोदेति पराभिधा भगवात भासां हि तासां पदं । पश्यन्ती तनुमध्यमा विहरती स्वैरं च सा वैखरी ॥३॥

आदिक्षान्त विलास लालसतया तासां तुरीयातु या । क्रोडीकृत्य जगत्त्रयं विजयते वेदादिविद्यामयी । तां वाचं मयि संप्रसादय सुधा-कल्लोल कोलाहल । क्रीडाकर्णन वर्णनीय कवितासाम्राज्य सिद्धि-प्रदाम् ॥४॥

कल्पादौ कमलासनोपि कलयाविद्धः कयाचित्किल । त्वां ध्यात्वां-कुरयां चकार चतुरो वेदांश्च विद्याश्चताः । तन्मातर्ललिते प्रसीद सरलं सारस्वतं देहि मे । यस्यामोदमुदीरयन्ति पुलकैरन्तगर्ता देवताः ॥५॥

मातर्देहभृतामहो धृतिमयी नादैकरेषामयी सा त्वं प्राणमयी हुताशनमयी विन्दुप्रतिष्ठामयी । तेन त्वां भुवनेश्वरीं विजयिनीं ध्यायामि जायां विभो । स्त्वत्कारुण्य विकाशि पुण्यमतयः खेलन्तु मे सूक्तयः ॥६॥

त्वामश्वत्थदलानुकारमधुरामाधारबद्धोदरां । संसेवे भुवनेश्वरी-मनुदिनं वाग्देवतामेव ताम् । तन्मे शारद कौमुदीपरिचयोदंचत् सुधा-सागरः । स्वैरोज्जारगवीचिविभ्रमजितो दिव्यन्तु दिव्यागिरः ॥७॥

लेखप्रस्तुत वेद्यवस्तु सुरभि श्रीपुस्तकोत्तसितो । मातः स्वस्तिकृदस्तु मे तव करो वामोऽभिरामः श्रिया ॥ सद्यो विद्रुमकन्दलीसरलता संदोहसान्द्रांगुलिः मुंद्री बोधमयीं दधत्तदपरोऽप्यास्तामपास्तभ्रमः ॥८॥

मातः पातकजाल मूलदलन क्रीडाकठोरा दृशः । कारुण्यामृत कोमलास्तव मयि स्फूर्जन्तु सिद्ध्यूर्जिताः ।। आभिः स्वाभिमतप्रबन्ध लहरी साकूत कौतूहलाऽ चान्तस्वान्तचतुर्मुखोचितगुणोद्गारां करिष्ये गिरम् ।।९।।

त्वामाधारचतुर्दलांबुजगतां वाग्बीजगर्भे यजे । प्रत्यावृत्तिभिरादिभिः कुसुमितां मायालतामुन्नताम् ।। चूडामूल पवित्रपत्र कमल प्रेंखोल खेलत्सुधा । कल्लोलाकुलं चक्रचंक्रमचमत्कारैकलोकोत्तराम् ।।१०।।

सोहंत्वत्करुणाकटाक्षशरणः पंचाध्वसंचारतः । प्रत्याहृत्य मनो वसामि रसनारंगं ममालिङ्गतु ।। श्रीसर्वज्ञ विभूषणीकृत कलानिस्यन्दमानामृत । स्वच्छन्द स्फटिकाद्रि सान्द्रित पयः शोभावती भारती ।।११।।

मातर्मातृकया विदर्भितमिदं गर्भीकृतानाहत । स्वच्छन्दध्वनि पेतमध्वनिरतं चन्द्रार्क निद्रागिरौ । ससेवे विपरीतरीति रचनोश्वारादकारावधि । स्वाधीनामृत सिधुबन्धुरमहो मायामयं ते महः ।।१२।।

त-मान्नन्दनचारुचन्दनतरुच्छायासु पुष्पासव । स्वरास्वादनमोदमान मनसामुद्दामवामभ्रुवाम् ।। वीणाभगितरगित स्वरचमत्कारोपि सारोज्झितो । येन स्यादिह देहि मे तदभितः संचारि सारस्वतम् ।।१३।।

आधारे हृदये शिखापरिसरे सन्धाय मेधामयीं । त्रेधाबीज तनूमनूनकरुणा पीयूषकल्लोलिनीम् । त्वां मातर्जपतो निरंकुशनिजाद्वैतामृतास्वादन । प्रज्ञाम्भश्चुलकैः स्फुरन्तु पुलकैरङ्गानि तुङ्गानि मे ।।१४।।

वाणीबीजमिदं जपामि परमं तत्कामराजाभिधं । मातः सान्तपरं विसर्गसहितौकारोत्तरं तेन मे ।। दीर्घान्दोलितमौलिकीलितमणि-प्रारब्धनीराजनैः । धीरैः पीतरसा निरन्तरमसौ वाग्जृम्भतामद्भुता ।।१५।।

चूडाचन्द्रकला निरन्तरगलत्पीयूषविन्दुश्रिय । सदोहोचितमक्षसूत्रवलयं या विभ्रती निर्भरम् ।। अन्तर्मन्त्रमयं स्वमेव जपसि प्रत्यक्षवृत्यक्षरं । सा त्वं दक्षिणपाणिनांब वितर श्रेयांसि भूयांसि मे ।।१६।।

बध्वा स्वस्तिकमासनं सितरुचिच्छेदावदातच्छविश्रेणिश्री सुभगंभ-विष्णु सततव्याजृम्भभाणेम्बुजे । दीव्यन्तीमधिवामजानु रुचिरन्यस्तेन हस्तेन तां । नित्यं पुस्तकधारणप्रणयिनीं सेवे गिरामीश्वरीम् ।।१७।।

तन्मे विश्वपथीनपीनविलसन्निःसीमसारस्वत। स्रोतोवीचिव्विचित्र-भंगिसुभगा विभ्राजतां भारती ।। यामाकर्ण्य विघूर्णमानमनसः प्रेंखोलितैर्मौलिभिर्मीलद्भिर्नयनांचलैः सुमनसो निन्देयुरिन्दोः कलाः ।।१८।।

आदौ वाग्भवमिन्दुबिन्दुमधुरं ज्ञान्ते च कामात्मकं । योगान्तेकषयोस्तृतीयमिति ते बीजत्रय ध्यायता ।। सार्द्धं मातृकया विलोमविषमं संधाय बन्धच्छिदा । वाचान्तर्गतया महेश्वरि मया मात्राशतं जप्यते ।।१९।।

तत्सारस्वत सार्वभौम पदवी सद्यो मम द्योततां । यत्राज्ञाविहितैर्महाकविशतैः स्फीतां गिरं चुम्बताम् ।। चैत्रोन्मीलितकेलिकोकिलकुहूकारावताराञ्चितम् । श्लाघासञ्चितपञ्चमश्रुतिसमाहारोपि भारोपमः ।।२०।।

वाग्बीजं भुवनेश्वरी वद वदेत्युच्चार्य वाग्वादिनी । स्वाहा वर्णविशीर्णपातकभरां ध्यायामि नित्यां गिरम् ।। वीणापुस्तकमक्षसूत्रवलयं व्याजृम्भमंभोरुहं। विभ्राणामरुणांशुभिः करतलैराविर्भवद्विभ्रमाम् ।।२१।।

तन्मातः कृपया तरंगयतरां विद्याधिपत्यं मयि । ज्योत्स्नासौरभगौरकीर्ति-कवितासेव्यैकसिंहासनम् ।। कालाग्न्यादि शिवावसान भुवन प्राग्भार कुक्षंभरि। प्रज्ञांभः परिपाकपीवर परानन्द प्रतिष्ठास्पदम् ।।२२।।

लेखाभिस्तुहिनद्युतेरिव कृतं वाग्बीजमुच्चैः स्फुरत्ताराकार करालबिंदुपरितो माया त्रिधा वेष्टितम् । पूर्णेन्दीरुदरे तदेतदखिलं पीयूषगौराक्षरं । स्रोतः सम्भ्रम सम्भृतं स्मरति यो जिह्वाञ्चले निश्चलः ।।२३।।

तस्य त्वत्करुणाकटाक्षकणिकासंक्रान्तिमात्रादपि । स्वान्तं शान्तिमुपैति दीर्घजडता जाग्रद्विकाराग्रणीः ।। तस्मादाशु जगत्त्रयाद्भुतरसाद्वैत प्रतीतिप्रदैः । सौरभ्यं पदमभ्युदेतिं वदनाम्भोजे गिरां विभ्रमैः ।।२४।।

आद्यो मौलिरथापरो मुखमिई नेत्रे च कर्णावुऊ । नासावंशपुटे ऋ ॠ तदनुजौ वर्णौ कपोलद्वयम् ।। दन्ताश्चोर्ध्वमधस्तथोष्ठयुगलं सन्ध्यक्षराणि क्रमाज्जिह्वामूलमुदग्रबिन्दुरचिपग्रीवा विसर्गीस्वरः ।।२५।।

कादिर्दक्षिणतो भुजस्तदपरो वर्गश्च वामो भुजष्ठादिस्तादिरनुक्रमेण चरणौ कुक्षिद्वयं ते पफौ ।। वंशः पृष्ठभवोथ नाभिहृदयेंबादित्रयं धातवो। याद्याः सप्त समीरणश्च सपरः क्षः क्रोध इत्यम्बिके ।।२६।।

एवं वर्णमयं वपुस्तव शिवे लोकत्रयंव्यापकं । योहं भावनया भजत्यवयवेष्वारोपितैरक्षरैः ।। मूर्तीभूय दिनावसानकमलाकारैः शिरःशायिभिस्तं विद्याः समुपासते करतलैर्दृष्टिप्रसादोत्सुकाः ।।२७।।

ये जानन्ति यजन्ति संततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा । तेषामास्यमुपासते मृदुपदन्यासैर्विलासैर्गिराम् ।। किञ्च क्रीडति भूर्भुवः स्वरभितः श्रीचन्दनस्यन्दिनी । कीर्तिः कार्तिकरात्रिकैरवसभा सौभाग्यशोभाकरी ।।२८।।

मायाबीजविदर्भितं पुनरिदं श्रीकूर्मचक्रोदितं । दीपाम्नायविदो जपन्ति खलु ये तेषां नरेन्द्राः सदा ।। सेवन्ते चरणौ किरीटवलभी विश्रान्तरत्नांकुरा। ज्योत्स्नामेदुरमेदिनीतलरजोमिश्रांगरागश्रियः ।।२९।।

श्रीबीजं सकलाक्षरादिषु पुनः क्रोधाक्षरान्ते भवे । देवं यो भजतेंऽब ते तनुमिमां तस्याग्रतो जाग्रती ।। लक्ष्मीः सिन्धुरदानगन्धलहरीलोभान्धपुष्पंधयश्रेणीबन्धुरश्रृङ्खलानियमितेवापैति नैवं क्वचित् ।।३०।।

यस्त्वां विद्रुमपल्लवद्रवमयीं लेखामिवालोहितामात्मानं परितः स्फुरत्त्रिवलयां मायामभिध्यायति ।। तस्मै नन्दितचन्दनेन्दुकदलीकान्तारहारस्रजो । निःश्वासभ्रमवाष्पदाहगहना मूर्छन्ति तास्ताः स्त्रियः ।।३१।।

मातः श्रीभगमालिनीत्यभिधयां दिव्यागमोत्तंसितां। त्वामानन्दमयीमनुस्मरति यस्तं नाम वामभ्रुवः ।। बाहुस्वस्तिकपीडितैः स्तनतटैर्दैन्याञ्चितैश्चाटुभिर्नीरन्ध्रैःपुलकांकुरैर्नियमितैर्ध्यायन्ति नेत्रांचलैः ।।३२।।

यस्त्वां ध्यायति रागसागरतरत्सिन्दूरनौकान्तर । स्त्रैरोज्जागर-पद्मरागनलिनी पुष्पासनाध्यासिनीम् ।। बालादित्यसपत्नरत्नरुचिरप्रत्यंग-भूषारुचि । श्रेणीसंविलितांगरक्तवसनास्तस्य स्मरन्त्यंगना: ।३३।।

कर्पूरं कुमुदाकरं कमलिनीपत्रं कलाकौतुकं । कूजत्कोकिलकामिनी कुलकुहू कल्लोलकोलाहलम् ।। शंकन्ते प्रलयानलं स्मरमहापस्मार-वेगातुरा: । कंपन्ते निपतन्ति हंत न गिरो मुञ्चन्ति शोचन्ति च ।।३४।।

श्रीमृत्युञ्जयनामधेयभगवच्चैतन्यचन्द्रात्मिके । ह्रींकार प्रथमा-तमांसि दलय त्वं हंससंजीविनी ।। जीवं प्राणविजृम्भमाणहृदयग्रंथि-स्थितं मे कुरु । त्वां सेवे निजबोधलाभरभसा स्वाहाभुजामीश्वरीं ।।३५।।

एवं त्वाममृतेश्वरीमनुदिनं राकानिशाकारिकां । स्यान्त: संततभास-मानवपुषं साक्षाद् भजन्ते तु ये ।। ते मृत्यो: कवलीकृतत्रिभुवना भोगस्य मौलौ पदं । दत्वा भोगमहोदधौ निरवधि क्रीडन्ति तैस्तै: सुखै: ।।३६।।

जाग्रद्बोधसुधामयूखनिचयैराप्लाव्य सर्वा दिशो । यस्या: कापि कला कलंकरहिता षट्चक्रमाक्रामति ।। दैन्यध्वान्त विदारणैकचतुरा वाचं परां तन्वती । सा नित्या भुवनेश्वरी विहरतां हंसीव मन्मानसे ।।३७।।

त्वं मातापितरौ त्वमेव सुहृदस्त्वं भ्रातरस्त्वं सखा । त्वं विद्या-स्त्वमुदारकीर्तिचरितं त्वं भाग्यमप्यद्भुतम् ।। किं भूय: सकलं त्वमी-हितमिति ज्ञात्वा कृपा-कोमले । श्री विश्वेश्वरि संप्रसीद शरणं मात: परं नास्ति मे ।।३८।।

श्रीसिद्धनाथ इति कोपि युगे चतुर्थे प्रादुर्बभूव करुणावरुणालयो-ऽस्मिन् ।। श्रीशम्भुरित्यभिधया स मयि प्रसन्नं चेतश्चकार सकलागम-चक्रवर्ती ।।३९।।

तस्याज्ञया परिणतान्वयसिद्धविद्या भेदास्पदै: स्तुतिपदैर्वचसां विलासै: ।। तस्मादनेन भुवनेश्वरि वेदगर्भे सद्य: प्रसीद वदने मम सन्नि-धेहि ।।४०।।

येषां परं न खलुदैवतमम्बिके त्वं तेषां गिरा मम गिरो न भवन्ति मिश्राः ।। तैस्तु क्षणं परिचिते विषयेधिवासो माभूत्कदाचिदिति संततमर्थये त्वाम् ।।४१।।

श्रीशम्भुनाथकरुणाकर सिद्धनाथश्रीसिद्धनाथ करुणाकर शंभुनाथ ।। सर्वापराधमलिनेपि मयि प्रसन्नं चेतः कुरुष्व शरणं मम नान्यदस्ति ।।४२।।

इत्थं प्रतिक्षणमुदाश्रु विलोचनस्य पृथ्वीधरस्य पुरतः स्फुटमाविरासीत् ।। दत्वा वरं भगवती हृदयं प्रविष्टा शास्त्रैः स्वयं नवनवैश्च मुखेवतीर्णा ।।४३।।

वाक्सिद्धिमेवमतुलामवलोक्य नाथः श्री शंभुरस्य महतीमिहनां प्रतिष्ठाम् ।। स्वस्मिन्पदे त्रिभुवनागमसिद्धविद्या सिंहासनैकरुचिरे सुचिरं चकार ।।४४।।

भूमौ शय्या वचसि नियमः कामिनीभ्यो निवृत्तिः प्रातर्जातीविटपसमिधा दंतजिह्वाविशुद्धिः । पत्रावल्यां मधुरमशनं ब्रह्मवृक्षस्य पुष्पैः पूजाहोमौ कुसुमवसनालेपनान्युज्ज्वलानि ।।४५।।

इत्थं मासत्रयमविकलं यो व्रतस्थः प्रभाते मध्याह्ने वास्तमितसमये कीर्तयेदेकचित्तः ।। तस्योल्लासैः सकल भुवनाश्चर्यभूतैः प्रभूतैर्विद्याः सर्वाः सपदि वदने शम्भुनाथप्रसादात् ।।४६।।

व्रतेन हीनोऽप्यथवाप्य मंत्रः श्रद्धाविहीनोऽनुदिनं पठेद्यः ।। तस्यापि वर्षादनवद्यपद्याः कवित्वहृद्याः प्रभवन्ति विद्या ।।४७।।

कोऽप्यचिन्त्यप्रभावोऽस्य स्तोत्रस्य प्रत्ययावहः । श्रीशंभोराज्ञया सर्वाः सिद्धयोस्मिन्प्रतिष्ठिताः ।।४८।।

।। इति श्री पृथ्वीधराचार्य-विरचितं श्रीभुवनेश्वरी स्तोत्रम् ।।



भकारादि भुवनेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्रम्

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्द: भुवनेश्वरी देवता लज्जा बीजं कमला शक्ति: वाग्भवं कीलकं सर्वार्थसाधने पीठे विनियोग: ।

ॐ भुवनेशी भुवाराध्या भवानी भयनाशिनी ।
भवरूपा भवानन्दा भवसागरतारिणी ॥१॥
भवोद्भवा भवरता भवभारनिवारिणी ।
भव्यास्या भव्यनयना भव्यरूपा भवौषधि: ॥२॥
भव्यांगना भव्यकेशी भवपाशविमोचिनी ।
भव्यासना भव्यवस्त्रा भव्याभरणभूषिता ॥३॥
भगरूपा भगानन्दा भगेशी भगमालिनी ।
भगविद्या भगवती भगक्लिन्ना भगावहा ॥४॥
भगांकुरां भगक्रीडा भगाढ्या भगमङ्गला ।
भगलीला भगप्रीता भगसम्पद्भगेश्वरी ॥५॥
भगालया भगोत्साहा भगस्था भगपोषिणी ।
भगोत्सवा भगविद्या भगमाता भगस्थिता ॥६॥
भगशक्तिर्भगनिधिर्भगपूजा भगेषणा ।
भगरूपा भगाधीशा भगार्च्या भगसुन्दरी ॥७॥
भगरेखा भगस्नेहा भगस्नेहविवर्धिनी ।
भगिनी भगबीजस्था भगभोगविलासिनी ॥८॥
भगाचारा भगाधारा भगतेजा भगाश्रया ।
भगपुष्पा भगश्रीदा भगपुष्पनिवासिनी ॥९॥
भव्यरूपधरा भव्या भव्यपुष्पैरलंकृता ।
भव्यलीला भव्यमाला भव्यांगी भव्यसुन्दरीं ॥१०॥

भव्यशीला भव्यलोला भव्याक्षी भव्यनाशिनी ।
भव्यांगिका भव्यवाणी भव्यकांतिर्भगालिनी ॥११॥
भव्यत्रपा भव्यनदी भव्यभोगविहारिणी ।
भव्यस्तनी भव्यमुखी भव्यगोष्ठीभयापहा ॥१२॥
भक्तेश्वरी भक्तिकरी भक्तानुग्रहकारिणी ।
भक्तिदा भक्तिजननी भक्तानन्दविवर्द्धिनी ॥१३॥
भक्तिप्रिया भक्तिरता भक्तिभावविहारिणी ।
भक्तिशीला भक्तिलीला भक्तेशा भक्तिपालिनी ॥१४॥
भक्तिविद्या भक्तविद्या भक्तिर्भक्तिविनोदिनी ।
भक्तिरीतिर्भक्तिप्रीतिर्भक्तिसाधनसाधिनी ॥१५॥
भक्तिसाध्या भक्तसाध्या भक्तिराली भत्रेश्वरी ।
भटविद्या भटानन्दा भटस्था भटरूपिणी ॥१६॥
भटमान्या भटस्थान्या भटस्थाननिवासिनी ।
भटिनी भटरूपेशी भटरूपविवर्द्धिनी ॥१७॥
भटवेशी भटेशी च भगभाग्भवसुन्धरा ।
भटप्रीत्या भटरीत्या भटानुग्रहकारिणी ॥१८॥
भटराध्या भटबोध्या भटबोधविनोदिनी ।
भटः सेव्या भटवरा भटाचर्या भटबोधिनी ॥१९॥
भटकीर्त्या भटकला भटपा भटपालिनी ।
भटैश्वर्या भटाधीशा भटेक्षा भटतोषिणी ॥२०॥
भटेशी भटजननी भटभाग्यविवर्द्धिनी ।
भटभुक्तिर्भटयुक्तिर्भटप्रीतिविवर्द्धिनो ॥२१॥
भाग्येशी भाग्यजननी भाग्यस्था भाग्यरूपिणी ।
भावनाभावकुशला भावदा भाववर्द्धिनी ॥२२॥
भावरूपा भावरसा भवान्तरविहारिणी ।
भवांकुरा भवकला भवस्थाननिवासिनी ॥२३॥

भावातुरा भावधृता भावमध्यव्यवस्थिता ।
भावऋद्धिर्भावसिद्धिर्भावादिर्भावभाविनी ॥२४॥
भावालया भावपरा भावसाधनतत्परा ।
भावेश्वरी भावगम्या भावस्था भावगर्विता ॥२५॥
भाविनी भावरमणी भारती भारतेश्वरी ।
भागीरथी भाग्यवती भाग्योदयकरी कला ॥२६॥
भाग्याश्रया भाग्यमयी भाग्या भाग्यफलप्रदा ।
भाग्याचारा भाग्यसा भाग्यधारा च भाव्यदा ॥२७॥
भाग्येश्वरी भाग्यनिधिर्भाग्या भाग्यसुमातृका ।
भाग्येक्षा भाग्यना भाग्यभाग्यदा भाग्यमातृका ॥२८॥
भाग्येक्षा भाग्यमनसा भाग्यादिर्भाग्यमध्यगा ।
भ्रात्रेश्वरी भ्रातृमती भ्रात्रंबा भ्रातृपालिनी ॥२९॥
भ्रातृस्था भ्रातृकुशला भ्रामरी भ्रमराम्बिका ।
भिल्लरूपा भिल्लवती भिल्लस्था भिल्लपालिनी ॥३०॥
भिल्लमाता भिल्लधात्री भिल्लिनी भिल्लकेश्वरी ।
भिल्लकीर्तिभिल्लकला भिल्लमन्दरवासिनी ॥३१॥
भिल्लक्रीडा भिल्ललीला भिल्लाचर्या भिल्लवल्लभा ।
भिल्लस्नुषा भिल्लपुत्री भिल्लिनीभिल्लपोषिणी ॥३२॥
भिल्लपौत्री भिल्लगोष्ठी भिल्लाचारनिवासिनी ।
भिल्लपूज्या भिल्लवाणी भिल्लाणी भिल्लभीतिहा ॥३३॥
भीतस्था भीतजननी भीतिर्भीतिविनाशिनी ।
भीतिदा भीतिहा भीत्या भीत्याकारविहारिणी ॥३४॥
भीतेशी भीतिशमनी भीतस्थाननिवासिनी ।
भीतिरीत्या भीतिकला भीतीक्षा भीतिहारिणी ॥३५॥
भीमेशी भीमजननी भीमा भीमनिवासिनी ।
भीमेश्वरी भीमरता भीमागी भीमपालिनी ॥३६॥

भीमनादा भीमतन्त्री भीमैश्वर्य्यविवर्द्धिनी ।
भीमगोष्ठी भीमधात्री भीमविद्याविनोदिनी ।।३७।।
भीमविक्रमदात्री च भीमविक्रमवासिनी ।
भीमानन्दकरी देवी भीमानन्दविहारिणी ।।३८।।
भीमोपदेशिनी नित्या भीमभाग्यप्रदायिनी ।
भीमसिद्धिर्भीमऋद्धिर्भीमभक्तिविवर्द्धिनी ।।३९।।
भीमस्था भीमवरदा भीमधर्मोपदेशिनी ।
भीष्मेश्वरी भीष्मभूतिर्भीष्मबोधप्रबोधिनी ।।४०।।
भीष्मश्रीर्भीष्मजननी भीष्मज्ञानोपदेशिनी ।
भीष्मस्था भीष्मतपसा भीष्मेशी भीष्मतारिणी ।।४१।।
भीष्मलीला भीष्मशीला भीष्मरोधोनिवासिनी ।
भीष्माश्रया भीष्मवरा भीष्महर्षविवर्द्धिनी ।।४२।।
भुवना भुवनेशानी भुवनानन्दकारिणी ।
भुविस्था भुविरूपा च भुविभारनिवारिणी ।।४३।।
भुविस्था भुक्तिदा भुक्तिर्भुक्तेशी भुक्तिरूपिणी ।
भुक्तेश्वरी भुक्तिदात्री भुक्तिराकाररूपिणी ।।४४।।
भुजङ्गस्था भुजङ्गेशी भुजङ्गाकाररूपिणी ।
भुजङ्गी भुजगावासा भुजङ्गानन्ददायिनी ।।४५।।
भूतेशी भूतजननी भूतस्था भूतरूपिणी ।
भूतेश्वरी भूतलीला भूतवेषकरी सदा ।।४६।।
भूतदात्री भूतकेशी भूतधात्री महेश्वरी ।
भूतरीत्या भूतपत्नी भूतलोकनिवासिनी ।।४७।।
भूतसिद्धिर्भूतऋद्धिर्भूतानन्दनिवासिनी ।
भूतकीर्तिर्भूतलक्ष्मीर्भूतभाग्यविवर्द्धिनी ।।४८।।
भूताच्या भूतरमणी भूतविद्याविनोदिनी ।
भूतपौत्री भूतपुत्री भूतभार्य्या विधीश्वरी ।।४९।।

भूतस्था भूतरमणी भूतेशी भूतपालिनी ।
भूपमाता भूपनिभा भूपैश्वर्यप्रदायिनी ॥५०॥
भूपचेष्टा भूपनेष्टा भूपभावविवर्द्धिनी ।
भूपांगिनी भूपभूरी भूपपौत्री तथा वधूः ॥५१॥
भूपकीर्तिर्भूपनीतिर्भूपभाग्यविवर्द्धिनी ।
भूपक्रिया भूपक्रीडा भूपमन्दरवासिनी ॥५२॥
भूपार्च्या भूपसंराध्या भूपभोगविवर्द्धिनी ।
भूपाश्रया भूपकला भूपकौतुकदण्डिनी ॥५३॥
भूषणस्था भूषणेशी भूषा भूषणधारिणी ।
भूषणाधारधर्मेशी भूषणाकाररूपिणी ॥५४॥
भूपताचारनिलया भूपताचारभूषिता ।
भूपताचाररचना भूपताचारमण्डिता ॥५५॥
भूपताचारधर्मेशी भूपताचारकारिणी ।
भूपताचारचरिता भूपताचारवर्जिता ॥५६॥
भूपताचारवृद्धिस्था भूपताचारवृद्धिदा ।
भूपताचारकरणा भूपताचारकर्मदा ॥५७॥
भूपताचारकर्मेशी भूपताचारकर्मदा ।
भूपताचारदेहस्था भूपताचारकर्मिणी ॥५८॥
भूपताचारसिद्धिस्था भूपताचारसिद्धिदा ।
भूपताचारधर्माणी भूपताचारधारिणी ॥५९॥
भूपतानन्दलहरी भूपतेश्वररूपिणी ।
भूपतेर्नीतिनीतिस्था भूपतिस्थानवासिनी ॥६०॥
भूपतिस्थानगीर्वाणी भूपतेर्वरधारिणी ।
भेषजानन्दलहरी भेषजानन्दरूपिणी ॥६१॥
भेषजानन्दमहिषी भेषजानन्दधारिणी ।
भेषजानन्दकर्मेशी भेषजानन्ददायिनी ॥६२॥

भेषजी भेषजाकन्दा भेषजस्थानवासिनी ।
भेषजेश्वररूपा च भेषजेश्वरसिद्धिदा ।।६३।।
भेषजेश्वरधर्मेशी भेषजेश्वरकर्मदा ।
भेषजेश्वरकर्मेशी भेषजेश्वरकर्मिणी ।।६४।।
भेषजाधीश जननी भेषजाधीशपालिनी ।
भेषजाधीशरचना भेषजाधीशमङ्गला ।।६५।।
भेषजारण्यमध्यस्था भेषजारण्यरक्षिणी ।
भैषज्यविद्या भैषज्या भैषज्येत्सितदायिनी ।।६६।।
भैषजस्था भैषजेशी भैषज्यानन्दवर्द्धिनी ।
भैरवा भैरवाचारा भैरवाकाररूपिणी ।।६७।।
भैरवाचारचतुरा भैरवाचारमण्डिता ।
भैरवा च भैरवेशी भैरवानन्ददायिनी ।।६८।।
भैरवानन्दरूपेशी भैरवानन्दरूपिणी ।
भैरवानन्दनिपुणा भैरवानन्दमन्दिरा ।।६९।।
भैरवानन्दतत्त्वज्ञा भैरवानन्दतत्परा ।
भैरवानन्दकुशला भैरवानन्दनीतिदा ।।७०।।
भैरवानन्दप्रीतिस्था भैरवानन्दप्रीतिदा ।
भैरवानन्दमहिषी भैरवानन्दमालिनी ।।७१।।
भैरवानन्दमतिदा भैरवानन्दमातृका ।
भैरवाधारजननो भैरवाधाररक्षिणी ।।७२।।
भैरवाधाररूपेशी भैरवाधाररूपिणो ।
भैरवाधारनिचया भैरवाधारनिश्चया ।।७३।।
भैरवाधारतत्त्वज्ञा भैरवाधारतत्त्वदा ।
भैरवाश्रयतन्त्रेशी भैरवाश्रयमन्त्रिणी ।।७४।।
भैरवाश्रयरचना भैरवाश्रयरञ्जिता ।
भैरवाश्रयनिर्भारा भैरवाश्रयनिर्भरा ।।७५।।

भैरवाश्रयनिर्धारा भैरवाश्रयनिर्धरा ।
भैरवानन्दबोधेशी भैरवानन्दबोधिनी ।।७६।।
भैरवानन्दबोधस्था भैरवानन्दबोधदा ।
भैरव्यैश्वर्य्यवरदा भैरव्यैश्वर्य्यदायिनी ।।७७।।
भैरव्यैश्वर्य्यरचना भैरव्यैश्वर्य्यवर्द्धिनी ।
भैरव्यैश्वर्यसिद्धिस्था भैरव्यैश्वर्यसिद्धिदा ।।७८।।
भैरव्यैश्वर्यसिद्धेशी भैरव्यैश्वर्यरूपिणी ।
भैरव्यैश्वर्यसुपथा भैरव्यैश्वर्यसुप्रभा ।।७९।।
भैरव्यैश्वर्यवृद्धिस्था भैरव्यैश्वर्यवृद्धिदा ।
भैरव्यैश्वर्यकुशला भैरव्यैश्वर्यकामदा ।।८०।।
भैरव्यैश्वर्य्यसुलभा भैरव्यैश्वर्य्यसम्प्रदा ।
भैरव्यैश्वर्य्यविशदा भैरव्यैश्वर्य्यविक्रया ।।८१।।
भैरव्यैश्वर्य्यविनया भैरव्यैश्वर्यवेदिता ।
भैरव्यैश्वर्य्यमहिमा भैरव्यैश्वर्य्यमानिनी ।।८२।।
भैरव्यश्वर्य्यनिरता भैरव्यैश्वर्य्यनिर्मिता ।
भोगेश्वरी भोगमाता भोगस्था भोगरक्षिणी ।।८३।।
भोगक्रीडा भोगलीला भोगेशो भोगवर्द्धिनी ।
भोगाङ्गी भोगरमणी भोगाचारविचारिणी ।।८४।।
भोगाश्रय भोगवती भोगिनी भोगरूपिणी ।
भोगांकुरा भोगविधा भोगाधार निवासिनी ।।८५।।
भोगाम्बिका भोगरता भोगसिद्धिविधायिनी ।
भोजस्था भोजनिरता भोजनानन्ददायिनी ।।८६।।
भोजनानन्दलहरी भोज नान्तर्विहारिणी ।
भोजनानन्दमहिमा भोजनानन्द भोग्यदा ।।८७।।
भोजनानन्दरचना भोजनानन्दहर्षिता ।
भोजनाचारचतुरा भोजनाचार मण्डिता ।।८८।।

भोजनाचारचरिता भोजनाचारर्चिता ।
भोजनाचार सम्पन्ना भोजनाचारसंयुता ॥८९॥
भोजनाचारचित्तस्था भोजनाचाररीतिदा ।
भोजनाचारविभवा भोजनाचारविस्तृता ॥९०॥
भोजनाचाररमणी भोजनाचाररक्षिणी ।
भोजनाचारहरिणी भोजनाचारभक्षिणी ॥९१॥
भोजनाचारसुखदा भोजनाचारसुस्पृहा ।
भोजनाहारसुरसा भोजनाहारसुन्दरी ॥९२॥
भोजनाहारचरिता भोजनाहारचञ्चला ।
भोजनास्वादविभवा भोजनास्वादवल्लभा ॥९३॥
भोजनास्वादसन्तुष्टा भोजनास्वादसम्प्रदा ।
भोजनास्वादसुपथा भोजनास्वादसंश्रया ॥९४॥
भोजनास्वादनिरता भोजनास्वादनिर्णिता ।
भौक्षरा भौक्षरेशानी भौकाराक्षररूपिणी ॥९५॥
भौक्षरस्था भौक्षरादिर्भौक्षरस्थानवासिनी ।
भङ्कागी भर्मिणी भर्मी भस्मेशी भस्मरूपिणी ॥९६॥
भङ्कारा भञ्जना भस्मा भस्मस्था भस्मवासिनी ।
भक्षरी भक्षराकारा भक्षरस्थानवासिनी ॥९७॥
भक्षराढ्या भक्षरेशी भरूपा भस्वरूपिणी ।
भूधरस्था भूधरेशी भूधरी भूधरेश्वरी ॥९८॥
भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दपालिनी ।
भूधरानन्दजननी भूधरानन्दवासिनी ॥९९॥
भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दरक्षिता ।
भूधरानन्दमहिमा भूधरानन्दमन्दिरा ॥१००॥
भूधरानन्दसर्वेशी भूधरानन्दसर्वसूः ।
भूधरानन्दमहिषी भूधरानन्ददायिनी ॥१०१॥

भूधराधीशधर्मेशी भूधरानन्दधर्मिणी ।
भूधराधीशधर्मेशी भूधराधीशसिद्धिदा ॥१०२॥
भूधराधीशकर्मेशी भूधराधीशकामिनी ।
भूधराधीशनिरता भूधराधीशनिर्णिता ॥१०३॥
भूधराधीशनीतिस्था भूधराधीशनीतिदा ।
भूधराधीशभाग्येशी भूधराधीशभामिनी ॥१०४॥
भूधराधीशबुद्धिस्था भूधराधीशबुद्धिदा ।
भूधराधीश वरदा भूधराधीशवन्दिता ॥१०५॥
भूधराधीशऽराध्या च भूधराधीशर्चाचिता ।
भङ्गेश्वरी भङ्गमयी भङ्गस्था भङ्गरूपिणी ॥१०६॥
भङ्गाक्षता भङ्गरता भङ्गार्च्या भङ्गरक्षिणी ।
भङ्गावती भङ्गलोला भङ्गभोगविलासिनी ॥१०७॥
भङ्गरङ्गप्रतीकाशा भङ्गरङ्गनिवासिनी ।
भङ्गाशिनी भङ्गमूली भङ्गभोगविधायिनो ॥१०८॥
भङ्गाश्रया भङ्गबीजा भङ्गबीजांकुरेश्वरी ।
भङ्गयन्त्रचमत्कारा भङ्गयन्त्रेश्वरी तथा ॥१०९॥
भङ्गयन्त्रविमोहस्था भङ्गयन्त्रविनोदिनी ।
भङ्गयन्त्रविचारस्था भङ्गयन्त्रविचारिणी ॥११०॥
भङ्गयन्त्ररसानन्दा भङ्गयन्त्ररसेश्वरी ।
भङ्गयन्त्ररसस्वादा भङ्गयन्त्ररसास्थिता ॥१११॥
भङ्गयन्त्ररसाधरा भङ्गयन्त्ररसाश्रया ।
भूधरात्मजरूपेशी भूधरात्मजरूपिणी ॥११२॥
भूधरात्मजयोगेशी भूधरात्मजपालिनी ।
भूधरात्मजमहिमा भूधरात्मजमालिनी ॥११३॥
भूधरात्मजभूतेशी भूधरात्मजरूपिणी ।
भूधरात्मजसिद्धिस्था भूधरात्मजसिद्धिदा ॥११४॥

भूधरात्मजभावेशी भूधरात्मजभाविनी ।
भूधरात्मजभोगस्था भूधरात्मजभोग्यदा ॥११५॥
भूधरात्मजभोगेशी भूधरात्मजभोगिनी ।
भव्या भव्यतरा भव्यभाविनी भववल्लभा ॥११६॥
भावातिभावा भावाख्या भातिभा भीतिभान्तिका ।
भासान्तिभासा भासस्था भासाभा भास्करोपमा ॥११७॥
भास्करस्था भास्करेशी भास्करैश्वर्यवर्द्धिनी ।
भास्करानन्दजननी भास्करानन्ददायिनी ॥११८॥
भास्करानन्दमहिमा भास्करानन्दमातृका ।
भास्करानन्दनैश्वर्य्या भास्करानन्दनेश्वरी ॥११९॥
भास्करानन्दसुपथा भास्करानन्दसुप्रभा ।
भास्करानन्दनिचया भास्करानन्दनिर्मिता ॥१२०॥
भास्करानन्दनीतिस्था भास्करानन्दनीतिदा ।
भास्करोदयमध्यस्था भास्करोदयमध्यगा ॥१२१॥
भास्करोदयतेजःस्था भास्करोदयतेजसा ।
भास्कराचारचतुरा भास्कराचारचन्द्रिका ॥१२२॥
भास्कराचारपरमा भास्कराचारचण्डिका ।
भास्कराचारपरमा भास्कराचारपारदा ॥१२३॥
भास्कराचारमुक्तिस्था भास्कराचारमुक्तिदा ।
भास्कराचारसिद्धिस्था भास्कराचारसिद्धिदा ॥१२४॥
भास्कराचरणाधारा भास्कराचरणाश्रिता ।
भास्कराचारमन्त्रेशी भास्कराचारमन्त्रिणी ॥१२५॥
भास्कराचारवित्तेशी भास्कराचारचित्रिणी ।
भास्कराधारधर्मेशी भास्कराधारधारणी ॥१२६॥
भास्कराधाररचना भास्कराधाररक्षिता ।
भास्कराधारकर्माणी भास्कराधारकर्मदा ॥१२७॥

भास्कराधाररूपेशी भास्कराधाररूपिणी ।
भास्कराधारकाम्येशी भास्कराधारकामिनी ॥१२८॥
भास्कराधारसांशेशी भास्कराधारसांशिनी ।
भास्कराधारधर्मेशी भास्कराधारधामिनी ॥१२९॥
भास्करा धारचक्रस्था भास्कराधारचक्रिणी ।
भास्करेश्वरक्षेत्रेशी भास्करेश्वरक्षेत्रिणी ॥१३०॥
भास्करेश्वरजननी भास्करेश्वरपालिनी ।
भास्करेश्वरसर्वेणी भास्करेश्वरशर्वरी ॥१३१॥
भास्करेश्वरसङ्कीमा भास्करेश्वरसन्निभा ।
भास्करेश्वर सुपथा भास्करेश्वरसुप्रभा ॥१३२॥
भास्करेश्वरयुवती भास्करेश्वर सुन्दरी ।
भास्करेश्वरमूर्तेशी भास्करेश्वरमूर्तिनी ॥१३३॥
भास्करेश्वरमित्रेशी भास्करेश्वरमन्त्रिणी ।
भास्करेश्वरसानन्दा भास्करेश्वरसाश्रया ॥१३४॥
भास्करेश्वरचित्रस्था भास्करेश्वरचित्रदा ।
भास्करेश्वरचित्रेशी भास्करेश्वरचित्रिणी ॥१३५॥
भास्करेश्वरभाग्यस्था भास्करेश्वरभाग्यदा ।
भास्करेश्वरभाग्येशी भास्करेश्वरभाविनी ॥१३६॥
भास्करेश्वरकीर्तेशी भास्करेश्वरकीर्तिनी ।
भास्करेश्वरकीर्तिस्था भास्करेश्वरकीर्तिदा ॥१३७॥
भास्करेश्वरकरुणा भास्करेश्वरकारिणी ।
भास्करेश्वरगीर्वाणी भास्करेश्वरगारुणी ॥१३८॥
भास्करेश्वरदेहस्था भास्करेश्वरदेहदा ।
भास्करेश्वरनादस्था भास्करेश्वरनादिनी ॥१३९॥
भास्करेश्वरनादेशी भास्करेश्वरनादिनी ।
भास्करेश्वरकोशस्था भास्करेश्वरकोशदा ॥१४०॥

भास्करेश्वरकोशेशी भास्करेश्वरकोशिनी ।
भास्करेश्वरशक्तिस्था भास्करेश्वरशक्तिदा ॥१४१॥
भास्करेश्वरतोषेशी भास्करेश्वरतोषिणी ।
भास्करेश्वरक्षत्रेशी भास्करेश्वरक्षत्रिणी ॥१४२॥
भास्करेश्वरयोगस्था भास्करेश्वरयोगदा ।
भास्करेश्वरयोगेशी भास्करेश्वरयोगिनी ॥१४३॥
भास्करेश्वरपद्मेशी भास्करेश्वरपद्मिनी ।
भास्करेश्वरहृद्बीजा भास्करेश्वरहृद्वरा ॥१४४॥
भास्करेश्वरहृद्योनिर्भास्करेश्वरहृद्युतिः ।
भास्करेश्वरबुद्धिस्था भास्करेश्वरसद्विधा ॥१४५॥
भास्करेश्वरसद्वाणी भास्करेश्वरसद्वरा ।
भास्करेश्वरराज्यस्था भास्करेश्वरराज्यदा ॥१४६॥
भास्करेश्वरराज्येशी भास्करेश्वरपोषिणी ।
भास्करेश्वरज्ञानस्था भास्करेश्वरज्ञानदा ॥१४७॥
भास्करेश्वरज्ञानेशी भास्करेश्वरगामिनी ।
भास्करेश्वरलक्ष्मेशी भास्करेश्वरक्षालिता ॥१४८॥
भास्करेश्वरलक्षिता भास्करेश्वररक्षिता ।
भास्करेश्वरखड्गस्था भास्करेश्वरखड्गदा ॥१४९॥
भास्करेश्वरखंगेशी भास्करेश्वरखंगिनी ।
भास्करेश्वरकार्येशी भास्करेश्वरकामिनी ॥१५०॥
भास्करेश्वरकायस्था भास्करेश्वरकायदा ।
भास्करेश्वरचक्षुःस्था भास्करेश्वरचक्षुषा ॥१५१॥
भास्करेश्वरसन्नाभा भास्करेश्वरर्साचिता ।
भ्रूणहत्याप्रशमनी भ्रूणपापविनाशिनी ॥१५२॥
भ्रूणदारिद्र्यशमनी भ्रूणरोगविनाशिनी ।
भ्रूणशोकप्रशमनी भ्रूणदोषनिवारिणी ॥१५३॥

भ्रूणसन्तापशमनी भ्रूणविभ्रमनाशिनी ।
भवाब्धिस्था भवाब्धीशा भवाब्धि भयनाशिनी ॥१५४॥
भवाब्धिप।रकरणी भवाब्धिसुखवर्द्धिनी ।
भवाब्धिकार्यकरणी भवाब्धिकरुणानिधिः ॥१५५॥
भवाब्धिकालशमनी भवाब्धिवरदायिनी ।
भवाब्धिभजनस्थाना भवाब्धिभजनस्थिता ॥१५६॥
भवाब्धिभजनाकारा भवाब्धिजननक्रिया ।
भवाब्धिभजनाचारा भवाब्धिभजनाकुरा ॥१५७॥
भवाब्धिभजनानन्दा भवाब्धिभजनाधिपा ।
भवाब्धिभजनैश्वर्या भवाब्धिजननेश्वरी ॥१५८॥
भवाब्धिभजनासिद्धिर्भवाब्धिभजनारतिः ।
भवाब्धिभजनानित्या भवाब्धिभजनानिशा ॥१५९॥
भवाब्धिभजनानिम्ना भवाब्धिभवभीतिहा ।
भवाब्धिभजनाकाम्या भवाब्धिभजनाकला ॥१६०॥
भवाब्धिभजनाकीर्तिर्भवाब्धिभजनाकृता ।
भवाब्धिशुभदानित्या भवाब्धिशुभदायिनी ॥१६१॥
भवाब्धिसकलानन्दा भवाब्धिसकलाकला ।
भवाब्धिसकलासिद्धिर्भवाब्धिसकलानिधिः ॥१६२॥
भवाब्धिसकलासारा भवाब्धिसकलार्थदा ।
भवाब्धिभवनामूर्तिर्भवाब्धिभवनाकृतिः ॥१६३॥
भवाब्धिभवनाभव्या भवाब्धिभवनाम्भसा ।
भवाब्धिमदनारूपा भवाब्धिमदनातुरा ॥१६४॥
भवाब्धिमदनेशानी भवाब्धिमदनेश्वरी ।
भवाब्धिभाग्यरचना भवाब्धिभाग्यदा सदा ॥१६५॥
भवाब्धिभाग्यदाकला भवाब्धिभाग्यनिर्भरा ।
भवाब्धिभाग्यनिरता भवाब्धिभाग्यभाविता ॥१६६॥

भवाब्धिभाग्यसंचारा भवाब्धिभाग्यसञ्चिता ।
भवाब्धिभाग्यसुपथा भवाब्धिभाग्यसुप्रदा ॥१६७॥
भवाब्धिभाग्यरीतिज्ञा भवाब्धिभाग्यनीतिदा ।
भवाब्धिभाग्यरीतीशी भवाब्धिभाग्यरीतिनी ॥१६८॥
भवाब्धिभोगनिपुणा भवाब्धिभोगसम्प्रदा ।
भवाब्धिभाग्यगहना भवाब्धिभोग्यगुम्फिता ॥१६९॥
भवाब्धिभोगगान्धारी भवाब्धिभोगगुम्फिता ।
भवाब्धिभोगसुरसा भवाब्धिभोगसुस्पृहा ॥१७०॥
भवाब्धिभोगग्रथिनी भवाब्धिभोगयोगिनी ।
भवाब्धिभोगरसना भवाब्धिभोगराजिता ॥१७१॥
भवाब्धिभोगविभवा भवाब्धिभोगविस्तृता ।
भवाब्धिभोगवरदा भवाब्धिभोगवन्दिता ॥१७२॥
भवाब्धिभोगकुशला भवाब्धिभोगशोभिता ।
भवाब्धिभेदजननी भवाब्धिभेदपालिनी ॥१७३॥
भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरक्षिता ।
भवाब्धिभेदनियता भवाब्धिभेदनिस्पृहा ॥१७४॥
भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरोपिता ।
भवाब्धिभेदराशिघ्नी भवाब्धिभेदराशिनी ॥१७५॥
भवाब्धिभेदकर्मेशी भवाब्धिभेदकर्मिणी ।
भद्रेशी भद्रजननी भद्रा भद्रनिवासिनी ॥१७६॥
भद्रेश्वरी भद्रवती भद्रस्था भद्रदायिनी ।
भद्ररूपा भद्रमयी भद्रदा भद्रभाषिणी ॥१७७॥
भद्रकर्णा भद्रवेषा भद्राम्बा भद्रमन्दिरा ।
भद्रक्रिया भद्रकला भद्रिका भद्रवर्द्धिनी ॥१७८॥
भद्रक्रीडा भद्रकला भद्रलीलाभिलाषिणी ।
भद्रांकुरा भद्ररता भद्राङ्गी भद्रमन्त्रिणी ॥१७९॥

भद्रविद्याऽभद्रविद्या भद्रवाग्भद्रवादिनी ।
भूपमङ्गलदा भूपा भूलता भूमिवाहिनी ॥१८०॥
भूपभोगा भूपशोभा भूपाशाभूपरूपदा ।
भूपाकृतिर्भूपरतिर्भूपश्रीर्भूपश्रेयसी ॥१८१॥
भूपनीतिर्भूपरीतिर्भूपभीतिर्भयङ्करी ।
भवदानन्दलहरी भवदानन्दसुन्दरी ॥१८२॥
भवदानन्दकरणी भवदानन्दवर्द्धिनी ।
भवदानन्दरमणी भवदानन्ददायिनी ।
भवदानन्दजननी भवदानन्दरूपिणी ॥१८३॥

फलश्रुतिः—

य इदं पठते स्तोत्रं प्रत्यहं भक्तिसंयुतः ॥१८४॥
गुरुभक्तियुतो भूत्वा गुरुसेवापरायणः ।
जितेन्द्रियः सत्यवादी ताम्बूलपुरिताननः ॥१८५॥
दिवा रात्रौ च सन्ध्यायां स भवेत्परमेश्वरः ।
स्तवमात्रस्य पाठेन राजावश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥१८६॥
सर्वागमेषु विज्ञानी सर्वतन्त्रे स्वयं हरः ।
गुरोर्मुखात्समभ्यस्य स्थित्वा च गुरुसन्निधौ ॥१८७॥
शिवस्थानेषु सन्ध्यायां शून्यागारे चतुष्पथे ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स योगी नात्र संशयः ॥१८८॥
सर्वस्वदक्षिणान्दद्यात्स्त्रीपुत्रादिकमेव च ।
स्वच्छन्दमानसो भूत्वा स्तवमेतं समुद्धरेत् ॥१८९॥
एतत्स्तोत्ररतो देवि हररूपो न संशयः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि एक चित्तेन सर्वदा ॥१९०॥
स दीर्घायुः सुखी वाग्मी वाणी तस्य न संशयः ।
गुरुपादरतो भूत्वा कामिनीनां भवेत्प्रियः ॥१९१॥
धनवान्गुणवान् श्रीमान् धीमानिव गुरुः प्रिये ।
सर्वेषां तु प्रियो भूत्वा पूजयेत्सर्वदास्तवम् ॥१९२॥

मन्त्रसिद्धिः करस्थैव तस्य देवि न संशयः ।
कुबेरत्त्वं भवेत्तस्य तस्याधीना हि सिद्धयः ॥१९३॥
मृतपुत्रा च या नारी दौर्भाग्यपरिपीडिता ।
बन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥१९४॥
धनधान्यविहीना च रोगशोकाकुला च या ।
ताभिरेतन्महादेवि भूर्जपत्रे विलिख्य वै ॥१९५॥
सव्ये भुजे धारणीयं तेन सौख्यप्रदं भवेत् ।
एवं पुनः पुनः प्रायाद्दुःखेन परिपीडिता ॥१९६॥
सभायां व्यसने वाणीविवादे शत्रुसंकटे ।
चतुरङ्गे तथा युद्धे सर्वत्रापदि पीडने ॥१९७॥
स्मरणादस्य कल्याणि संशया यान्ति दूरतः ।
न देयं परशिष्याय नाभक्ताय च दुर्जने ॥१९८॥
दाम्भिकाय कुशीलाय कृपणाय सुरेश्वरि ।
दद्याच्छिष्याय शान्ताय विनीताय जितात्मने ॥१९९॥
भक्ताय शान्तियुक्ताय रजःपूजारताय च ।
जन्मान्तरसहस्रैस्तु वर्णितुन्नैव शक्यते ॥२००॥
स्तवमात्रस्य माहात्म्यं वक्त्रकोटिशतैरपि ।
विष्णवे कथितं पूर्वं ब्रह्मणापि प्रियम्वदे ॥२०१॥
अधुनापि तव स्नेहात्कथितं परमेश्वरि ।
गोपितव्यं पशुभ्यश्च सर्वथा न प्रकाशयेत् ॥२०२॥

॥ इति श्रीमहातन्त्रार्णवे ईश्वरपार्वतीसम्वादे भुवनेश्वर्यकारादि सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

छिन्नमस्ता-तन्त्र



१ | # छिन्नमस्ता--तत्व

भगवती छिन्नमस्ता

दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत भगवती 'छिन्नमस्ता' पाँचवीं हैं, अतः इन्हें 'पंचमी विद्या' भी कहा जाता है। इनका अपर नाम 'प्रचण्ड-चण्ड-चण्डिका' अथवा 'प्रचण्ड चण्डिका' भी है।

ये 'वीर रात्रि', विद्या हैं तथा इनके शिव 'कबन्ध' हैं। इन्हें कबन्ध शिव की महाशक्ति भी कहा जाता है। इनका स्वरूप ऐसे 'कवन्ध' (सिर कटे हुए धड़) जैसा प्रतिपादित किया गया है, जो अपने कटे हुए मस्तक को भी अपने ही हाथ में लिए हुए है। ये अस्थिमाला धारिणी हैं। इन्हें प्राण तोषिणी भी कहा गया है। यह शक्ति शत्रु का नाश करने वाली है। भगवान् परशुराम इसी विद्या के उपासक थे। नाथ पंथी साधक भी इन्हीं की उपासना करते हैं। स्वयं गुरु श्री गोरखनाथ भी भगवती छिन्नमस्ता की ही उपासना करते थे।

'पाङ्क्तो वै यज्ञः' के अनुसार सृष्टि का मूल 'यज्ञ' पाँच विभागों में विभक्त है। वे हैं—(१) पाक यज्ञ, (२) हविर्यज्ञ, (३) महायज्ञ, (४) अतियज्ञ तथा (५) शिरोयज्ञ।

स्मार्त यज्ञ ही 'पाक यज्ञ' है। इसी को 'गृह्ययज्ञ' तथा 'एकाग्नियज्ञ' भी कहा जाता है।

अग्नि होत्र, दर्शवौर्णभास्य, चातुर्मास्य, पशुवन्ध इत्यादि 'हविर्यज्ञ' कहे जाते हैं।

भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृयज्ञ, देव यज्ञ तथा ब्रह्मयज्ञ—ये पाँच 'महा-यज्ञ' हैं।

अग्नि—चयन, राजसूय, अश्वमेघ तथा वाजपेय— ये 'अति यज्ञ' हैं।

'छिन्नशीर्षो वै यज्ञः'—इस श्रुति के अनुसार पूर्वोक्त सभी यज्ञ 'छिन्नशीर्ष' हैं। सबका मस्तक कटा हुआ है। सुप्रसिद्ध पौराणिक 'हयग्रीवोपाख्यान' का (जिसमें गणपति-वाहन मूषक की कृपा से धनुष-प्रत्यञ्चा भङ्ग हो जाने से शयान

विष्णु के शिरश्छेद का निरूपण है। इसी 'छिन्न शीर्ष' से सम्बन्ध है। प्रत्येक यज्ञ के अन्त में शिर: सन्धान के लिए जो यज्ञ किया जाता है, उसे ही 'शिरोयज्ञ' कहते हैं। इसे किये बिना यज्ञ मस्तक विहीन रहता है। इसी यज्ञ को ब्राह्मण ग्रन्थों में—(१) सम्राट् याग, (२) प्रवर्ग्य याग, (३) धर्म याग, (४) महावीरोपासना आदि अनेक नाम दिये गये हैं।

'सूर्य्यो ह वा अग्निहोत्रम्', 'सूर्यो वा ज्योतिष्टोम:'—इत्यादि के अनुसार अग्नीषोमात्मक सूर्य यज्ञ रूप है। इस यज्ञ मूर्ति, अतएव 'विष्णु' नाम से प्रसिद्ध सूर्य-पुरुष का यज्ञात्मना निरूपण करते हुए वेद-पुरुष कहते हैं—

"चत्वारि ऋङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश।"

(गो. ब्रा. ३/७)

अर्थात्—(१) ऋग्, (२) यजु, (३) साम तथा (४) अथर्व—ये चारों वेद इसके चार सींग हैं। (१) प्रात: सवन, (२) माध्यन्दिन सवन तथा (३) सायं सवन—ये तीन सवन ही इसके तीन पाँव हैं। (१) ब्रह्मौदन तथा (२) प्रवर्ग्य—ये दो मस्तक हैं। (१) मन्त्र, (२) कल्प और (३) ब्राह्मण—इन तीनों से वह मर्यादित है। 'गायत्री' आदि सात छन्द ही उसके सात हाथ हैं। ऐसा यह 'यज्ञ-वृषभ' विश्व में हुङ्कार कर रहा है। यही महादेव मरणधर्मा सब प्राणियों का आत्मा बना हुआ है। सब में आत्मरूप से प्रविष्ट हो रहा है।

पूर्वोक्त यज्ञावयवों में ब्रह्मौदन तथा प्रवर्ग्य की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। जिस वस्तु का आत्मा से नित्य सम्बन्ध रहता है, वह उस आत्मा का 'ब्रह्मौदन' कहलाता है। वह अन्न उस ब्रह्म का ओदन है। उसके अतिरिक्त उसे अन्य कोई नहीं ले सकता।

जो वस्तु उस आत्मा से पृथक् होकर, दूसरे आत्मा का अन्न बन जाती है, वह 'प्रवर्ग्य' कहलाती है। उसी को 'उच्छिष्ट' भी कहते हैं। सूर्य का जो ताप सूर्य से बद्ध रहता है, वह उसका 'ब्रह्मौदन' है। परन्तु जो ताप अलग होकर औषधि, वनस्पति, मनुष्यादि के निर्माण में प्रयुक्त हो जाता है, वह 'प्रवर्ग्य' है।

धूप में पानी रख देने से वह गरम हो जाता है। सूर्य इस पानी में अपने ताप को छोड़ गया। हवा में भी छोड़ गया। रात्रि है, तथापि हवा में गरमी है। यही उसका 'प्रवर्ग्य-भाग' है, घर्म भाग है। घर्म ही निरुक्त क्रमानुसार घरम रूप में परिणत होता हुआ 'गरम' बन गया है।

ताप, सौर पञ्चयावत् पदार्थों का उपलक्षण है। सब सौर-पदार्थ सूर्य से अलग होते रहते हैं। यदि सूर्य इस उच्छिष्ट को नहीं छोड़ता तो विश्व-निर्माण

असम्भव था। इसी आधार पर 'उच्छिष्टात् सकलं जगत्' यह कहा जाता है। यह प्रवर्ग्य ही पूर्व श्रुति के अनुसार उस यज्ञ का मस्तक है। यह अलग कट जाता है, इसी कारण यज्ञ को 'छिन्न शीर्ष' कहा जाता है।

पार्थिव गणपति की प्राण प्रतिष्ठा रूप मूषक का आत्मा बनने वाला घन-वायु ही अपने व्यापार से उस प्रवर्ग्य को यज्ञ से अलग करता है। मूषक द्वारा ही यज्ञ विष्णु का मस्तक कटता है। कहने का तात्पर्य यह है कि 'ब्रह्मौदन' से आत्मरक्षा होती है एवं 'प्रवर्ग्य' से सृष्टि का स्वरूप बनता है। इस प्रवर्ग्य को ही निगम मूलक आगम शास्त्र 'कबन्ध' नाम से व्यवहृत करता है। इस कबन्ध-पुरुष की शक्ति का नाम ही 'छिन्नमस्ता' है। छिन्नमस्ता बनकर ही वह शक्ति संसार बनती है एवं उसी रूप से नाश भी करती है।

यज्ञ-मूर्ति सूर्य से उत्पन्न होने वाले जड़-चेतन रूप सभी पदार्थ यज्ञमूर्ति हैं। सबमें से प्रवर्ग्य-भाग निकल रहा है। हम उसके प्रवर्ग्य को लेकर जीवित हैं। साथ ही, हमारा प्रवर्ग्य उसमें जा रहा है। सूर्य त्रैलोक्य एवं उसकी प्रजा को प्रवर्ग्यान्न देता है। साथ ही रश्मियों द्वारा लेता भी रहता है। विसर्ग से जैसे उस-प्रजापति का शरीर प्रतिक्षण विस्रस्त होता रहता है, आदान से प्रतिक्षण उसका सन्धान भी होता रहता है। इसी प्रक्रिया कानाम 'शिरः सन्धान' है। यही प्रवर्ग्य-याग है। जिस प्रकार कोई प्राणी मस्तक कटने से निर्जीव हो जाता है, उसी प्रकार इसके बिना यज्ञस्वरूप ही नष्ट हो जाता है। अतएव ब्रह्मौदनवत् प्रवर्ग्य-भाग को भी हम अवश्य ही 'यज्ञ का मस्तक' कहने के लिए तय्यार हैं। वह मुझे देता है, साथ ही मुझे खाता भी है। इसके साथही, उस खाने वाले को मैं भी निरन्तर खा रहा हूँ। वस्तुमात्र में यह आदान-विसर्ग निरन्तर हो रहा है। जब तक आदान-विसर्गात्मक यज्ञ है, तभी तक विश्वसत्ता है।

इसी यज्ञ-रहस्य का निरूपण करती हुई श्रुति कहती है—

"अहमस्यि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवभ्योऽमृतस्य नाम। यो मा ददाति स इदेवमावत् अहमन्नमन्नमदन्तमद्मि।"

अर्थात् मैं छिन्न शीर्ष अवश्य हूँ, तथापि अन्नागमनरूप शिरःसन्धान यज्ञ से स्व-स्वरूप में प्रतिष्ठित हूँ, परन्तु जब यह शिरः सन्धान रूप अन्नगमन बन्द हो जायगा, उस समय केवल 'छिन्नमस्ता' ही रह जायगी। उस समय वह सर्वात्मना हमारा शोषण कर लेगी।

जो महामाया 'षोडशी' बनकर 'भुवनेश्वरी' बनती हुई संसार का पालन करती है, वही अन्तकाल में 'छिन्नमस्ता' बन कर नाश कर डालती है कर्त्री (कैंची), खर्पर (खप्पर), रक्त, नाग, दिगम्बरत्व आदि उस संहार शक्ति के ही पर्याय हैं।

२ | छिन्नमस्ता मन्त्र-प्रयोग

मन्त्र

'मन्त्र महोदधि' में भगवती छिन्नमस्ता का सप्तदशाक्षर (सत्रह अक्षरों वाला) मन्त्र इस प्रकार बताया गया है—

"ॐ श्रीं ह्लीं ह्लीं वज्र वैरोचनीये ह्लीं ह्लीं फट् स्वाहा ।"

उक्त मन्त्र में ह्लीं बीज के बाद से बीज का प्रयोग करने से निम्नलिखित अष्टदशाक्षर मन्त्र बन जाता है—

"ॐ श्रीं ह्लीं ह्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्लीं ह्लीं फट् स्वाहा ।"

उक्त मन्त्र में 'ऐं' के बाद 'क्लीं' बीज और जोड़ देने से निम्नलिखित ऊनविंशत्यक्षर (१६ अक्षरों वाला) मन्त्र बन जाता है। यथा—

"ॐ श्रीं ह्लीं ह्लीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्लीं ह्लीं फट् स्वाहा ।"

उक्त तीनों मन्त्रों की प्रयोग विधि एक समान ही है। जो निम्नानुसर है—

विनियोग—

"ॐ अस्य श्री छिन्नमस्ता मन्त्रस्य भैरव ऋषिः सम्राट् छन्दः छिन्नमस्ता भुवनेश्वरी देवता हूं हूं बीजं (मतान्तरेण—ह्लीं ह्लीं बीजं) स्वाहाशक्तिरभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ।"

ऋष्यादि न्यासः—

ॐ भैरव ऋषये नमः—शिरसि ।

सम्राट छन्दसे नमः—मुखे ।

छिन्नमस्ता देवतायै नमः—हृदि ।

हूं हूं बीजाय नमः—गुह्ये ।

(मतान्तरेण—ह्रीं ह्रीं बीजाय नमः)
स्वाहा शक्तये नमः—पादयो।
विनियोगाय नमः—सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

करांग न्यासः—

ॐ आं खड्गाय ह्रीं ह्रीं फट् हृदयाय स्वाहा—कनिष्ठयोः।
ॐ ईं सुखड्गाय ह्रीं ह्रीं फट् शिरसे स्वाहा—अनामिकयोः।
ॐ ऊं वज्राय ह्रीं ह्रीं फट् शिखायै स्वाहा—मध्यमयोः।
ॐ ऐं पाशाय ह्रीं ह्रीं फट् कवचाय स्वाहा—तर्जन्योः।
ॐ औं अंकुशाय ह्रीं ह्रीं फट् नेत्रत्रयाम स्वाहा—अङ्गुष्ठयोः।
ॐ अः वसुरक्ष ह्रीं ह्रीं फट् अस्त्राय फट्—करतलकरपृष्ठयोः।

(इति कराङ्ग न्यासः)

हृदयादि षडङ्ग न्यास—

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा।
ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा स्वाहा।
ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा।
ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा।
ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा।
ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा।

(इति हृदयादि षडङ्ग न्यासः)

फिर—

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा मस्तकादि पाद पर्यन्तम्।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा पादादि मस्तकान्तम्।

इससे तीन बार न्यास करें। तदुपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान—

"भास्वन्मण्डल मध्यगां निजशिर श्छिन्नं विकीर्णालकं
स्फारास्यं प्रपिबद्‌गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ।
याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनी
वर्णिन्यौ परिदृश्यमोद कलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे ।।"

भावार्थ—"सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान बाँये हाथ में अपने ही कटे हुए मस्तक को धारण करने वाली, बिखरे हुए केशों वाली, अपने कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का स्वयं ही पान करने वाली, विपरीत रति में आसक्त, रति तथा कामदेव के ऊपर स्थित, डाकिनी तथा वर्णिनी नामक अपनी सखियों के साथ प्रसन्न रहने वाली भगवती छिन्नमस्ता देवी का मैं ध्यान करता हूँ।"

तन्त्रान्तर में ध्यान के अन्य मन्त्र निम्नानुसार हैं—

"प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्तृकां ।
दिग्वस्त्रां स्वकबंधशोणितसुधाधारां पिवन्तीं मुदा ।
नागाबद्ध शिरोर्मणि त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां ।
रत्यासक्त मनोभवोपरिहढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ।।१।।
दक्षे चातिसिता विमुक्तत्रिकुरा कर्त्री तथा खर्परं ।
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापिसा वर्णिनी ।
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्ती मुदा ।
नागाबद्ध शिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ।।२।।
प्रत्यालीढपदा कबन्ध विगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा ।
सैवा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ।
ध्येया ध्यान परैः सदा सविनयं भक्तेष्ट भूतिप्रदा ।।३।।

ध्यान के अन्य मन्त्र प्रकार निम्नलिखित हैं—

"स्वनाभौ नीरजं ध्यायेदर्द्धविकसितं सितम् ।
तत्पद्मकोशमध्ये तु मण्डलं चण्डरोचिषः ।।१।।
जपाकुसुम सङ्काशं रक्तबन्धूक सन्निभम् ।
रजः सत्त्वतमोरेखायोनिमण्डल मण्डितम् ।।२।

मध्ये तु तां महादेवीं सूर्यकोटिसमप्रभाम् ।
छिन्नमस्तां करे वामे धारयतीं स्वमस्तकम् ॥३॥
प्रसारितमुखीं देवीं लेलिहानाग्रजिह्विकाम् ।
पिबन्तीं रौधिरीं धारां निजकण्ठ विनिर्गताम् ॥४॥
विकीर्णं पाशाञ्च नानापुष्प समन्विताम् ।
दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमाला विभूषिताम् ॥५॥
दिगम्बरां महाघोरां प्रत्यालीढ पदेस्थिताम् ।
अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥६॥
रतिकामोपरिष्ठां च सदा ध्यायन्ति मन्त्रिणः ।
सदा षोडशवर्षीयां पीनोन्वत पयोधराम् ॥७॥
विपरीतरतासक्तौ ध्यायेद्रति मनोभवौ ।
डाकिनीवर्णिनी युक्ता वामदक्षिण योगतः ॥८॥
देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वंतीम् ।
वर्णिनीं लोहितां सौम्यां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥९॥
कपालकर्तृकाहस्तां वामदक्षिण योगतः ।
नागयज्ञोपवीताढ्यां ज्वलत्तेजोमयीमिव ॥१०॥
प्रत्यालीढपदां विद्यां नानालङ्कारभूषिताम् ।
सदा द्वादशवर्षीया मस्थिमाला बिभूषिताम् ॥११॥
डाकिनीं वामपार्श्वे तु कल्पसूर्यानलोपमाम् ।
विद्युज्जरां त्रिनयनां दन्तपंक्तिबलाकिनीम् ॥१२॥
दंष्ट्रा करालवदनां पीनोन्नतपयोधराम् ।
महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥१३॥
लेलिहानमहाजिह्वां मुण्डमाला विभूषिताम् ।
कपाल कर्तृकाहस्तां वामदक्षिण योगतः ॥१४॥
देवीं गलाच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् ।
करस्थित कपालेन भीषणेनातिभीषणाम् ॥१५॥
आभ्यां निषेवमाणां तां ध्यायेद्देवीं विचक्षणः ॥१६॥

उक्त प्रकार से ध्यान करके मानसोपचार से देवी का पूजन कर, तारा पूजन पद्धति क्रम* से अर्घ्यस्थापन कर, पीठ-पूजा करें।

पीठ-पूजा—

ॐ आधार शक्तये नमः।

ॐ प्रकृतये नमः।

ॐ कूर्माय नमः।

ॐ अनन्ताय नमः।

ॐ पृथिव्यै नमः।

ॐ क्षीर समुद्राय नमः।

ॐ रत्नद्वीपाय नमः।

ॐ कल्पवृक्षाय नमः।

ॐ स्वर्णसिंहासनाय नमः।

ॐ आनन्द कन्दाय नमः।

ॐ संवन्निलाय नमः।

ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः।

ॐ सं सत्त्वाय नमः।

ॐ रं रजसे नमः।

ॐ तं तमसे नमः।

ॐ आं आत्मने नमः।

ॐ अं अन्तरात्मने नमः।

ॐ पं परमात्मने नमः।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

मध्ये—ॐ रति कामाभ्यां नमः।

उक्त मन्त्रों से पीठ-पूजा कर, पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में आधार शक्ति से लेकर परतत्वान्त पीठ-देवताओं की स्थापना करके—

"ॐ आं आधार शक्त्यादिपरतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः।"

---

* देखें—हमारे द्वारा लिखित एवं सम्पादित 'तारा तन्त्र शास्त्र'।

इससे पूजा करके, पद्धति-मार्ग द्वारा अपने-अपने नामों से पूजा करके नव-पीठ शक्तियों की पूर्व आदि दिशाओं में क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करें—

पीठ शक्ति पूजा—

ॐ जयायै नमः ।

ॐ विजयायै नमः ।

ॐ अजितायै नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।

ॐ नित्यायै नमः ।

ॐ विलासित्यै नमः ।

ॐ दोग्ध्यै नमः ।

ॐ घोरायै नमः ।

मध्ये—ॐ मङ्गलायै नमः ।

इसके पश्चात्—

"ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ वज्र-वैरोचनीये ऐह्येहि नमः ।"

इस पीठ-मन्त्र से 'वर्णनी' एवं 'डाकिनी' सहित छिन्नमस्तादेवी को आसन देकर उनका पूजन करना चाहिए ।

'भैरव तन्त्र' के अनुसार—उक्त पीठ पर विधिवत् देवी का ध्यान करके, निम्नलिखित मन्त्र द्वारा आवाहन करना चाहिए—

"ॐ सर्वसिद्धि वर्णनीये सर्वसिद्धि डाकिनीये वज्रवैरोचनीये इह तिष्ठ-तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व ।"

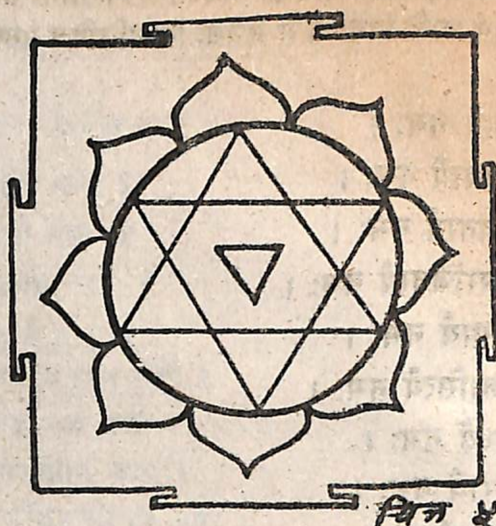
इस प्रकार आवाहन करके—

"ॐ वज्रवैरोचनीये देहि-देहि एहि-एहि गृह्ण-गृह्ण स्वाहा मम सिद्धि देहि-देहि ममशत्रून् मारय-मारय करालिके हुं फट् स्वाहा ।"

इस मन्त्र से देवी का विधिवत् पूजन करना चाहिए ।

आवरण-पूजा पद्धति—

छिन्नमस्ता की पूजा के लिए त्रिकोण, षट्कोण, अष्ठदल एवं भूपुर वाला यन्त्र बनाना चाहिए । यन्त्र का स्वरूप अग्र पृष्ठ पर प्रदर्शित है—



(छिन्नमस्ता पूजन मन्त्र)

यन्त्र पर वाह्य आवरण से प्रारम्भ कर, प्रतिलोभ क्रम से पूजन करना चाहिए। भूपुर के वाह्य भाग में वज्र आदि आयुधों का उसके भीतर इनु आदि दिक्पालों का, भूपुर के चारों द्वारों पर द्वारपालों का तथा अष्टदल में आठ शक्तियों की पूजन करना चाहिए। त्रिकोण में छिन्नमस्ता देवी तथा उसके दोनों ओर डाकिनी एवं वर्णिनी नामक दोनों सखियों का प्रणव तथा वाग्बीज सहित नाम-मन्त्रों से पूजन करना चाहिए।

आवरण पूजा की विधि निम्नानुसार है—

आवरण-पूजा वाह्य आवरण से प्रारम्भ क, रप्रतिलोम क्रम से करनी चाहिए। यथा—

भूपुर के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में—

ॐ वज्राय नमः।

ॐ शक्तये नमः।

ॐ दण्डाय नमः।

ॐ खड्गाय नमः।

ॐ पाशाय नमः।

ॐ अंकुशाय नमः।

ॐ गदायै नमः।

ॐ शूलाय नमः ।

ॐ पद्माय नमः ।

ॐ चक्राय नमः ।

उक्त मन्त्रों से वज्र आदि आयुधों का पूजन करने के बाद हाथ में पुष्पांजलि लेकर—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथावरणार्चनम् ॥"

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर, विशेष अर्घ्य से जल बिन्दु डालकर—'पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहें ।

(इति प्रथमवरणं)

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्व आदि दिशाओं में—

ॐ लं इन्द्राय नमः ।

ॐ रं अग्नये नमः ।

ॐ मं यमाये नमः ।

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ।

ॐ वं वरुणाय नमः ।

ॐ यं वायवे नमः ।

ॐ कुं कुबेराय नमः ।

ॐ हं ईशानाय नमः ।

ॐ आं ब्रह्मणे नमः ।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ।

उक्त मन्त्रों से दश दिक्पालों का पूजन करके, पुष्पांजलि हाथ में लेकर—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥"

यह पढ़कर, पुष्पांजलि देकर, विशेष अर्घ्य से जल—बिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे ।

(इति द्वितीयावरणं)

इसके बाद भूपुर के द्वारों पर चारों दिशाओं में पूर्वादि क्रम से—

ॐ करालाय नमः ।

कराल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विकरालाय नमः ।

विकराल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अतिकरालाय नमः ।

अतिकराल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ महाकालाय नमः ।

महाकाल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों से द्वारपालों की पूजा कर, पुष्पांजलि हाथ में लेकर—

"ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥"

यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर, विशेष अर्घ्य से जल-बिन्दु डालकर "पूजिता-स्तर्पितास्सन्तु"—यह कहें ।

(इति तृतीयावरणं)

इसके बाद अष्टदलों में पूज्या तथा पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान-कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से अष्ट शक्तियों का पूजन करें—

ॐ एकलिङ्गायै नमः ।

एकलिङ्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ योगिन्यै नमः ।

योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ डाकिन्यै नमः ।

डाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भैरव्यै नमः ।

भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ महाभैरव्यै नमः ।

महाभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः ।

इन्द्राक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ असितांग्यै नमः ।

असितांगी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ संहारिण्यै नमः ।

संहारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों से अष्ट शक्तियों का पूजन करके, पुष्पाञ्जलि हाथ में लेकर—

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।"

यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर, विशेष अर्घ्य से जल-बिन्दु डालकर **"पूजितास्तर्पितास्सन्तु"**—यह कहें ।

(इति चतुर्थावरणं)

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेय आदि चारों दिशाओं तथा मध्य दिशाओं में—

ॐ आं खड्गाय ह्रीं ह्रीं फट् हृदयाय नमः स्वाहा ।

हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ईं सुखड्गाय ह्रीं ह्रीं फट् शिरसे स्वाहा ।

शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऊं वज्राय ह्रीं ह्रीं फट् शिखायै वषट् स्वाहा ।

शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं पाशाय ह्रीं ह्रीं फट् कवचाय हुं स्वाहा ।

कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ औं अंकुशाय ह्रीं ह्रीं फट् नेत्रत्रयाय वौषट स्वाहा ।

नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अः वसु रक्ष-रक्ष ह्रीं ह्रीं फट् अस्त्राय फट् स्वाहा ।

अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों से हृदयादि षडङ्गों की पूजा कर, पुष्पांजलि हाथ में लेकर—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥"

(इति पञ्चमावरणं)

इसके पश्चात् त्रिकोण में—

मध्य में—

ॐ ऐं छिन्नमस्तायै नमः ।

छिन्नमस्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

देवी के दक्षिण भाग में—

ॐ ऐं डाकिन्यै नमः ।

डाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

देवी के वाम भाग में—

ॐ ऐं वर्णिन्यै नमः ।

वर्णिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त प्रकार से आवरण-पूजा कर, धूपदान से नमस्कार पर्यन्त पूजा करके—

"ॐ सर्वसिद्धि प्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये वज्रवैरोचनीये एह्येहि इमं बलि गृह्ण-गृह्ण मम सिद्धि देहि ह्रीं फट् स्वाहा ।"

इस मन्त्र से मछली तथा मांस आदि से अर्धरात्रि के समय बलिदेकर मन्त्र-जप करना चाहिए ।

पुरश्चरण—

इस मन्त्र का पुरश्चरण चार लाख (४,००,०००) जप है। पलाश अथवा बेल के फूलों अथवा फलों से जप का दशांश होम करना चाहिए । होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए ।

काम्य-प्रयोग—

१. बेल के फूलों से हवन करने पर लक्ष्मी प्राप्त होती है। बेल के फलों से हवन करने पर अभीष्ट-सिद्धि होती है ।

२. मालती के फूलों से होम करने पर वाक्सिद्धि तथा चम्पा के फूलों से होम करने पर सुख का लाभ होता है ।

३. जो मनुष्य घृत-सिक्त छाग-मांस (बकरे का मांस) से निरन्तर एकमास तक नित्य १०० आहुतियाँ देता है, सभी राजा उसके वशीभूत हो जाते हैं।

४. सफेद कनेर के फूलों की एक लाख आहुतियाँ देने वाला रोग-मुक्त रहते हुए १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

५. लाल कनेर के फूलों की एक लाख आहुतियाँ देने से मन्त्री तथा राजा वश में हो जाते हैं।

६. उदुम्बर तथा पलाश के फलों का होम करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

७. सियार के मांस का होम करने से भी लक्ष्मी प्राप्त होती है।

८. वायस एवं अन्न के होम से कवित्व-शक्ति मिलती है।

९. बन्धूक-पुष्पों के होम से भाग्य-वृद्धि होती है।

१०. तिल एवं चावलों के होम से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

११. स्त्री के रज के होम से आकर्षण, मृग के मांस के होम से मोहन, महिष (भैंसा) के मांस के होम से स्तम्भन तथा घृत सहित कमलपुष्पों के होम से भी स्तम्भन शक्ति प्राप्त होती है।

१२. कनेर पुष्पों के होम से अभीष्ट सिद्धि होती है।

१३. चिता की अग्नि में कोयल के पंखों से होम करने पर शत्रु की मृत्यु होती है।

१४. धतूरे की लकड़ी से प्रदीप्त अग्नि में कौए के पंखों से होम करने से भी शत्रु की मृत्यु होती है।

१५. धूत-क्रीड़ा के समय, जंगल तथा राजद्वार में, युद्ध-क्षेत्र में तथा शत्रु-संकट के समय देवी का ध्यान करते हुए मन्त्र का जप करने से विजय प्राप्त होती है।

१६. भुक्ति तथा मुक्ति के लिए श्वेतवर्ण वाली देवी का, उच्चारन के लिए नील वर्ण वाली देवी का, वशीकरण के लिए रक्त वर्ण वाली देवी का, मारण के लिए धूम्रवर्ण वाली देवी का तथा स्तम्भन के लिए स्वर्ण वर्ण वाली देवी का ध्यान करना चाहिए।

१७. देवी की सिद्धि के लिए रात्रि के समय मदिरा आदि से बलि देनी चाहिए।

गोपनीय-प्रयोग—

एक सर्व सिद्धिदायक तथा अत्यन्त गोपनीय प्रयोग इस प्रकार है—

"कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की मध्य रात्रि में घनघोर अन्धकार में स्नान कर, लाल वस्त्र तथा लाल माला पहिनकर एवं लाल चन्दन लगाकर छिन्नमस्ता स्वरूपिणी स्त्री को लाकर उसका पूजन करें। वह स्त्री नवयुवती, सुन्दरी, नर-पंचक-गामिनी, हँस मुख तथा खुले केशों वाली हो। पहले उसे आभूषण आदि

देकर प्रसन्न करें, फिर उसे वस्त्रहीन करके, उसका पूजन करके १०,००० (दस-हजार) की संख्या में मन्त्र-जप करें। फिर बलि देकर उसके साथ रात्रि बिताकर धन आदि से सन्तुष्ट करके वापिस भेज दें तथा दूसरे दिन प्रातःकाल देवता की भावना से ब्राह्मणों को विविध प्रकार के भोजन करायें।

उक्त विधि से प्रयोग करने वाले साधक को लक्ष्मी, पुत्र, पौत्र, यश, सुख, नारी, आयु, धर्म तथा अन्य अभीष्ट कामनाओं की उपलब्धि होती है।

विद्याभिलाषी साधक को, उस रात्रि व्रत रखना चाहिए। अन्य प्रकार के फल की इच्छा रखने वाले मान्त्रिक (साधक) को मन्त्र-जप करते हुए उस स्त्री के साथ गमन करना चाहिए।

[**आवश्यक ज्ञातव्य**—उक्त प्रयोग करने का अधिकार सामान्य जन को नहीं है। सिद्ध विद्या वाले गुरु से दीक्षा प्राप्त कर एवं प्रयोग-रहस्य को जानने के बाद ही इसे करना चाहिए, अन्यथा अज्ञानता के फलस्वरूप विपरीत-फल भी मिल सकता है।]

उक्त विद्या की जानकारी मात्र से ही शास्त्र ज्ञान, पाप-क्षय तथा सभी सुखों की उपलब्धि होती है।

उषःकाल में निद्रा त्यागकर, शय्या पर बैठे हुए नित्य १०० बार इस मन्त्र का जप करना चाहिए। ऐसा निरन्तर करते रहने वाला साधक ६ मास के भीतर ही श्रेष्ठ कवित्वशक्ति प्राप्त कर, कवियों का सिरमौर बन जाता है।

उत्कीलन-विधि—

यह विद्या भगवान् शिव के द्वारा कीलित है, अतः इसकी उत्कीलन-विधि का उल्लेख किया जाता है—

मन्त्र का जप करने से पहले तथा बाद में प्रणव सम्पुटित माया बीज '**ॐ ह्रीं** ॐ'—का १०८ बार जप करने से यह विद्या सिद्धिदायक हो जाती है।

यह विद्या कलियुग में शीघ्र ही अभीष्ट सिद्धि देने वाली है। सिद्धि की कामना रखने वाले मान्त्रिक को यह विधि निश्चित रूप से गुप्त रखनी चाहिए।

३ | श्री छिन्नमस्ता नित्यार्चन विधि

भगवती छिन्नमस्ता के नित्यार्चन की विधि इस प्रकार है। स्मरणीय है कि सर्वप्रथम वैदिक-कृत्य करने के बाद ही तान्त्रिक-कर्म करने चाहिए। यह नियम सर्वत्र लागू होता है।

प्रातःकृत्य विधि

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर दोनों हाथ तथा पाँवों को धोकर, सर्वप्रथम अपने शिरस्थ सहस्रदलकमल में विराजमान श्रीगुरुदेव के स्वरूप का निम्नानुसार ध्यान करें—

गुरु-ध्यान मन्त्र

"श्वेतवर्णं द्विभुजं वराभयकरं श्वेतमाल्यानुलेपनं, स्वप्रकाशरूपं स्ववामस्थितयारक्तशक्त्या सहितं गुरुं।"

फिर मानस-पंचोपचारों से गुरुदेव का पूजन करके, निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए उन्हें नमस्कार करें—

गुरु-नमस्कार मन्त्र

"ॐ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशल्यकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्साक्षात् महेश्वरः।
गुरवो हि परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इसके बाद अपने शरीर के मूलाधार में निम्नानुसार 'परदेवता' का ध्यान करें—

परदेवता ध्यान-मन्त्र

"छिन्नमस्तां महाविद्यामक्षरात्म स्वरूपिणीम् ।
विद्युदग्निसमुद्भूतां प्रसुप्तभुजगीतनुम् ।।
कुण्डलीरूपसंयुक्तां नानातत्त्वसमन्विताम् ।
त्रिवलीवलयोपेतां नानास्थानकृतां शुभाम् ।।

उक्त प्रकार से ध्यान करके १००८, १०८ अथवा केवल ८ बार मन्त्र का जप करें।

इसके बाद शौचादि से निपट कर स्नान करें। इस हेतु लालचन्दन एवं दूर्वा युक्त ताम्रपात्र लेकर पहले निम्नानुसार संकल्प करें—

सङ्कल्प

"ॐ तत्सत् अद्य मासाणां मासोत्तमे (अमुक)···मासे, (अमुक) तिथौ, (अमुक)···वासरे (अमुकनाम)······शर्मा/गुप्त दासोऽहं श्रीछिन्नमस्ता देव्याः प्रीतये स्नानमहं करिष्ये।"

स्नान-विधि

उक्त प्रकार से सङ्कल्प छोड़कर प्राणायाम तथा षडङ्गन्यास करें। फिर स्नानीय-जल में—

"ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।"

उक्त मन्त्र से 'अकुंशमुद्रा'+ सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन कर, 'वं' से 'धेनुमुद्रा' द्वारा उसका अमृतीकरण, 'हूं' से उसका अवगुण्ठन तथा 'फट्' से उसका संरक्षण करें।

फिर मूलमन्त्र द्वारा उसे ११ बार अभिमन्त्रित करके, सूर्य को बारह अंजलियाँ देकर, उस जल को इष्ट देवता के चरणों से निकला हुआ मानकर, उसमें स्नान करें। तत्पश्चात् पुनः देवता का ध्यान कर, मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करें तथा मूलमन्त्र द्वारा तीन बार अभिमन्त्रित जल को 'कलश मुद्रा' द्वारा अपने मस्तक पर डालें।

+ मुद्राओं के सम्बन्ध में सचित्र जानकारी प्राप्त करने हेतु हमारी पुस्तक 'मुद्रा-विज्ञान' का अध्ययन करें।

संध्योपासन

इसके बाद 'सन्ध्योपासन' करें।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से तीन बार आचमन करें—

"ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।
ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा॥"

फिर—

"ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥"

उक्त मन्त्र से पूर्ववत् तीर्थों का आवाहन कर, मूलमन्त्र से कुशाग्रभाग द्वारा तीन बार भूमि पर जल छिड़ककर, उस जल से आठबार अपने मूर्द्धा का अभिसिंचन करें।

फिर, 'षडङ्गन्यास' कर, बाँयें हाथ में जल लें तथा उसे दायें हाथ से ढक कर उसे 'हं यं रं लं वं' से तीन बार अभिमन्त्रित करें। तत्पश्चात् मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए टपकते हुए जल-बिन्दुओं से 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा अपने सिर पर सात बार अभ्युक्षण करें तथा शेष जल को दाँयें हाथ में लेकर तेजोरूप में ध्यान करें। तदुपरान्त उसे इडा से आकृष्ट कर, शरीरस्थ कृष्णवर्ण-पाप को उससे धो डालें तथा उस जल को पापरूप ध्यान करते हुए पिङ्गला से निकाल कर, अपने सम्मुख कल्पित वज्रशिला पर 'फट्' द्वारा उस पापरूप जल को पटक दें।

अर्घ्य-तर्पण-ध्यान

फिर हाथ-पाँव धो, आचमन कर—

'ॐ घृणिः सूर्य आदित्याय इदमर्घ्यं स्वाहा'

इस मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दें तथा सूर्यमण्डल में देवी का ध्यान करते हुए उन्हें नमस्कार करें। यथा—

'ॐ सूर्य मण्डलस्थायै श्रीछिन्नमस्तायै नमः।'

इसके बाद 'छिन्नमस्ता-गायत्री' (इसे आगे लिखा गया है) का उच्चारण करते हुए तीनबार जल छोड़कर तर्पण करें। फिर—

ॐ देवान तर्पयामि नमः।
ॐ ऋषीन् तर्पयामि नमः।

ॐ पितॄन् तर्पयामि नमः ।

ॐ गुरुं तर्पयामि नमः ।

ॐ परमगुरुं तर्पयामि नमः ।

ॐ परापरगुरुं तर्पयामि नमः ।

ॐ परमेष्ठिगुरुं तर्पयामि नमः ।

तथा मूलमन्त्र से—

ॐ छिन्नमस्ता देवीं तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों से तीन-तीन बार तर्पण करें । फिर—

"ॐ छिन्नमस्तावरणदेवतास्तर्पयामिनमः ।"

से आवरण-देवताओं का तर्पण करें ।

इसके बाद स्वच्छ शुष्क वस्त्र पहिनकर—

"ॐ ह्रां ह्रूं सः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाशशक्ति सहिताय इदमर्घ्यं स्वाहा ।"

उक्त मन्त्र से सूर्य को पुनः अर्घ्य देकर, पहले सूर्य मण्डल में गायत्री का ध्यान करें । यथा—

"मध्याह्ने श्यामवर्णां चतुर्भुजां शङ्खचक्रलसत्करां ।
गदापद्मधरां देवीं सूर्यासनकृताश्रयाम् ।।"

उक्त विधि से ध्यान करने के बाद निम्नलिखित 'छिन्नमस्ता-गायत्री' मन्त्र का १०८ बार जप करें—

छिन्नमस्ता-गायत्री

"ॐ वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।"

इसके बाद सूर्य-मण्डल स्थित देवी को मानसिक-प्रणाम कर, वरुणादेव को नमस्कार करके गृह को प्रस्थान करें ।

नित्यार्चन-विधि

भली-भाँति शुद्ध होकर तथा स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूजा-गृह के द्वार पर जाकर सर्वप्रथम 'सामान्यार्घ्य स्थापित करें । यथा—

'मूलं फट्' से सामान्यार्घ्य-पात्र का संशोधन कर, उसे वृत्तयुक्त त्रिकोण पर स्थापित करें । फिर 'मूलं वं' द्वारा उसे शुद्ध जल से भरकर,

"ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु ॥"

इस मन्त्र द्वारा पूर्ववत् सूर्यमण्डल से 'अंकुश मुद्रा' द्वारा उस जल में तीर्थों का आवाहन करें। फिर "ॐ" से उस जल में पुष्प, अक्षत एवं चन्दन छोड़कर 'धेनुमुद्रा' द्वारा उसका अमृतीकरण कर, उसके ऊपर 'ॐ' का दस बार जप करें। फिर उस जल द्वारा 'फट्' से पूजा गृह के द्वार का अभिसिंचत कर, द्वार-पूजा आरम्भ करें।

द्वार-पूजा

द्वार के ऊर्ध्वभाग के मध्य में—
"ॐ गं गणपतये नमः।"
द्वार के दाँई ओर—
"श्रीं लक्ष्म्यै नमः।"
द्वार के बाँई ओर—
"ऐं सरस्वत्यै नमः।"
से पूजा करके, द्वार की दाँई शाखा में—
"गं गणपतये नमः।"
बाँई शाखा में
"क्षं क्षेत्रपालाय नमः।"
क्षेत्रपाल के एक बगल में—
"ॐ धात्रे नमः।"
क्षेत्रपाल के दूसरी बगल में—
"ॐ विद्यात्रे नमः।"
उक्त मन्त्रों से पूजा कर, द्वार की देहली में—
"ॐ शंख निधये नमः।
ॐ पद्मनिधये नमः।"
इन मन्त्रों से पूजन करें।

पूजा-गृहादि-शोधन

उक्त विधि से द्वार-पूजाकर, बाँयें अङ्ग का संकोचन करते हुए तथा बाँयें पाँव को आगे बढ़ाकर पूजा-मण्डप में प्रवेश करें। वहाँ 'अस्त्राय फट्' का उच्चारण कर क्षेत्रपालों को मानसिक प्रणाम करके (१) ब्रह्मा, (२) अनन्त, (३) आधार

शक्ति, (४) मणिवेदी, (५) स्वर्ण सिंहासन, (६) अष्ट शक्ति, (७) अनन्दकन्द, (८) सविन्नाल, (९) प्रकृतिपात्र, (१०) विकारमयकेशर, (११) सर्वतत्वात्मक पत्र, (१२) कमल, (१३) सत्व, (१४) रज, (१५) तम, (१६) सूर्यबिम्ब, (१७) चन्द्र बिम्ब, (१८) पञ्चाशद्बीजमयर्कणिका, (१९ आत्मा, (२०) परमात्मा तथा (२१) अन्तरात्मा को प्रणाम करें।

फिर जल द्वारा 'हुँ' से अपने चारों ओर घेरा बनाकर, स्वयं को वेष्टित करे। फिर 'अस्त्राय फट्' से तीन बार ताली बजाकर, सभी विघ्नों को दूरकर, मण्डप के नैर्ऋत्यकोण में

"ॐ ब्रह्मणे नमः।"

"ॐ वास्तु पुरुषाय नमः।"

इन मन्त्रों से पूजन कर, आसन स्थापित करें। फिर आसन पर—

"आधार शक्तये नमः।

मूल प्रकृत्यै नमः।

कूर्माय नमः।

अनन्ताय नमः।

ॐ पृथिव्यै नमः।"

उक्त मन्त्रों से पूजा कर के निम्नलिखित विनियोग-वाक्य पढ़ें—

"आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतले छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।"

फिर

"शिरसि मेरुपृष्ठ ऋषये नमः।

मुखे सुतलं छन्दसे नमः।

हृदि कूर्म देवतायै नमः।"

उक्त मन्त्रों से 'न्यास' करें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर निम्नानुसार प्रार्थना करें—

"ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥"

उक्त विधि से आसन का पूजन करने के बाद उस पर बैठे। फिर अपने बाँई ओर "गुरुवे नमः"; दाँई ओर 'गणेशाय नमः' पीछे की ओर 'क्षेत्रपालाय नमः' तथा सामने 'रति कामोपविष्टा-छिन्नमस्तायै नमः' से प्रणाम कर 'हुँ फट्' से गन्ध-

पुष्प को ले, उसे मसलते हुए अपने दोनों हाथों का संशोधन करके, उस पुष्प को 'नाराच मुद्रा' द्वारा ईशान दिशा में फेंक दें। फिर, ऊपर की ओर तीन बार ताली बजाकर 'घोटिका मुद्रा' द्वारा अपने सिर से चारों ओर दस बार चुटकी बजाते हुए 'दिग्बन्धन' करें। फिर 'रं' बीज का उच्चारण कर, अपने चारों ओर जल की धारागिरा कर, अग्नि-प्राकार की कल्पना करें।

इसके पश्चात् 'भूत-शुद्धि' करनी चाहिए।

भूत-शुद्धि

अपनी गोद में अपने दोनों हाथों को ऊर्ध्वमुख रखकर, अपने हृदय-स्थित प्रदीप कलिकाकार 'हंस' स्वरूप अपने जीवात्मा को मूलाधार स्थित कुण्डलिनी के साथ सुषुम्ना-मार्ग से मूलाधार-स्वाधिष्ठान-मणिपूरक-अनाहत-विशुद्ध-आज्ञा इन षट्चक्रों का भेदन करते हुए शिर में स्थित अधोमुख सहस्रदल-कमल की कर्णिका में विद्यमान परमात्मा से संयुक्त कर यह भावना करें कि वहीं पर पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, नासिका, जिह्वा, चक्षु, त्वक्, श्रोत्र; वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ, प्रकृति, मन, बुद्धि और अहङ्कार—ये चौबीसों तत्त्व लीन हो गये हैं।

फिर अपने बाँये नासापुट में धूम्रवर्ण वायु-बीज 'यं' की कल्पना कर, उसका १६ बार जप करते हुए, वायु से स्वदेह को पूर्ण कर, दोनों नासापुटों को बन्द कर, 'यं' का चौंसठ बार जप करते हुए, 'कुम्भक' करके, अपनी बाँई कोख में निम्नानुसार 'पाप-पुरुष' का ध्यान करें—

"वाम कुक्षिस्थितं पाप पुरुषं कृष्णवर्णकम्।
ब्रह्महत्याशिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुजद्वयम्॥
सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कटिद्वयम्।
तत्संसर्ग पदद्वन्द्व मङ्ग प्रत्यङ्ग पातकम्॥
उपपात करोमाणं रक्तश्मश्रु विलोचनम्।
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं पापरूप भयङ्करम्॥"

उक्त प्रकार से पाप-पुरुष सहित अपनी देह का शोषण कर, बत्तीस बार 'यं' का जप करते हुए दाँये नासा-पुट से वायु को निकाल दें। फिर दाँये नासा-पुट में रक्तवर्ण वाले वंहिन-बीज 'रं' का चिन्तनकर, उसका १६ बार जप करते हुए 'कुम्भक' करें तथा बाँई कोख में स्थित पाप-पुरुष सहित अपनी देह को दग्ध कर, पाप-पुरुप और स्वदेह की भस्म सहित वायु को बाहर निकाल दें।

इसके उपरान्त शुक्लवर्ण के चन्द्रबीज 'वं' का बाँये नासा-पुट में ध्यान कर, उसे १६ बार जपते हुए पूरक-क्रिया द्वारा ललाट में चन्द्रमा को ले जाकर

कुम्भक-क्रिया में वरुण-बीज 'वं' का ६४ बार जप करते हुए ललाट के चन्द्रमा से गिरते हुए मातृकावर्णात्मक अमृत से अपनी सम्पूर्ण देह की रचनाकर, पृथ्वी-बीज 'लं' का ३२ बार जप करके, अपनी उक्त देह को दृढ़ समझते हुए दाँये नासा-पुट से वायु का रेचन करें।

प्राण-प्रतिष्ठा

पूर्वोक्त विधि से देह का संशोधन करके अपने हृदयपर हाथ रखकर निम्नलिखित मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा करें—

"ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोऽहं मम प्राणा इह प्राणा।"

"ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोऽहं मम जीव इह स्थित:।"

"ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोऽहं मम सर्वेन्द्रियाणि।"

"ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं हौं सोऽहं मम वाङ्‌मनस्त्वक्-चक्षु: श्रोत्र घ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।"

उक्त विधि से प्राण-प्रतिष्ठा करने के बाद 'सोऽहं' मन्त्र से सुषुम्णा-मार्ग द्वारा अपने जीव को, तत्वों को और कुण्डलिनी को अपने-अपने स्थानों में पहुँचा कर स्थापित करें।

बहिर्मातृका न्यास

इसके बाद 'बहिर्मातृका न्यास' करें। उसमें सर्वप्रथम निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े—

"अस्य श्री बहिर्मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि:, गायत्रीछन्द:, श्री मातृका सरस्वती देवता, हश्रो बीजानि, स्वरा: शक्तयोऽव्यक्तं कीलकं, देह शुद्धि सिध्यर्थे विनियोग:।"

इसके अनन्तर निम्नानुसार 'न्यास' करें—

ऋष्यादि न्यास:

ॐ ब्रह्मणे नम: शिरसि।

ॐ गायत्री छन्दसे नम: मुखे।

ॐ मातृका सरस्वती देवतायै नम: हृदि।

ॐ हलभ्यो नम: गुह्ये।

ॐ स्वरेभ्यो नमः पादयोः ।
ॐ अव्यक्त कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास:

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट् ।
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं ।
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादिन्यास करके, पहले 'अन्तर्मातृका न्यास' करें । यथा—

अन्तर्मातृका न्यासः

कंठे धूम्रवर्णे षोडशदले विशुद्धे

ॐ अं नमः ।
ॐ आं नमः ।
ॐ इं नमः ।
ॐ ईं नमः ।
ॐ उं नमः ।
ॐ ऊं नमः
ॐ ऋं नमः ।
ॐ ॠं नमः ।
ॐ ऌं नमः ।
ॐ ॡं नमः ।
ॐ एं नमः ।
ॐ ऐं नमः ।
ॐ ओं नमः ।
ॐ औं नमः ।

ॐ अं नमः ।

ॐ अः नमः ।

हृदये रक्तवर्णे द्वादशदले अनाहते

ॐ कं नमः ।

ॐ खं नमः ।

ॐ गं नमः ।

ॐ घं नमः ।

ॐ ङं नमः ।

ॐ चं नमः ।

ॐ छं नमः ।

ॐ जं नमः ।

ॐ झं नमः ।

ॐ ञं नमः ।

ॐ टं नमः ।

ॐ ठं नमः ।

नाभौ मेघवर्णे दशदले मणिशे

ॐ डं नमः ।

ॐ ढं नमः ।

ॐ णं नमः ।

ॐ तं नमः ।

ॐ थं नमः ।

ॐ दं नमः ।

ॐ धं नमः ।

ॐ नं नमः ।

ॐ पं नमः ।

ॐ फं नमः ।

लिङ्गमूले विद्युद्वर्णे षट्दले स्वाधिष्ठाने

ॐ बं नमः ।

ॐ भं नमः ।

ॐ मं नमः ।

ॐ यं नमः ।

ॐ रं नमः ।

ॐ लं नमः ।

सुवर्णवर्णे चतुर्दले मूलाधारे

ॐ वं नमः ।

ॐ शं नमः ।

ॐ षं नमः ।

ॐ सं नमः ।

भ्रूमध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञा चक्रे

ॐ हं नमः ।

ॐ क्षं नमः ।

इसके पश्चात् बाहरी अङ्गों में मातृका वर्णों का न्यास करें। सर्वप्रथम बाह्यमातृका सरस्वती का निम्नानुसार ध्यान करें—

"पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तिमुखदोः पन्मध्यवक्षस्थलां,

भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥

मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै-

र्बिभ्राणां विशदप्रभांत्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त निम्नानुसार न्यास करें—

ॐ अं नमः शिरसि ।

ॐ आं नमः मुखवृत्ते ।

ॐ इं नमः दक्षनेत्रे ।

ॐ ईं नमः वामनेत्रे ।

ॐ उं नमः दक्षकर्णे ।

ॐ ऊं नमः वामकर्णे ।
ॐ ऋं नमः दक्षनासायाम् ।
ॐ ॠं नमः वामनासायाम् ।
ॐ लृं नमः दक्ष गण्डे ।
ॐ लॄं नमः वाम गण्डे ।
ॐ एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे ।
ॐ ऐं नमः अधो ओष्ठे ।
ॐ ओं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ।
ॐ औं नमः अधो दन्तपंक्तौ ।
ॐ अं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।
ॐ अः नमः मुखे ।
ॐ कं नमः दक्ष बाहुमूले ।
ॐ खं नमः दक्ष कूर्परे ।
ॐ गं नमः दक्षमणिबन्धे ।
ॐ घं नमः दक्ष अंगुलिमूले ।
ॐ ङं नमः दक्ष कराग्रे ।
ॐ चं नमः वाम बाहुमूले ।
ॐ छं नमः वाम कूर्परे ।
ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे ।
ॐ झं नमः वाम अंगुलिमूले ।
ॐ ञं नमः वाम कराग्रे ।
ॐ टं नमः दक्षोरुमूले ।
ॐ ठं नमः दक्ष जानुनि ।
ॐ डं नमः गुल्फे ।
ॐ ढं नमः दक्षपादतले ।
ॐ णं नमः दक्ष पादाग्रे ।

ॐ तं नमः वामोरुमूले ।

ॐ थं नमः वाम जानुनि ।

ॐ दं नमः वाम गुल्फे ।

ॐ धं नमः वाम पादतले ।

ॐ नं नमः वाम पादाग्रे ।

ॐ पं नमः दक्ष पार्श्वे ।

ॐ फं नमः वाम पार्श्वे ।

ॐ बं नमः पृष्ठे ।

ॐ भं नमः नाभौ ।

ॐ मं नमः जण्रे ।

ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ।

ॐ रं नमः दक्षांशे ।

ॐ लं नमः ककुदि ।

ॐ वं नमः वामांशे ।

ॐ शं नमः हृदादि दक्ष करांगुल्यन्तम् ।

ॐ षं नमः हृदादि वाम करांगुल्यन्तम् ।

ॐ सं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम् ।

ॐ ळं नमः हृदादि कुक्षौ ।

ॐ क्षं नमः हृदादि मुखे ।

इसके पश्चात् मूल-मन्त्र का एक बार जप करते हुए 'पूरक', चार बार जप करते हुए 'कुम्भक' तथा दो बार जप करते हुए 'रेचक' करे। इसी प्रकार तीन बार उलट-पुलट कर तीन बार प्राणायाम करें—

फिर—

'श्रीं ह्रीं हूं'—इस मन्त्र से तीन बार आचमन कर, 'ऐं' से ओष्ठ तथा अधर का स्पर्श करें। 'ह्रीं ह्रीं' से भी दो बार स्पर्श करें तथा 'हूं' से दोनों हाथों को धोकर निम्नानुसार 'बीजन्यास' करें—

बीज न्यास :

श्रीं मुखे ।

ह्रीं दक्षनासापुटे ।

हूं वामनासापुटे ।

ऐं दक्षनेत्रे ।

क्लीं वाम नेत्रे ।

श्रीं ह्रीं क्लीं दक्षकर्णे ।

ऐं वामकर्णे ।

इं नाभौ ।

क्रों हृदये ।

क्रौं शिरसि ।

उक्त विधि से न्यास करने के पश्चात् पूजा आरम्भ करें ।

इष्ट-पूजा

अपने बाँई ओर जलपात्र, दाँई ओर पुष्पादि, पूजा-सामग्री तथा सम्मुख दीपकादि स्थापित करें ।

फिर अपनी बाँई ओर—

"गुं गुरुभ्यो नमः ।"

से गुरुओं को, दाँई ओर—

"गं गणपतये नमः ।"

से गणेश को तथा सम्मुख—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः ।"

से इष्ट देवता को नमस्कार करें ।

विनियोग :

"ॐ अस्य श्री छिन्नमस्ता मन्त्रस्य क्रोध भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, श्री छिन्नमस्तादेवता, हूं हूं बीजं* स्वाहा शक्तिः, इष्टसिद्धयै विनियोगः ।"

---

* 'मन्त्र महोदधि' में 'ह्रीं ह्रीं' बीज का उल्लेख है ।

इसके बाद निम्नलिखित न्यास करें—

ऋष्यादि न्यास :

शिरसि क्रोध भैरवाय ऋषये नमः ।

मुखे सम्राट् छन्दसे नमः ।

हृदि श्री छिन्नमस्तायै देवतायै नमः ।

गुह्ये हूं हूं बीजाय नमः ।

पादयोः स्वाहा शक्तये नमः ।

इष्टसिद्धिविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कर न्यास :

ॐ आं खड्गाय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां ।

ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा अनामिकाभ्यां ।

ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां ।

ॐ ऐं पाशाय स्वाहा तर्जनीभ्यां ।

ॐ औं अंकुशाय स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां ।

ॐ अः सुरक्षा रक्ष असुरक्षाय स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

[टिप्पणी—'मन्त्र महोदधि' में इस न्यास का प्रारम्भ अंगुष्ठ से किया गया है ।]

षडङ्गन्यास :

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा ।

ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा स्वाहा ।

ॐ ऊं वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा ।

ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा ।

ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ।

ॐ अः सुरक्षा रक्ष असुरक्षाय अस्त्राय फट् स्वाहा ।

[टिप्पणी—'मन्त्र महोदधि' में "सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रों अस्त्राय फट्" लिखा है ।]

षोढान्यास :

(१) श्रीं ऐं क्लीं सौं श्रीं ह्लीं क्लीं ऐं हौं ।

(२) ओं क्रीं स्त्रीं क्रों ।

(३) ईं हुं फट् ।

(४) श्रीं क्लीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ।

(५) श्री ह्लीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये श्री ह्लीं ऐं फट् स्वाहा ।

(६) श्रीं ऐं क्लीं सौं श्रीं ह्लीं क्लीं ऐं हौं ओं श्रीं क्लीं हुं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ।

उपर्युक्त ६ मन्त्रों से प्रत्येक को मातृका से अन्तरित कर, मातृकावत् सभी मातृका-स्थानों में न्यास करें । यथा—

"श्रीं ऐं क्लीं सौं श्रीं ह्लीं क्लीं ऐं हौं ॐ अं नमः शिरसि ।"

इसी भाँति छहों मन्त्रों से न्यास करना चाहिए ।

व्यापक न्यास

मूलमन्त्र द्वारा मस्तक से पाँव तक तथा पाँव से मस्तक तक न्यास करके, पुनः प्रणव द्वारा तीन बार व्यापक न्यास करना चाहिए ।

फिर अन्तर्यजन करें । यथा—सर्वप्रथम इष्टदेवता का निम्नानुसार ध्यान करें—

"अन्तरस्वशरीरस्य नाभिनीरज संस्थिताम् ।
निर्लेपां त्रिगुणां सौम्यां बालचन्द्रसमप्रभाम् ।।
समाधिमात्रगम्यां च गुणत्रय समन्विताम् ।
कलातीतां गुणातीतां भुक्तिमुक्तिप्रदां स्मरेत् ।।"

उक्त विधि से ध्यान करने के उपरान्त निम्नानुसार मानसोपचार-पूजा करें—

मानसोपचार-पूजा

मुद्रा-प्रदर्शन

"लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीछिन्नमस्ता पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि ।"

उक्त मन्त्र पढ़कर, अधोमुख कनिष्ठाङ्गुष्ठ से 'गन्ध-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

"हं आकाशत्मकं पुष्पं श्रीछिन्नमस्तापादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।"

उक्त मन्त्र पढ़कर, अधोमुख तर्जनी अङ्गुष्ट से 'पुष्प-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

"यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीछिन्नमस्तापादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।"

उक्त मन्त्र पढ़कर ऊर्ध्वमुखतर्जन्यङ्गुष्ठ से 'धूप-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

"रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीछिन्नमस्तापादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।"

उक्त मन्त्र पढ़कर ऊर्ध्वमुखमध्यमाङ्गुष्ठ से 'दीप-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

"वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीछिन्नमस्तापादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।"

उक्त मन्त्र पढ़कर अनामिकाङ्गुष्ठ से 'नैवेद्य-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

"शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीछिन्नमस्तापादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।"

उक्त मन्त्र पढ़कर सर्वाङ्गुलियों से 'ताम्बूल-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

सामान्य-अर्घ्य स्थापन

इसके बाद निम्नलिखित विधि से 'सामान्य अर्घ्य' की स्थापना करें—

साधक अपने आसन से कुछ हटकर, अपनी दाँई ओर की भूमि पर रक्त चन्दन द्वारा त्रिकोणवृत्त का एक मण्डल निर्माण करें, फिर उसमें—

"ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः।"

मन्त्र का उच्चारण करते हुए गन्ध, अक्षत तथा पुष्प चढ़ाकर आधारशक्ति का पूजन करें।

फिर वह आधार लेकर तथा 'फट्' मन्त्र से धोकर मण्डल स्थापित करे तथा उसकी—

"ॐ सामान्यार्घ्यपात्रधाराय नमः।"

इस मन्त्र द्वारा गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें। फिर एक पात्र लेकर उसे 'फट्' मन्त्र से धोयें तथा उसे आधार पर स्थापित करें। तत्पश्चात् गन्ध, अक्षत पुष्प छोड़कर—

"ॐ सामान्यार्घ्यपात्राय नमः ।"

इस मन्त्र से उसका पूजन करें। फिर उसमें 'ह्रीं' मन्त्र पढ़ते हुए जल भरें। तदुपरान्त 'अंकुश-मुद्रा' द्वारा उस जलमें. निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ते हुए, सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करें—

"ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधि कुरु ॥"

तदुपरान्त—

"ॐ गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि ।"

यह कहते हुए उसमें गन्ध, अक्षत तथा पुष्प छोड़ें। फिर 'धेनु मुद्रा' प्रदर्शित कर उस जल को अमृतमय करें, तत्पश्चात् उस पर दस बार 'ॐ' का जप करें। इसके बाद निम्नानुसार शङ्ख-स्थापन करें—

शङ्ख-स्थापन

अपनी बाँई ओर सामान्यार्घ्य-जल द्वारा चतुरस्र और उसके मध्य में त्रिकोण बनाकर, उस पर त्रिपद को रखें। फिर 'फट्' से शङ्ख को धोकर, उसे त्रिपद पर स्थापित करें।

[**टिप्पणी**—यहाँ 'शङ्ख' से तात्पर्य मानव-खोपड़ी समझना चाहिए।]

फिर—

"ॐ यदंश कलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ।"

इस मन्त्र से शङ्ख की पूजा करें। 'नमः' ऐ उसमें गन्ध, पुष्प, अक्षत, दूर्वा छोड़कर—

"क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं मूलं ।"

का उच्चारण करते हुए उसे शुद्ध जल से भरदें। फिर—

"ॐ सोममण्डलाय षोडश कलात्मने नमः"

से उस जल में पूजन कर, उसमें—

"ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधि कुरु ।"

इस मन्त्र द्वारा सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करें। फिर—

"श्रीछिन्नमस्ते इहावह इह तिष्ठ।"

कहते हुए इष्ट देवता का उस पात्र में आवाहन कर 'हुँ' द्वारा उसका अवगुण्ठन कर उसे "गालिनी-मुद्रा" दिखायें। फिर **'वौषट्'** से उस जल का वीक्षणकर, षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण कर, 'नमः' से गन्ध-पुष्प द्वारा देवता का पूजन करें तथा 'मत्स्य-मुद्रा' से उसे आच्छादित कर, दस बार मूलमन्त्र का जप करें। फिर 'वं' से धेनुमुद्रा दिखाकर, अस्त्र से उसका संरक्षण करें, तत्पश्चात् उस जल से अपना तथा पूजा-सामग्री का मूल-मन्त्र के उच्चारण सहित तीन बार अभिसिंचन करें।

[**टिप्पणी**—वीराचारी साधक शङ्ख-स्थापन के पश्चात् कलश-स्थापन तथा द्वितीयादि का शोधन कर श्रीपात्रादि की स्थापना करते हैं। तत्पश्चात् विन्दु-स्वीकार पर्यन्त कर्म करके यन्त्रराज की रचना करते हैं।]

यन्त्र स्थापन

यन्त्रराज की स्थापना हेतु एक सुन्दर चौकी अपने सामने रखकर, उस पर रखी गई एक सुन्दर तश्तरी में श्रीभगवती छिन्नमस्ता के आवाहन-पूजन हेतु अष्टगन्ध अथवा लालचन्दन द्वारा निम्नानुसार यन्त्र की रचना करनी चाहिए—

"सर्वप्रथम एक अधोमुख 'त्रिकोण' बनायें फिर उसके मध्य में तीन 'वृत्त' बनायें। फिर सबसे भीतर के वृत्त में तीन द्वारों वाले एक अधोमुख त्रिकोण का निर्माण करें। तत्पश्चात् प्रथम त्रिकोण के बाहर एक षट्कोण तथा उसके बाहर एक अष्टदल की रचना करें। अष्टदल के बाहर तीन रेखा वाले चार द्वारों से युक्त भूपुर का निर्माण करें। अन्त में, सबके भीतरी त्रिकोण के मध्य में 'हूं' तथा प्रथम त्रिकोण के तीनों कोणों में "हूं फट्' लिखें।" इस यन्त्र का स्वरूप अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित है।

पूर्वोक्त प्रकार से यन्त्र निर्मित कर, उस यन्त्र-लिखित तश्तरी को सामने की चौकीपर रखकर पीठों का पूजन सबसे भीतरी त्रिकोण के मध्यमें करें। यथा—

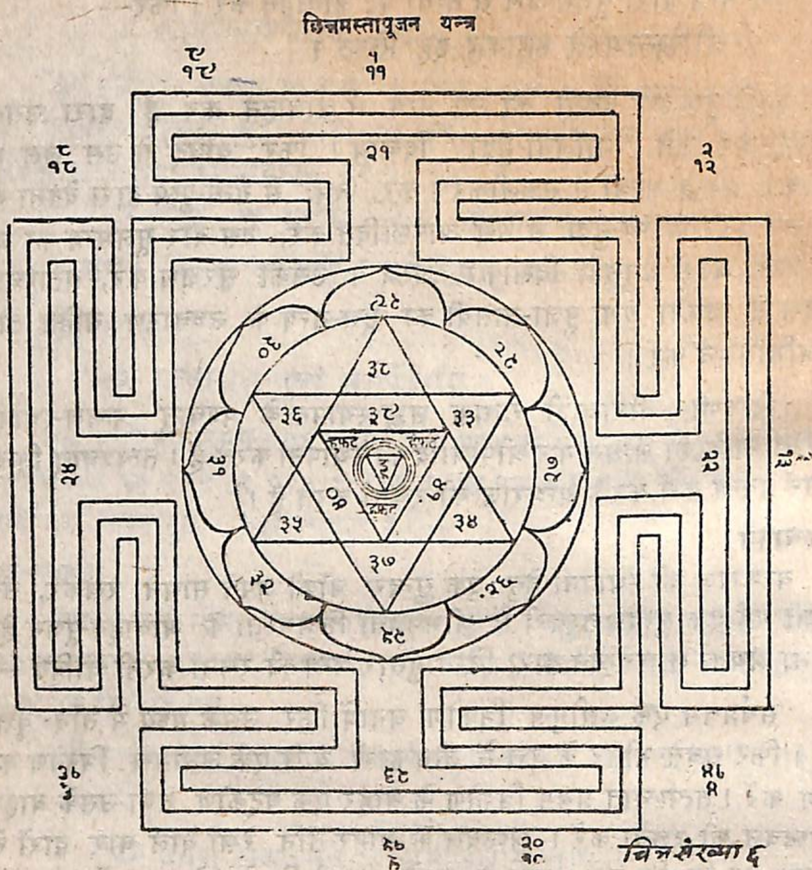
ॐ आधार शक्तये नमः।

ॐ कूर्माय नमः।

ॐ अनन्ताय नमः।

ॐ पृथिव्यै नमः।

ॐ क्षीर समुद्राय नमः।



चित्र संख्या ६

ॐ रत्नदीपाय नमः ।

ॐ कल्पवृक्षाय नमः ।

ॐ चित्तामणि गृहाय नमः ।

ॐ रत्नवेदिकायै नमः ।

रत्न वेदिका की आठों दिशाओं में—

ॐ धर्माय नमः—पूर्वे ।

ॐ ज्ञानाय नमः—दक्षिणे ।

ॐ वैराग्याय नमः—पश्चिमे ।

ॐ ऐश्वर्याय नमः—उत्तरे ।

ॐ अधर्माय नमः—आग्नेय कोणे ।

ॐ अज्ञानाय नमः—नैर्ऋत्यकोणे ।

ॐ अवैराग्याय नमः—वायव्य कोणे ।

ॐ अनैश्वर्याय नमः—ईशान कोणे ।

रत्न वेदिक के मध्य में—

ॐ पद्माय नमः ।

पद्म के नीचे—

आनन्दकन्दाय नमः ।

संविन्त्तालाय नमः ।

सर्वतत्त्वात्मक कमलाय नमः ।

मं वह्निमण्डलाय नमः ।

अं अर्कमण्डलाय नमः ।

उं सोममण्डलाय नमः ।

सं सत्वाय नमः ।

रं रजसे नमः ।

तं तमसे नमः ।

आं आत्मने नमः ।

अं अन्तरात्मने नमः ।

पं परमात्मने नमः ।

ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ।

पद्म के मध्य में—

रतिकामाभ्यां नमः ।

पीठशक्ति-पूजा

इसके बाद पद्म के आठ दलों में पूर्वादिक्रम से आठ पीठशक्तियों की पूजा करें। यथा—

ॐ जयायै नमः ।

ॐ विजयायै नमः ।

ॐ अजितायै नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।

ॐ नित्यायै नमः ।

ॐ विलासिन्यै नमः ।

ॐ दोग्ध्र्यै नमः ।

ॐ अघोरायै नमः ।

पद्म के मध्य में—

ॐ मङ्गलायै नमः ।

इसके बाद अपने नाभिमण्डल में भगवती छिन्नमस्ता का निम्नानुसार ध्यान करें।

ध्यान

देवी का ध्यान इस प्रकार करें—

"स्वनाभौ नीरजं ध्यायेदर्धं विकसितं सितं ।
तत्पद्मकोष मध्ये च मण्डल चण्डरोचिषः ।।
जपाकुसुम एङ्काशं रक्तबन्धूक सन्निभं ।
रजःसत्वतमो रेखा योनिमण्डलमण्डितम् ।।
मध्ये तु तां महादेवीं सूर्यकोटि समप्रभाम् ।
छिन्नमस्तां करे वामे धारयन्तीं स्वमस्तकम् ।।
प्रसारितमुखीं भीमां लेलिहानाग्रजिह्विकां ।
पिबन्तीं रौधरीं धारां निजकण्ठविनिर्गतां ।।
विकीर्ण केशपाशाञ्च नाना पुष्प समन्विताम् ।
दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमाला विभूषिताम् ।।
दिगम्बरां महाघोरां प्रत्यालीढपदस्थिताम् ।
अस्थिमालाधरां देवीं नाग यज्ञोपवीतिनीम् ।।
रति कामोपरिष्ठां च सदा ध्यायंति मन्त्रिणः ।
सदा षोडशवर्षीयां पीनोन्नतपयोधराम् ।।"

फिर, देवी के दाँई ओर स्थित 'वर्णिनी' शक्ति का ध्यान इस प्रकार करें—

"वर्णिनीं लोहितां सौम्याम् मुक्तकेशीं दिगम्बरां ।
देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वंतीम् ।।
नाग यज्ञोपवीताङ्गीं कत्रिखर्पर हस्तकाम् ।
ज्वलत्तेजोमयीं देवीं प्रत्यालीढपदस्थिताम् ।
सदा द्वादशवर्षीयां मुण्डमाला विभूषिताम् ।।

फिर, देवी के बाँई ओर स्थित 'डाकिनी' शक्ति का ध्यान इस प्रकार करें—

"डाकिनीं वामपार्श्वे तु कल्पान्तदहनोपमाम् ।
विद्युच्छटाभनयनां दंतपंक्ति वलाकिनीम् ।।
दंष्ट्रा करालवदनां पीनोन्नत पयोधराम् ।
महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ।।
लेलिहान महाजिह्वां मुण्डमाला विभूषिताम् ।
कपालकर्त्रिका हस्तां सदाभीषणरूपिणीम् ।।
देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वंतीम् ।।"

आसन-प्रदान

उक्त विधि से ध्यान करते हुए भगवती छिन्नमस्ता के यन्त्रराज के भीतरी त्रिकोण में ध्यान लगाते हुए उन्हें निम्नलिखित मन्त्र द्वारा आसन प्रदान करें—

"वज्रवैरोचनीये एहि एहि इहासनं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धि देहि देहि मम शत्रून् मारय मारय हुं हुं फट् स्वाहा ।"

आवाहन

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पद्मसुद्रा' से पुष्पासन प्रदान करें। फिर उस पुष्पासन का पूजन कर, पुष्पांजलि प्रदान करते हुए निम्नलिखित मन्त्र द्वारा देवी का आवाहन करें—

"सर्वसिद्धि प्रदे डाकिनीये वज्रवैरोचनीये एहि एहि इहावह इह तिष्ठ हुं हुं फट् स्वाहा ।"

उक्त प्रकार से आवाहन कर, 'धेनुमुद्रा' तथा 'योनि मुद्रा' दिखाकर निम्नानुसार प्राण प्रतिष्ठा करें—

प्राण-प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः छिन्नमस्तायाः प्राणा इह प्राणाः ।

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः छिन्नमस्ताया जीव इह स्थितः ।

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः छिन्नमस्तायाः सर्वेन्द्रियाणि ।

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः छिन्नमस्तायाः वाङ्-मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण-प्राण पदानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

प्रार्थना

प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर निम्नानुसार प्रार्थना करें—

"देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥"

प्रार्थना के बाद देवता के अङ्गों में यथाक्रम षडङ्गन्यास करें—

षडङ्गन्यासः

ह्रां हृदयाय नमः ।
ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ह्रूं शिखायै वषट् ।
ह्रैं कवचाय हुं ।
ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्रः अस्त्राय फट् ।

इसके पश्चात् देवता का 'षोडशोपचार-पूजन' करना चाहिए ।

षोडशोपचार-पूजन-विधि

पाद्य

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि ।"

यह कहते हुए अनामिका तथा अङ्गुष्ठ द्वारा देवी के चरणों में पाद्य-पात्र अथवा शङ्ख-पात्र का जल अर्पित करें।

अर्घ्य

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः इदं अर्घ्यं स्वधा।"

यह कहते हुए सब अँगुलियों की मुद्रा द्वारा देवी के शिर पर शङ्ख-पात्र का जल अर्पित करें।

आचमन

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः आचमनीयम् स्वधा।"

यह कहते हुए अनामिका, मध्यमा तथा अङ्गुष्ठ से आचमनीय पात्र अथवा सामान्य-अर्घ्य का जल देवी को आचमन के लिए समर्पित करें।

मधुपर्क

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः इदं मधुपर्कं स्वधा।"

यह कहते हुए अधोमुखी अनामिका तथा अंगुष्ठ द्वारा देवी को मधुपर्क प्रदान करें।

पुनराचमनीय

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः इदं शुद्ध आचमनीय समर्पयामि स्वधा।"

यह कहते हुए आचमनीय-पात्र अथवा सामान्य अर्घ्य का जल अनामिका, मध्यमा, तर्जनी तथा अंगुष्ठ द्वारा पुनः आचमन हेतु देवी को जल समर्पित करें।

स्नान

मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः।"

यह कहते हुए 'ज्ञान-मुद्रा' द्वारा गन्धाक्षत छोड़कर, उन्हें पृथक्-स्थान में कल्पित 'स्नान-मण्डप' में ले जाने की भावना करें। फिर वहाँ मूल-मन्त्र के उच्चारण के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः उद्वर्तनार्थे हरिद्रातैलं समर्पयामि।"

यह कहते हुए गन्धाक्षत छोड़कर हल्दी तथा तेल का उबटन लगाने की भावना करें। फिर मूल-मन्त्र का उच्चारण करके—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः।"

कहते हुए कनिष्ठा-रहित दाँये हाथ की 'मुष्टि मुद्रा' प्रदर्शित कर, सामान्यार्घ्य का जल छोड़कर, देवी को स्नान कराने की भावना करें। फिर मूलमन्त्र का उच्चारण करके—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः।"

कहते हुए 'ज्ञानमुद्रा' द्वारा अक्षत छोड़कर, सूखे कपड़े द्वारा देवी के अङ्ग पोंछने की भावना करें।

वस्त्र

मूल मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः, इदं वस्त्रं उत्तरीयं च निवेदयामि।"

यह कहते हुए पहनने के लिए शुद्ध रेशमी लाल रंग का वस्त्र प्रदान करें। अथवा अंगुष्ठ, अनामिका एवं मध्यमा द्वारा 'ज्ञानमुद्रा' से अक्षत छोड़कर देवी को वस्त्र पहिनाने की भावना करें।

आभूषण

मूलमन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः इमानि भूषणानि निवेदयामि।"

कहते हुए देवी को आभूषण प्रदान करें अथवा 'ज्ञानमुद्रा' से अक्षत छोड़कर देवी के भिन्न-भिन्न अङ्गों में रत्नजड़ित स्वर्णाभूषण पहिनाने की भावना करें।

इसके पश्चात् मूलमन्त्र का उच्चारण करने के बाद "श्री छिन्नमस्तायै नमः" यह कहते हुए, 'ज्ञान-मुद्रा' से अक्षत छोड़कर यह भावना करें कि भगवती स्नान-मण्डप के बाहर निकलकर, मन्दगति से गमन करती हुई, प्रसन्न-मन से श्रीचक्र में अपने स्थान पर आ विराजी हैं।

गन्ध

मूल मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः इदं गंधं समर्पयामि।"

कहते हुए मध्यमा, अनामिका तथा अङ्गुष्ठ द्वारा भगवती के अङ्गों में अष्ट गन्ध प्रदान करें।

पुष्प

मूल मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै वौषट् इमानि बिल्वपत्र सहित पुष्पाणि समर्पयामि।"

कहते हुए भगवती को अंगुष्ठ तथा तर्जनी की मुद्रा से बिल्वपत्र सहित पुष्प एवं पुष्पहार प्रदान करें।

धूप

सामान्यार्घ्य-जल से धूप-पात्र का 'फट्' मन्त्र से प्रोक्षण करने के बाद उसमें अग्नि रखकर धूप डालें, फिर उसका 'नमः' मन्त्र द्वारा गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करें। तत्पश्चात् उसे भगवती के सम्मुख स्थापित कर, बाँई तर्जनी से उसका स्पर्श करें। फिर मूल मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः धूपं निवेदयामि।"

कहते हुए उस पर विशेषार्घ्य का द्रव्य छोड़कर भगवती को प्रदान करें। फिर—

"ॐ गजध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा।"

इस मन्त्र को पढ़कर गंध-अक्षत पुष्प द्वारा घण्टा का पूजन करें। फिर बाँये हाथ में घण्टा लेकर उसे बजाते हुए मध्यमा, अनामिका तथा अंगूठे की मुद्रा से धूप-पात्र को उठाकर भगवती को धूप प्रदान करें तथा मूल-मन्त्र का जप करके तीन बार धूप-पात्र को घुमाकर धूप प्रदान करें। फिर धूप-पात्र को देवता के बाँई ओर रख दें।

दीप

सामान्यार्घ्य-जल से दीप-पात्र का 'फट्' मन्त्र से प्रोक्षण कर, उसमें बत्ती रख कर जलायें। फिर 'नमः' मन्त्र से गन्धाक्षत एवं पुष्प द्वारा उसका पूजन कर, देवता के सम्मुख रखते हुए बाँई मध्यमा अँगुली से स्पर्श कर मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"श्री छिन्नमस्तायै नमः दीपं निवेदयामि।"

यह कहते हुए विशेषार्घ्य का द्रव्य उस पर छोड़कर, बाँये हाथ में घण्टा लेकर उसे बजाते हुए मध्यमा तथा अनामिका के बीच में दीप-पात्र को पकड़कर, उस पर अंगूठा रख, तीन बार घुमाते हुये आरती करें तथा मूल-मन्त्र एवं छिन्नमस्ता-गायत्री का जप करते हुये दीप प्रदान करें। तत्पश्चात् उसे देवता के दाँई ओर रखदें।

नैवेद्य

इसके पश्चात् नैवेद्य के पदार्थों को किसी स्वर्ण आदि के सुन्दर पात्र में भर कर, अपने सामने त्रिकोण-मण्डल पर रखें। फिर 'हुं' मन्त्र से 'अवगुण्ठन-मुद्रा' द्वारा उसका अवगुण्ठन करें। वायुबीज 'यं' का उसके ऊपर १६ बार जप करके उसके दोषों का शोषण करें। फिर अग्नि बीज 'रं' का १६ बार जप करके उन दोषों को जलादें। फिर वरुण-बीज 'वं' का १६ बार जप करके 'धेनुमुद्रा' प्रदर्शित कर, उसे अमृतमय करें। फिर उसके ऊपर ७ बार मूल-मन्त्र का जप करें। तदुपरान्त बाँये अंगूठे से नैवेद्य-पात्र को स्पर्श किये हुए—

'नैवेद्यं निवेदयामि'

यह कहते हुये दाँये हाथ की तत्त्वमुद्रा से उस पर सामान्यार्घ्य का जल छोड़कर, देवता को नैवेद्य निवेदित करें। फिर एक पात्र में जल लेकर, मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

श्री छिन्नमस्तायै नमः इदं जलं निवेदयामि।"

यह कहते हुए उसे नैवेद्य के समीप आधार पर रखदें। फिर—

प्राणाय स्वाहा।

अपानाय स्वाहा।

समानाय स्वाहा।

उदानाय स्वाहा।

व्यानाय स्वाहा।

उक्त मन्त्रों को पढ़ते हुए क्रमशः पाँचों मुद्राओं को दिखाते हुए, अन्त में बाँये हाथ से 'ग्रास-मुद्रा' दिखाकर, यह भावना करें कि देवी प्रसन्नतापूर्वक भोजन कर रही है।

जब यह अनुभव करले कि देवी पूर्णतः भोजन करके जलपान कर चुकी हैं, तब उन्हें पुनः आचमन कराना चाहिये।

पुनराचमनीय

पहले मूल-मन्त्र का उच्चारण करें, फिर—

"श्री छिन्नमस्तायै स्वधा आचमनीयं समर्पयामि।"

यह कहते हुए आचमनीय-पात्र अथवा सामान्यार्घ्य का जल आचमन हेतु देवता के मुख में प्रदान करें।

[टिप्पणी—बीराचारी-साधक 'नैवेद्य' से पूर्व देवी को 'आसव' समर्पित करते हैं। उसकी विधि निम्नानुसार है—

एक पात्र में 'कारण' (आसव अर्थात् मद्य) लेकर, उसे देवता के सम्मुख आधार पर रखकर—

"ॐ छिन्नमस्ते छिन्नमस्ते छिन्नमस्ते हूं हूं अमृतमासवं विधिवत् कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र को ७ बार पढ़ते हुए, पात्र के ऊपर हाथ रखकर 'कारण' को अभिमन्त्रित करें, फिर 'ग्रास-मुद्रा' से पात्र को उठाकर दाँये हाथ में शुद्धि-खण्ड आदि लेकर, दोनों हाथों को एक दूसरे से मिलाकर, दोनों वस्तुएँ देवता को निवेदित करें। निवेदित करते समय पहले मूल-मन्त्र का उच्चारण करें, फिर—

"शुद्ध्यादि सहितमासवं निवेदयामि।"

यह कहते हुए भावना करें कि देवता ने शुद्धि सहित आसव का पान किया है। तत्पश्चात् उस पात्र तथा शुद्धि खण्ड को आधार पर रख देना चाहिए।]

ताम्बूल

इसके पश्चात् देवता को ताम्बूल भेंट करने हेतु कर्पूरादि सुगन्ध-द्रव्य मिश्रित ताम्बूल को एक पात्र में रखकर, उसका बाँये अंगूठे से स्पर्शकर—

"ताम्बूलं निवेदयामि।"

यह कहते हुए सामान्यार्घ्य का जल छोड़े तथा देवता के मुख में पान खिलाने की भावना करें।

[टिप्पणी—इस स्थान पर वीर-साधक को विशेषार्घ्य के द्रव्य से देवता का तीन बार तर्पण करना चाहिये। तर्पण करते समय मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद यह कहना चाहिए—

"सांगां सपरिकरां श्रीछिन्नमस्तायै श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

इसके पश्चात् 'योनि-मुद्रा' प्रदर्शित कर नमस्कार करें।

बलि-समर्पण

इसके बाद एक पात्र में सब पदार्थों को सजाकर देवी के सम्मुख रखें तथा निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा देवी को बलि समर्पित करें—

"ॐ सर्वसिद्धि वर्णनीये वज्रवैरोचनीये एहि एहि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं देहि देहि मम शत्रून् मारय मारय करालिके हूं फट् स्वाहा।"

तन्त्र

इसके बाद देवी के दाँई ओर—

"ॐ वर्णिन्यै नमः।"

से तथा बाँई ओर—

"ॐ डाकिन्यै नमः।"

से दोनों शक्तियों की पूजाकर, पूर्ववत् देवी के षडङ्गों का पुनः पूजन करें। देवी के दाँई ओर "ॐ शंखनिधये नमः" तथा बाँई ओर "ॐ पद्म निधयने नमः"—से पूजन कर, निम्नानुसार पूजन करें—

पूर्वे—ॐ लक्ष्म्यै नमः।

दक्षिणे—ॐ लज्जायै नमः।

पश्चिमे—ॐ मायायै नमः।

उत्तरे—ॐ वाण्यै नमः।

आग्नेये—ॐ ब्रह्मणे नमः,

नैर्ऋत्ये—ॐ विष्णवे नमः।

वायव्ये—ॐ रुद्राय नमः।

ईशाने—ॐ ईश्वराय नमः।

मध्ये—ॐ सदाशिवाय नमः।

इसके पश्चात् देवता को पंच पुष्पांजलियाँ समर्पित करें। फिर निम्न-लिखित श्लोक पढ़ते हुए देवता से आवरण-पूजा हेतु आज्ञा माँगें—

"ॐ सच्चिन्मयि परे देवि परामृतरस प्रिये।
अनुज्ञां छिन्नके देहि परिवारार्चनाय मे।"

आवरण-पूजा

भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से प्रथम-रेखा में दस दिक्पालों के अस्त्रों का निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें—

पूर्वे—

ॐ वं वज्राय नमः।

वज्र श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

आग्नेयै—

ॐ शं शक्तये नमः ।

शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

दक्षिणे—

ॐ दं दण्डाय नमः ।

दण्ड श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

नैर्ऋत्ये—

ॐ खं खड्गाय नमः ।

खण्ड्ग श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

पश्चिमे—

ॐ पां पाशाय नमः ।

पाश श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

वायव्ये—

ॐ अं अंकुशाय नमः ।

अंकुश श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

उत्तरे—

ॐ गं गदायै नमः ।

गदाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ईशाने—

ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ।

त्रिशूल श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

पश्चिम निऋतिमध्ये—

ॐ पं पद्माय नमः ।

पद्म श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ईशानपूर्व मध्ये—

ॐ चं चक्राय नमः ।

चक्र श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

यह कहकर पुष्पांजलि दें तथा शंखपात्र का बिन्दु छोड़कर 'पूजिता स्तर्पिताः सन्तु' कहें ।

[टिप्पणी—वीर-साधक ही आवरण-पूजा में 'तर्पयामि नमः' कहते हैं तथा बिन्दु छोड़ते हैं ।]

(इति प्रथमावरणः)

फिर, भूपुर की मध्यरेखा में अस्त्रों के समीप दशदिक्पालों का पूर्वादि क्रम से पूर्ववत् पूजन करें। पूजन करते समय निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए—

ॐ लं इन्द्राय नमः ।

इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ रं अग्नये नमः ।

अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ यं यमाय नमः ।

यम श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ।

निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ वं वरुणाय नमः ।

वरुण श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ यं वायवे नमः ।

वायु श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ कुं कुबेराय नमः ।

कुबेर श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ हं ईशानाय नमः ।

ईशान श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ आं ब्रह्मणे नमः ।

ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ।

अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।

यह कहकर पुष्पांजलि दें तथा शंख पात्र का बिन्दु छोड़कर 'पूजिता स्तर्पिताः सन्तु' कहें । (इति द्वितीयावरणः)

फिर, भूपुर के भीतर, भीतरी रेखा पर, द्वारों में पूर्वादि क्रम से चार द्वार-पालों का निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें—

ॐ करालाय नमः ।

कराल श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ विकरालाय नमः ।

विकराल श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ अतिकरालाय नमः ।

अतिकराल श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ महाकालाय नमः ।

महाकाल श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

''अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।।''

यह कहकर पुष्पांजलि दें तथा शंख-पात्र का बिन्दु छोड़कर, 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' कहें । (इति तृतीयावरणः)

फिर, अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से आठ शक्तियों का निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें—

ॐ एकलिङ्गाय नमः

एक लिङ्ग श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ योगिन्यै नमः

योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ डाकिन्यै नमः

डाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ भैरव्यै नमः

भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ महा भैरव्यै नमः

महाभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः

इन्द्राक्षी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ असितांग्यै नमः

असिताङ्गी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ॐ संहारिण्यै नमः

संहारिणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

"अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।"

यह कहकर पुष्पांजलि दें तथा शंख-पात्र का बिन्दु छोड़कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' कहें ।

(इति चतुर्थावरणः)

फिर, षट्कोण के केसरों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए षडङ्गों का पूजन करें—

आग्नेये—

ॐ आं खड्गाय हृदयाय स्वाहा ।

हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

ईशाने—

ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा ।

शिर शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

नैर्ऋत्ये—

ॐ ऊं वज्राय शिखायै स्वाहा ।

शिखा शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

वायव्ये—

ॐ ऐं पाशाय कवचाय स्वाहा ।

कवच शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

मध्ये—

ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय स्वाहा ।

नेत्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

दिक्षु—

ॐ अः सुरक्षा असुरक्षाय अस्त्राय फट् स्वाहा ।

अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

''अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।''

यह कह कर पुष्पांजलि दें तथा शंख-पात्र का बिन्दु छोड़कर 'पूजिता-स्तर्पिताः सन्तु' कहें । (इति पञ्चमावरणः)

फिर, षट्कोण के भीतर एवं त्रिवृत्तों से बाहर के त्रिकोण में निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए तीनों देवियों का पूजन करें—

देवी के सम्मुख कोण में—

''ॐ ऐं छिन्नमस्तायै नमः ।

छिन्नमस्ता श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

देवी के दाँई ओर के कोण में—

''ॐ ऐं डाकिन्यै नमः ।

डाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

देवी के बाँई ओर के कोण में—

ॐ ऐं वर्णिन्यै नमः ।

वर्णिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ।

इसके बाद हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करें—

''अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।''

यह कह कर पुष्पांजलि दें तथा शंख-पात्र का बिन्दु छोड़कर **"पूजिता स्तर्पिताः सन्तु"** कहें। (इतिषष्ठावरणः)

[**टिप्पणी**—छिन्नमस्ता का 'मन्त्र महार्णव' में वर्णित पूजा-यन्त्र 'पद्धति' एवं 'मन्त्र-महोदधि' के यन्त्र से कुछ भिन्न है।

'मन्त्र महोदधि' के यन्त्र में केवल त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल तथा भूपुर हैं, जबकि पद्धति में त्रिद्वारयुक्त त्रिकोण, त्रिवृत्त, पुनः त्रिकोण, अष्टदल कमल तथा त्रिरेखात्मक भूपुर हैं।

पद्धति में आवरण-पूजा का क्रम भी भिन्न है, जो निम्नानुसार है—

१—षडङ्गों का आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य, मध्य तथा दिशाओं में पूजन किया जाता है।

२—अष्ट दलों में पूर्वादि क्रम से—

(१) ॐ ह्रीं काल्यै नमः।

(२) ॐ ह्रीं वर्णिन्यै नमः।

(३) ॐ ह्रीं डाकिन्यै नमः।

(४) ॐ ह्रीं भैरव्यै नमः।

(५) ॐ ह्रीं महाभैरव्यै नमः।

(६) ॐ ह्रीं इन्द्राक्ष्यै नमः।

(७) ॐ ह्रीं पिङ्गलाक्ष्यै नमः।

(८) ॐ ह्रीं संहारिण्यै नमः।

उक्त मन्त्रों से अष्टशक्तियों का पूजन किया जाता है।

३—पद्म के मध्य में अर्थात् भीतर के त्रिकोण में **"हूं हूं फट् स्वाहा नमः'** मन्त्र से भगवती छिन्नमस्ता का पूजन करके, देवी के सम्मुख **"ॐ क्रोध भैरवाय नमः'** से, देवी के दक्षिण ओर **'ॐ सम्राट छन्दसे नमः'** से तथा पुनः उत्तर की ओर **'ॐ बीज शक्तिभ्यां नमः'** से पूजन किया जाता है।

४—पद्म दलों के अग्रभाग में पूर्वादि क्रम से क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पूजन किया जाता है—

(१) ॐ ब्राह्म्यै नमः।

(२) ॐ माहेश्वर्य्यै नमः।

(३) ॐ कौमार्यै नमः।

(४) ॐ वैष्णव्यै नमः।

(५) ॐ वाराह्यै नमः ।

(६) ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

(७) ॐ चामुण्डायै नमः ।

(८) ॐ महालक्ष्यै नमः ।

५—भूपुर के चारों द्वारों में क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पूजन किया जाता है—

पूर्वे—ॐ करालाय नमः ।

दक्षिणे—ॐ विकरालाय नमः ।

पश्चिमे—ॐ अतिकरालाय नमः ।

उत्तरे—ॐ महाकरालाय नमः ।

इस प्रकार 'पद्धति' में केवल पाँच आवरण ही दिए गए हैं ।]

पूर्वोक्त विधि से आवरण-पूजा की समाप्ति पर पूर्ववत् पुनः धूप, दीप एवं नैवेद्य प्रदान कर देवता को नमस्कार करें तथा उनके श्रीचरणों में पुष्पांजलि प्रदान करें—

[**टिप्पणी**—इस स्थान पर वीर-साधक निम्नलिखित मन्त्र द्वारा मत्स्य-मांसादि की बलि प्रदान करते हैं—

"ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये वज्र-वैरोचनीये एह्येहि बलिं गृह्ण-गृह्ण मम सिद्धि देहि ह्रीं फट् स्वाहा ।"

मन्त्र-जप आदि

इसके पश्चात् साधक को करन्यास, षडङ्गन्यास आदि करके मूल-मन्त्र का जप करना चाहिये ।

सर्व प्रथम "**वज्रवैरोचनीये हुं**"—इस कुल्लिका-मन्त्र का अपने मूर्द्धा पर १० वार जप करना चाहिए। फिर अपने सिर पर "**श्रीं ह्रीं हुं**" इस मालिनी-मन्त्र का १०० वार जप करना चाहिए। इसके पश्चात्—

"ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ऐं स्वाहा ।"

इस दीपिनी-मन्त्र का १० बार जप करना चाहिये । इसके बाद माला लेकर उसका पूजन करें । फिर, इष्ट-मन्त्र का १०८ अथवा १००८ की संख्या में जप करें । भगवती छिन्नमस्ता का मन्त्र इस प्रकार है—

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

[**टिप्पणी**—मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।"]

मन्त्र-जप समाप्त करके "ॐ ह्रीं ॐ"—इस शापोद्धार मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से देवी के हाथ में जल छोड़ते हुये जप-फल समर्पित करना चाहिये—

"ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥"

इसके पश्चात् स्तोत्र, कवच आदि का यथा शक्ति पाठ करके एक बार प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

[**टिप्पणी**—मन्त्र महोदधि में देवी का ध्यान निम्नानुसार वर्णित है—

"भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिराश्छिन्नंविकीर्णालकं ।
स्फेरास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ॥
याभात्मक्तरति स्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनी ।
वर्णिन्यौ परिदृश्यमोद कलितां श्रीछिन्नमस्ता भजे ॥"

विसर्जन

अन्त में भगवती को 'संहार-मुद्रा' दिखायें तथा उन्हें अपनी अंजलि में विराजमान जानकर, वामनासा मार्ग द्वारा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये अपने अन्तर में विसर्जित करें—

"योनिमुद्रासमारूढां प्रदीपकलिकोज्ज्वलाम् ।
कृष्णपक्षे विधुमिव क्रमेण क्षीणतांगताम् ॥
उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनी ।
ब्रह्मयोनि समुत्पन्ने गच्छ देवि ममान्तरम् ॥"

इसके पश्चात् ईशान कोण में मण्डल बनाकर उसका निम्नलिखित मन्त्र से पूजन करें—

"ॐ उच्छिष्टचाण्डालिन्यै निर्माल्यभोजिन्यै स्वाहा ।"

फिर, नैवेद्य ग्रहण कर, चन्दन लगा, चरणोदक का पान करके इच्छानुसार विहार करना चाहिए।

●

४ | प्रचण्डचण्डिका मन्त्र-प्रयोग

भगवती प्रचण्डचण्डिका

भगवती छिन्नमस्ता का ही अपर नाम 'प्रचण्डचण्डिका' है। इनकी कृपा से मनुष्य सदाशिवत्व प्राप्त करता है। निर्धन व्यक्ति धनी बनता है एवं अज्ञ व्यक्ति को कवित्व तथा पाण्डित्य का लाभ होता है।

मन्त्र

'विश्वसार' तथा रुद्रयामल तन्त्र में इनका मन्त्र निम्नानुसार बताया गया है—

"श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"

उक्त मन्त्र के आदि में 'श्री बीज' (श्रीं) रहने से सब प्रकार की समृद्धि प्राप्त होती है। आदि में 'काम-बीज' (क्लीं) रहने से नारी-वशीकरण होता है। आदि में 'माया-बीज' (ह्रीं) रहने से सभी पाप नष्ट होते हैं तथा आदि में द्वादश-स्वर (ऐं) रहने से मुक्ति-लाभ होता है। इस प्रकार इस मन्त्र के क्रमशः चार रूप बनते हैं—

(१) श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

(२) क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

(३) ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

(४) ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

इन मन्त्रों के ऋषि भैरव, छन्द सम्राट् देवता छिन्नमस्ता, बीज हूं हूं, शक्ति स्वाहा तथा विनियोग अभीष्ट सिद्ध्यर्थे है।

पिछले प्रकरण में वर्णित 'छिन्नमस्ता नित्यार्चन विधि' के अनुसार प्रातः कृत्यादि करके 'श्रीं ह्रीं हूं' से तीन बार आचमन कर, 'ऐं' से दोनों ओठों का मार्जन कर, 'ह्रीं' से पुनः ओठों को शुद्ध करना चाहिये। तत्पश्चात् 'हूं' से दोनों

हाथ धोकर, 'श्रीं' से मुख को, 'ह्रीं' से दक्ष-नासा को, 'हूं' से वामनासा को, 'ऐं' से दक्ष-नेत्र को, 'क्लीं' से वाम नेत्र को, **'श्रीं ह्रीं क्लीं'** से दक्ष-कर्ण को, 'ऐं' से वामकर्ण को, 'ॐ' से नाभि को, **'क्लीं'** से हृदय को, 'ईं' से मस्तक को तथा 'क्रों' से दोनों कंधों का स्पर्श करना चाहिये। आचमन की इस प्रक्रिया से साधक शिव-स्वरूप हो जाता है। तथा एक वर्ष तक इसी प्रकार आचमन कर, छिन्नमस्ता देवी की आराधना करने से देवी के दर्शन प्राप्त होते हैं।

इसके बाद पूर्व वर्णित विधि द्वारा प्राणायाम तक के कर्म करके 'षोढा-न्यास' करना चाहिये। **श्रीं, ऐं, क्लीं, सौः, श्रीं, ह्रीं, क्लीं, ऐं, ह्रौं, ॐ, क्री, क्रीं, क्रों, ई, हुँ, फट्** तथा षोडशी-विद्या का अष्ट दशाक्षर मन्त्र—**"ऐं हसकल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं"**—इनमें से प्रत्येक बीज द्वारा मातृकावर्ण अर्थात् अकारादि से 'क्ष' तक के पचास वर्णों को अलग-अलग पुटित कर, मातृका-न्यास के स्थानों में अर्थात्—

श्रीं अं श्रीं नमः—ललाटे।

श्रीं आं श्रीं नमः—मुखे।

इसी प्रकार—

ऐं अं ऐं नमः—ललाटे।

ऐं आं ऐं नमः—मुखे।

इत्यादि प्रकार से क्रमशः न्यास करे। इसे 'बीज षोढा' कहते हैं। यह न्यास ब्रह्मस्वरूप है। इसके करने से साधक का शरीर वज्रवत् हो जाता है। इस न्यास को दस वर्ष तक करते रहने वाला साधक समस्त ऐश्वर्यों से युक्त होकर जीवन-मुक्त हो जाता है।

इसके बाद पूर्ववर्णित विधियों से ऋष्यादि न्यास, करन्यास, षडङ्गन्यास आदि करके मूल मन्त्र द्वारा मस्तक से पैरों तक तथा पैरों से मस्तक तक तीन बार व्यापक न्यास करके 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान

'ध्यान' के मन्त्रों का उल्लेख पिछले प्रकरणों में किया जा चुका है। यहाँ उनके भावार्थ को लिखते हैं—

"अपनी नाभि में आधे खिले हुए श्वेतकमल का ध्यान कर, कमल-कोष के मध्य में जपा-बन्धूक पुष्पों के समान रक्तवर्ण एवं रजः सत्व-तमः संज्ञक तीन रेखा-रूप योनिमण्डल में सुशोभित सूर्यमण्डल की भावना करें। इसी मण्डल के मध्य में कोटि-सूर्यों के तुल्य प्रभावशाली महादेवी छिन्नमस्ता को विराजमान अनुभव करते हुए उनके निम्नलिखित स्वरूप का ध्यान करें—

भगवती छिन्नमस्ता अपने बाँये हाथ में अपना ही कटा हुआ मस्तक धारण किये हैं। उनका मुख विस्तृत तथा भयावना है। वे अपनी भयानक जीभ से ओठों को चाट रही हैं तथा अपने कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का पान कर रही हैं। उनके केश बिखरे हुए तथा अनेक प्रकार के पुष्पों से सुसज्जित हैं।

भगवती के दाँये हाथ में कैंची तथा गले में मुण्डमाला है। वे नग्ना (निर्वस्त्रा) हैं तथा उनकी आकृति बहुत डरावनी है। उनका दाँया पाँव कुछ आगे की ओर बढ़ा हुआ तथा बाँया पाँव कुछ पीछे की ओर हटा हुआ है। वे हड्डियों की माला तथा सर्पों का यज्ञोपवीत पहने है। वे विपरीत-रति में आसक्त रति-काम के ऊपर बैठी हैं। वे नित्य षोडशवर्षीया वम वाली एवं स्थूल तथा उन्नत स्तनों वाली हैं।

देवी के बाँई तथा दाँई ओर 'डाकिनी' एवं 'वर्णिनी' नामक दो नायिकाएें हैं। वे भी देवी के कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का पान कर रही हैं।

देवी के दाँई ओर स्थित 'वर्णिनी' सौम्य आकृति वाली, रक्तवर्णा, खुले केशों वाली तथा नग्ना है। उसके बाँये हाथ में नरमुण्ड तथा दाँये हाथ में कैंची है। गले में सर्पों का यज्ञोपवीत है। उनका स्वरूप तेज के कारण जाज्वल्यमान हैं। वह विविध आभूषणों से तथा अस्थि-माला से सुसज्जित षोडशवर्षीय है।

देवी के बाँई ओर स्थित 'डाकिनी' प्रलयकालीन द्वादश सूर्यों तथा अग्नि के समान उज्ज्वलवर्ण वाली हैं। उसका जटाजूट विद्युत् के समान दीतिमान है। वह तीन नेत्रों वाली तथा शुभ्र दन्तपक्ति वाली है। कराल दाँतों से युक्त उसका मुख अत्यन्त भयंकर है। उसके दोनों स्तन अत्यधिक स्थूल तथा उन्नत है। आकृति अत्यन्त भयंकर, केश बिखरे हुए तथा शरीर नग्न हैं। लाल जिह्वा अत्यधिक बड़ी है। वह कण्ठ में मुण्डमाला पहने है। उसके बाँये हाथ में नरमुण्ड तथा दाँये हाथ में कैंची है। वह देवी के कण्ठ से निकलने वाली रक्तधारा का पान कर रही है।

"उक्त 'वर्णिनी' तथा 'डाकिनी'—दोनों ही छिन्नमस्ता देवी की सेवा करती हैं।"

तन्त्र में लिखा है 'जो व्यक्ति' ध्यान किये बिना छिन्नमस्ता का पूजन करता है, देवी उसका शिरश्छेद कर, रक्तपान करती हैं।

पूजा-मन्त्र

छिन्नमस्ता देवी के पूजा-यन्त्र का पहले उल्लेख किया जा चुका है, तद-नुसार ही यन्त्र बनाना चाहिए। रंगों द्वारा यन्त्र-निर्माण निम्नानुसार किया जाता है—

सर्व प्रथम अष्टदल पद्म बनायें। पूर्व का दलश्वेत, अग्निकोण का दल लाल, दक्षिण का दल काला, नैर्ऋत्यकोण का दल पीला, पश्चिम का दलश्वेत, वायव्य-कोण का दल लाल, उत्तर का दल श्वेत तथा ईशानकोण का दल काला रंगें। मध्य की कर्णिका को पीला बनायें। कर्णिका के मध्य में सूर्य मण्डल की रचना कर, उसकी सत्व-रज तमोगुणात्मक तीन रेखाओं को क्रमशः श्वेत, लाल तथा काले रंग की बनायें। उसके मध्य में 'ह्रीं ह्रीं फट्' यह मन्त्र लिखें। इस चक्र के बाहर आकार बना कर पूर्वादि चारों दिशाओं में क्रमशः लाल, कृष्ण, श्वेत तथा पीत रंग के चारों द्वारों की रचना करें।

यतिगण उक्तमण्डल के मध्य में छिन्नमस्ता देवी का इस प्रकार ध्यान करते हैं कि वे प्रदीप कलिकाकारा, अद्वितीया, योनि मुद्रा समायुक्त है तथा उनके नेत्र हृदयदेश में स्थित हैं।

गृहस्थों के लिए ध्यान का स्वरूप यह है कि देवी अपने शरीर के मध्य स्थित नाभि-पद्म (मणि पूरक) में अवस्थित, निर्लिप्त, निर्गुणा, सूक्ष्मा, बालचन्द्र के समान प्रभायुक्ता, गुणत्रितय-वेष्टिता, कलातीता, सत्वादिगुणतीता एवं मुक्ति दात्री है। उन्हें केवल समाधि के द्वारा जाना जा सकता है। सामान्य दृष्टि से नहीं समझा जा सकता।

पीठ-पूजा

ध्यान करने के पश्चात मानसोपचार पूजन कर, अर्घ्य-स्थापन के बाद पीठ-पूजा करें। यथा—

आधार शक्तये नमः।

प्रकृतये नमः।

कूर्माय नमः।

अनन्ताय नमः।

पृथिव्यै नमः।

क्षीर समुद्राय नमः।

रत्न द्वीपाय नमः।

कल्पवृक्षाय नमः।

स्वर्ण सिहासनाय नमः।

आनन्द कन्दाय नमः।

संविन्नालाय नमः।

सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः ।

सं सत्त्वाय नमः ।

रं रजसे नमः ।

तं तमसे नमः ।

आं आत्मने नमः ।

अं अन्तरात्मने नमः ।

पं परमात्मने नमः ।

ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ।

पद्ममध्ये—

रतिकामाभ्यां नमः ।

'भैरव-मत' के अनुसार—आधार शक्ति, कूर्म, नागराज, पद्मनाल, पद्म, मण्डल, चतुरस्र, रजः, सत्व, तमः, रति, काम की पूजा कर, शक्ति पूजा करनी चाहिए।

रति और काम के ऊपर—

"वज्र वैरोचनीये देहि देहि एहि एहि गृह्ण गृह्ण स्वाहा मम सिद्धि देहि देहि मम शत्रून् मारय मारय करालिके हुं फट् स्वाहा ।"

इस मन्त्र से 'पूजन' करें। इसके बाद पुनः ध्यान करके निम्न मन्त्र से 'आवाहन' करें—

"सर्वसिद्धि वर्णिनीये सर्वसिद्धि डाकिनीये वज्रवैरोचनीये इहावह सर्वसिद्धि वर्णिनीये सर्वसिद्धि डाकिनीये वज्र वेरोंचनीये इह तिष्ठ तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व ।"

फिर—"आं ह्रीं क्रों हंसः" से प्राणप्रतिष्ठा कर—

"ॐ आं खड्गाय हृदयाय स्वाहा ।

ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा ।

ॐ ऊं सुवज्राय शिखायै स्वाहा ।

ॐ ऐं पाशाय कवचाय स्वाहा ।

ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय स्वाहा ।

ॐ अः सुरक्षा सुरक्षायास्त्राय फट् ।"

से षडङ्गपूजा कर, यथाशक्ति उपहार समर्पित कर, पूजा के अन्त में निम्नलिखित मन्त्र से बलि प्रदान करें—

"वज्रवैरोचनीये देहि देहि एहि एहि गृह्ण गृह्ण इयं बलिं मम सिद्धि देहि देहि मम शत्रून् मारय मारय करालिके हुं फट् स्वाहा।"

फिर,

देवी के दाँई ओर—

ॐ वर्णिन्यै नमः।

देवी के बाँई ओर—

ॐ डाकिन्यै नमः।

से पूजा करें। फिर देवी के अङ्ग में षडङ्ग पूजा कर, दाँई तथा बाँई ओर क्रमशः

ॐ शंखनिधये नमः।

ॐ पद्म निधये नमः।

से पूजा कर, पद्म के अष्टदलों में पूर्वादिक्रम से पूजा करें—

ॐ लक्ष्यै नमः।

ॐ लज्जायै नमः।

ॐ मायायै नमः।

ॐ वाण्यै नमः।

कोण-दलों में—

ॐ ब्रह्मणे नमः।

ॐ विष्णवे नमः।

ॐ रुद्राय नमः।

ॐ ईश्वराय नमः।

मध्य में—

ॐ सदाशिवाय नमः।

फिर पाँच पुष्पांजलियाँ देकर निम्नानुसार आवरण-पूजा करें—

आवरण-पूजा

अग्नि, ईशान, नैऋत्य, वायुकोण तथा चारों दिशाओं में—"ॐ आं सङ्गाय हृदयाय नमः" इत्यादि से षडङ्गपूजा करें।

अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से—

ॐ ह्रीं काल्यै नमः ।

ॐ ह्रीं वर्णिन्यै नमः ।

ॐ ह्रीं डाकिन्यै नमः ।

ॐ ह्रीं भैरव्यै नमः ।

ॐ ह्रीं महाभैरव्यै नमः ।

ॐ ह्रीं इन्द्राक्ष्यै नमः ।

ॐ ह्रीं पिङ्गाक्ष्यै नमः ।

ॐ ह्रीं संहारिण्यै नमः ।

उक्त मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अष्टदेवियों का पूजन करें । फिर पद्म-मध्य में **'हूं फट् नमः, स्वाहायै नमः'** से पूजा कर, देवी के दक्षिण ओर **'सम्राड छन्द से नमः'**, उत्तर की ओर **'सर्व वर्णेभ्यो नमः'**, पुनः दक्षिण ओर **'बीजशक्तिभ्यां नमः'** से पूजन कर, पत्रों के अग्रभाग में पूर्वादि क्रम से पूजा करें । यथा—

ॐ ब्राह्म्यै नमः ।

ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

ॐ कौमार्यै नमः ।

ॐ वैष्णव्यै नमः ।

ॐ वाराह्यै नमः ।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

ॐ चामुण्डायै नमः ।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।

फिर चारों दिशाओं के द्वारों में—

ॐ करालाय नमः ।

ॐ विकरालाय नमः ।

ॐ अतिकरालाय नमः ।

ॐ महाकरालाय नमः ।

से पूजा कर, धूपादि से विसर्जन तक के कर्म को समाप्त करें ।

विसर्जन में यह विशेषता है कि पहले 'संहार मुद्रा' प्रदर्शित करें। फिर अपनी अंजलि में वाम-नासापुट से योनिमुद्रा-समारूढा प्रदीप-कलिका के समान समुज्ज्वला एवं कृष्णपक्ष के चन्द्रमा के समान क्रमशः क्षयशीला इष्टदेवता का ध्यानपूर्वक आरोपण कर, सूर्यमण्डल में निम्नलिखित मन्त्र से 'समर्पण' करें—

"उत्तरे शिखरे देवि भूभ्यापर्वत वासिनी।
ब्रह्मयोनि समुत्पन्ने गच्छ देविममान्तरम् ॥"

पुरश्चरण

भगवती छिन्नमस्ता 'सिद्ध विद्या' है। इनके मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप से होता है। इस देवता के बलिदान के सम्बन्ध में 'भैरवी-तन्त्र' में लिखा है कि साधक रात्रि के समय मत्स्य, मांस, सुरा अथवा अपनी सामर्थ्य के अनुसार मधुरादि विविध उपहारों द्वारा बलि प्रदान करें। बलि-प्रदान के समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये छिन्नमस्ते देवि एह्येहि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं देहि देहि ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"

भगवती छिन्नमस्ता के अन्य मन्त्र

भगवती छिन्नमस्ता के अन्य मन्त्र निम्नलिखित हैं—

(१) "ह्रीं क्लीं हूं ऐं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा।"

यह मन्त्र भुक्ति-मुक्ति दायक है। इसके न्यास-पूजन आदि विधियाँ भी पूर्ववत् हैं।

(२) "ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हूं फट्।"

पाठान्तर से इस मन्त्र का स्वरूप निम्नानुसार होता है—

"ह्रीं क्लीं हूं ऐं हूं फट्।"

यह मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली तथा साक्षात् मुक्तिदायक है। इसकी पूजा पद्धति पूर्ववत् है तथा ध्यान का स्वरूप नीचे लिखे अनुसार बताया गया है—

"प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्तृकां,
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा।

नागाबद्ध शिरोमणि त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां,
रत्यासक्त मनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभां ।।
दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्रीं तथा खर्परं,
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ।
देव्याश्छिन्न कबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्ती मुदा,
नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ।
वामे कृष्णतनुस्तथैव दधती खड्गं तथा खर्परं,
प्रत्यालीढ पदा कबन्ध विगलद्रक्त पिबन्ती मुदा ।
सैषा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी,
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ।।"

भावार्थः—देवी अपने दाँये पाँव को आगे तथा बाँये पाँव को पीछे रखे खड़ी हैं। वे अपने हाथों में कटा हुआ मस्तक तथा खड्ग लिए हैं। वे वस्त्र-रहित हैं तथा अपने कटे हुए कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का पान कर रही हैं। उनके मस्तक पर सर्प से बँधी हुई मणि है। उनके तीन नेत्र हैं। वक्षःस्थल पर कमलपुष्पों की माला सुशोभित है। वे रत्यासक्त मदन के ऊपर खड़ी हुई हैं। उनका शरीर जवापुष्प के समान रक्तवर्ण का है। ऐसी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

देवी के दाँई ओर श्वेतवर्ण तथा खुले केशों वाली, कैंची तथा खप्पर लिए हुए 'वर्णिनी' देवी स्थित हैं। वे देवी के कटे हुए कण्ठ से निकलने वाली रक्त-धारा का पान कर रही हैं उनके मस्तक पर नागबद्ध मणि है। सभी देवता उनका ध्यान करते रहते हैं।

देवी के बाँई ओर कृष्णवर्णा, खड्ग तथा खप्पर हाथ में लिए हुए 'डाकिनी' नामक देवी हैं। ये भी देवी के कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का पान कर रही हैं। इनका दाँया पाँव आगे तथा बाँया पाँव पीछे की ओर स्थित है। ये तामसी देवी प्रलयकाल में सम्पूर्ण संसार को खा जाने में समर्थ हैं तथा परात्परा शक्ति हैं।

देवी के अन्य मन्त्र निम्नलिखित हैं—

(३) "ॐ ह्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है।

(४) "'हूं' ।"

यह एकाक्षर मन्त्र त्रैलोक्य को वश में करता है।

(५) "हूं स्वाहा ।"

इस मन्त्र की आराधना से तीनों भुवन मोहित हो जाते हैं।

(६) "ॐ हूं स्वाहा ॐ ।"

इस मन्त्र के जप से धर्मार्थं काममोक्षात्मक चतुर्वर्ग की प्राप्ति होती है।

(७) "ॐ वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र सबके तेज का अपहरण करता है। इसकी आराधना से त्रिभुवन आकृष्ट होता है तथा चतुर्वर्ग की प्राप्ति होती है।

(८) "श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र सब प्रकार का वैभव देता है।

(९) "ह्रीं श्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र सबका आकर्षण करता है।

(१०) "हूं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र सब पापों को नष्ट करता है।

(११) "ऐं श्रीं ह्रीं हूं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र वाक्-सिद्धि देता है।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र संख्या ८ से ११ तक के आदि में श्रीं बीज लगाने से चार प्रकार के 'सप्तदशाक्षर मन्त्र' बनते हैं। इनकी आराधना से साधक को भोग तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

(१२) "श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये श्री ह्रीं हूं ऐं फट् स्वाहा ।"

यह अष्टदशाक्षर-मन्त्र अभीष्टदायक है।

(१३) उक्त अष्टदशाक्षर मन्त्र के आदि में 'ॐ' लगाने से उन्नीस अक्षरों वाला मन्त्र बनता है।

उक्त दोनों मन्त्र ब्रह्म विद्या रूप, अत्यन्त उत्तम, भुक्ति-मुक्ति दायक तथा मङ्गलमय हैं।

पूर्वोक्त अष्टदशाक्षर मन्त्र को 'श्रीं', ह्रीं, 'हूं' तथा 'ऐं' इन चार बीजों से अलग-अलग पुटित करने से चार प्रकार के उन्नीस अक्षर वाले मन्त्र बनते हैं, जो चतुर्वर्ग फलदायक हैं।

(१४) "ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा ।"

यह चतुर्दशाक्षर मन्त्र सर्वैश्वर्यदायक तथा सर्व मोहनकारी है।

(१५) "ह्रीं ॐ ऐं ॐ वज्रवैरोचनीये फट् स्वाहा ।"

यह चौदह अक्षर का मन्त्र चतुर्वर्ग-फलदाता तथा जन्म मृत्यु से छुड़ाने वाला है ।

(१६) "श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।"

यह षोडशाक्षर मन्त्र समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है ।

टिप्पणी—उक्त सभी मन्त्रों के ऋषि क्रोध भैरव, छन्द सम्राट तथा देवता छिन्नमस्ता हैं ।

इन सभी मन्त्रों के क ङ्गन्यास आदि में प्रणव, छः दीर्घस्वर युक्त स्वरवर्ण तथा **'खड्गाय स्वाहा'** इस योजना से करना चाहिए । ये सभी मन्त्र 'सुसिद्ध' हैं । इनके सम्बन्ध में अरि-दोषादि का विचार नहीं किया जाता है । इन्हें सभी वर्ण तथा आश्रम के मनुष्य, यहाँ तक कि शूद्र भी जप सकते हैं । केवल जिन मन्त्रों के आदि में **'प्रणव'** (ॐ) है । उन मन्त्रों को जपने का अधिकार शूद्र के लिए नहीं है ।

इन मन्त्रों के जप से भोग तथा मोक्ष की उपलब्धि होती है । यदि कोई स्त्री इन मन्त्रों को ग्रहण करे तो वह 'डाकिनी' होती है तथा पति-पुत्रादि से रहित होकर सिद्ध योगिनी के समान विचरण करती है ।

उक्त सभी मन्त्रों के ध्यान-पूजन आदि पूर्ववत् हैं ।

भगवती छिन्नमस्ता का एक ध्यान निम्नानुसार भी कहा गया है—

"नाभौ शुद्धारविन्दं तदुपरि कमलं मण्डलं चण्डरश्मेः,
संसारस्यैकसारां त्रिभुवन जननीं धर्मकामोदयाढ्यां ।
तस्मिन् मध्ये त्रिकोणे त्रितयतनु धरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां,
तां वन्दे ज्ञानरूपां निरिक्लभयहरां योगिनी योगमुद्रां ।।"

भावार्थ—"नाभिदेश में शुभ्रवर्ण के पद्म, उसके ऊपर निर्मल सूर्यमण्डल का ध्यान कर, उसके मध्यस्थ त्रिकोण में त्रिमूर्ति धारिणी, संसार की सारभूता, त्रिलोक जननी, धर्म-काम तथा दया से सम्पन्न, प्रशस्त, ज्ञानस्वरूपा सर्वभय नाशिनी, योगिनी, छिन्नमस्ता देवी की मैं वन्दना करता हूँ ।"

५ | रेणुका शबरी मन्त्र प्रयोग

भगवती रेणुका शबरी

'रेणुका शबरी विद्या' भी छिन्नमस्ता की भाँति ही होती है। इसका मन्त्र है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।"

विनियोग

अस्य श्री रेणुका शबरी मन्त्रस्य भैरवऋषिः पंक्ति छन्दः रेणुका शबरी देवता ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यास

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः।
श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। शिरसे स्वाहा।
ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। शिखायै वषट।
क्रो अनामिकाभ्यां नमः। कवचाय हुम्।
ऐं कनिष्ठकाभ्यां नमः। नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान

"हेमाद्रिसानावुद्याने नानाद्रुममनोहरे।
रत्नमण्डपमध्यस्थवेदिकायांस्थितां स्मरेत्।
गुञ्जाफला कल्पितहाररम्यां।
श्रुत्योः शिखण्डं शिखिनो वहंतीम्॥

कोदण्डबाणौ दधतीं करास्यां ।
कटिस्थवल्कां शबरीं स्मरेयम् ॥

भावार्थ—"मेरु शिखर पर अनेक रमणीय वृक्षों के उद्यान में रत्नमण्डप के मध्य में वेदिका पर विराजमान देवी का ध्यान करना चाहिए।

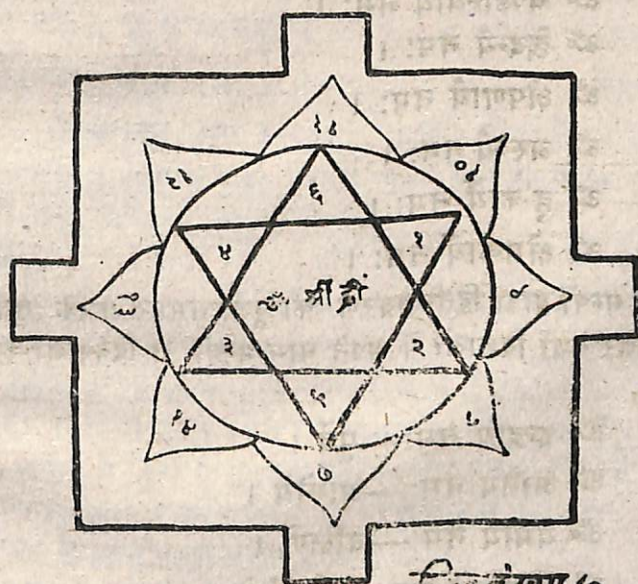
गुञ्जाफलों द्वारा निर्मित हार से सुशोभित, कानों में मोरपंख के कुण्डल धारण करने वाली दोनों हाथों में धनुष एवं वाण तथा कटि में वल्कल धारण करने वाली शबरी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।"

जप एवं हवन

उक्त प्रकार से ध्यान करके ५ लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना चाहिए तथा विल्ववृक्ष की लकड़ी की प्रज्ज्वलित अग्नि में विल्वफलों से दशांश हवन करना चाहिए।

पीठ-पूजा एवं आवरण-पूजा

षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर से सुशोभित यन्त्र पर देवी का पूजन करें। यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—



चित्र संख्या ७

रेणुका शबरी पूजन यन्त्र

पूर्वोक्त "ॐ आधार शक्तये नमः" से लेकर "ॐ रतिकामाभ्यां नमः" तक पीठ-पूजन कर, जपा आदि ६ पीठ शक्तियों का पूजन करें। फिर उस पीठ पर मूल-मन्त्र से विधिवत् रेणुका शबरी देवी का पूजन कर, आवरण-पूजा करें।

ॐ हृदयाय नमः।

श्रीं शिरसे स्वाहा।

ह्रीं शिखायै वषट्।

क्रों कवचाय हुम्।

ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं अस्त्राय फट्।

उक्त मन्त्रों से षट्कोण में षडङ्ग-पूजा करें। इस प्रकार प्रथम आवरण का पूजन करके द्वितीय आवरण में अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा हुंकारी आदि शक्तियों का पूजन करें। यथा—

ॐ हुंकार्यै नमः।

ॐ खेचर्यै नमः।

ॐ चण्डास्यायै नमः।

ॐ छेदन्यै नपः।

ॐ क्षेपणायै नमः।

ॐ अस्त्र्यै नमः।

ॐ हुंकार्यै नमः।

ॐ क्षेमकार्यै नमः।

उक्त मन्त्रों द्वारा द्वितीयावरण की पूजा समाप्त करके तृतीय आवरण में भूपुर के भीतर दशों दिशाओं में अपने नाम-मन्त्रों से दिक्पालों का पूजन करें। यथा—

ॐ इन्द्राय नमः—पूर्वे।

ॐ अग्नेये नमः—आग्नेये।

ॐ यमाय नमः—दक्षिणे।

ॐ निर्ऋतये नमः—नैर्ऋत्ये।

ॐ वरुणाय नमः—पश्चिमे।

ॐ वायवे नमः—वायव्ये ।

ॐ सोमाय नमः—उत्तरे ।

ॐ ईशानाय नमः—ऐशान्ये ।

ॐ ब्रह्मणे नमः—पूर्वेशानयोर्मध्ये ।

ॐ अनन्ताय नमः—नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये ।

इसके पश्चात् चतुर्थ आवरण में भूपुर के बाहर वज्र आदि आयुधों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

ॐ वज्राय नमः ।

ॐ शक्तये नमः ।

ॐ दण्डाय नमः ।

ॐ पाशाय नमः ।

ॐ गदायै नमः ।

ॐ पद्माय नमः ।

ॐ खड्गाय नमः ।

ॐ अङ्कुशाय नमः ।

ॐ शूलाय नमः ।

ॐ चक्राय नमः ।

उक्त विधि से आवरण-पूजा करके, पुनः देवी का पूजन करें तथा पाँच पुष्पांजलियाँ देकर विधिवत् जप करें ।

काम्य-प्रयोग

मन्त्र-जप सम्पूर्ण हो जाने पर काम्य-प्रयोग निम्नानुसार किये जाते हैं ।

१. मल्लिका पुष्पों से हवन करने पर लोग वशीभूत होते हैं ।

२. ईख-खण्डों से हवन करने पर धन-लाभ होता है ।

३. पञ्चगव्य से हवन करने पर गो-धन में वृद्धि होती है ।

४. अशोक के फूलों से हवन करने पर पुत्र प्राप्ति होती है ।

५. कमल-पुष्पों से हवन करने पर रानी वश में होती है ।

६. अन्न से हवन करने पर अन्न प्राप्त होता है ।

७ महुए के पुष्प से होम करने पर सभी वांछित कामनाएँ पूर्ण होती हैं । कलियुग में यह विद्या शीघ्र सिद्धि देती है ।

६ | छिन्नमस्ता स्तोत्र, कवच, हृदय आदि

इस प्रकरण में भगवती छिन्नमस्ता के स्तोत्र, कवच, हृदय, सहस्रनाम आदि संकलित किये गये हैं।

मन्त्र-जप के उपरान्त इनका पाठ विशेष फलदायक होता है।

यदि मन्त्र-जप के बिना केवल इन्हीं का नित्य पाठ किया जाय, तो भी पाठक की मनोभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं—

त्रैलोक्य विजय छिन्नमस्ता कवचम्

श्री देव्युवाच :

कथिताश्छिन्नमस्ताया याया विद्याः सुगोपिताः ।
त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया ॥१॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ।
त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो ॥२॥

भैरव उवाच :

श्रृणु वक्ष्यामि देवेशि सर्वदेव नमस्कृते ।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं सर्वमोहनम् ॥३॥
सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुरजयप्रदम् ।
धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयी विभुः ॥४॥
ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धाराणात्पठनाद्यतः ।
कर्त्ता पाता च संहर्ता भुवनानां सुरेश्वरि ॥५॥
न देयं परशिष्येभ्य अभक्तेभ्यो विशेषतः ।
देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकाय च ॥६॥

विनियोग :

देव्याश्चच्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः ।
ऋषिर्विराट् छन्दस्तु देवताच्छिन्नमस्तका ॥७॥
त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ॐ हूंकारो मे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा ॥८॥
ह्रीं ह्रीं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्त्रं दिगम्बरा ।
श्रीं ह्रीं ह्रूं ऐं दृशौ पातु मुण्डे कर्तृधरापि सा ॥९॥
सा विद्या प्रणवाद्यन्ता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु ।
वज्रवैरोचनीये हूं फट् स्वाहा च भ्रुवादिकम् ॥१०॥
घ्राणं पातु छिन्नमस्तामुण्डकर्तृविधारिणी ।
श्रीमायाकूर्चवाग्बीजैर्वज्र वैरोचनीयहूं ॥११॥
हूं फट् स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरूपिणी ।
स्वपार्श्वेवर्णिनी चासृग्धारा पाययती मुदा ॥१२॥
वदनं सर्वदा पातु छिन्नमस्ता स्वशक्तिका ।
मुण्डकर्तृधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी ॥१३॥
वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु ।
रामाद्या पातु जिह्वाश्च लज्जाद्या पातु कण्ठकम् ॥१४॥
कूर्च्चाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम् ।
रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी ॥१५॥
मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगम्बरा ।
कूर्चेन पुटिता देवी पृष्ठदेशं सदावतु ॥१६॥
वाग्बीजपुटिता चैषा मध्य पातु सशक्तिका ।
ईश्वरी कूर्चवाग्बीजैर्वज्र वैरोचनीयहूं ॥१७॥
हूफट्स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्यसमप्रभा ।
छिन्नमस्ता सदा पायादूरुयुग्मं सशक्तिका ॥१८॥

ह्लीं ह्लूं वर्णिनो जानु श्रीं ह्लीं च डाकिनी पदम् ।
सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥१६॥
प्राच्यां पायादेकलिङ्गा योगिनी पावकेऽवतु ।
डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम् ॥२०॥
नैऋर्त्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु ।
इन्द्राणी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे ॥२१॥
संहारिणी सदा पातु शिवकोणे सकर्तृका ।
इत्यष्ट शक्तयः पान्तु दिग्विदिक्षु सकर्तृकाः ॥२२॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वे ह्लीं ह्लीं मां पातु पावके ।
ह्लूं ह्लूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु ॥२३॥
क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैऋर्त्यां ह्लीं ह्लीं च पश्चिमेऽवतु ।
हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे ॥२४॥
महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु ।
तारा मायावधूः कूर्चं फट्कारीयं महामनुः ॥२५॥
खड्गकर्तृधरा चारा चोर्ध्वदेशं सदावतु ।
ह्लीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले पातु चैकजटा सती ॥२६॥
तारा तु सहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती ।
इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥२७॥
यद्धृत्वा पठनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः ।
सुरासुरमुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम् ॥२८॥
यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम् ।
भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च खेचराः ॥२६॥
आज्ञा गृह्णन्ति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः ।
एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ॥३०॥
देवीमभ्यर्च्य गन्धाद्यैर्मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
सम्वत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३१॥

भूर्जे विलिखितं चैत्तत्गुटिकां काञ्चनस्थिताम् ।
धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा यदि वान्यतः ॥३२॥
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।
तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनाम्बुजे ॥३३॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यान्ति सौम्यताम् ।
इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम् ।
सोऽपि शस्त्र प्रहारेणमृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥३४॥

॥ इति भैरवतन्त्रे भैरवभैरवीसम्वादे त्रैलौक्यविजयं
नाम छिन्नमस्ता कवचं समाप्तम् ॥

श्रीछिन्नमस्तास्तोत्रम्

ईश्वर उवाच :

नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डल चण्डरश्मेः ।
संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्मकमर्थिदात्रीम् ॥
तस्मिन्मध्ये त्रिभांगे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां ।
तां बन्दे छिन्नमस्तां शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥१॥
नाभौ शुभ्रसरोज वक्त्रबिलसद्बन्धूकपुष्पारुणं ।
भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत् ॥
तन्मध्ये बिपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनीपृष्ठस्थां ।
तरुणार्क कोटिविलसत्तेजःस्वरूपां शिवाम् ॥२॥
वामे च्छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां ।
प्रत्यालीढपदां दिगंतवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम् ॥
छिन्नात्मीयशिरस्समुच्छलदसृग्धारां पिबंतीं परां ।
बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम् ॥३॥
वामादन्यत्र नालं बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः ।
गायंतीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्तृकामुग्ररूपाम् ॥

रक्ताभां रक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्ति ।
प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योनिमुद्राम् ।।४।।

दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपां प्रचण्डां ।
दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभासाम् ।।
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीमात्ममूर्तिम् ।
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनींवर्द्धयन्तीम् ।।५।।

ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहितां
मन्दपादारविंदे राज्ञै र्योगीन्द्रमुख्यैः ।
प्रतिपदमनिशं चिंतितां चित्यरूपाम् ।।
संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं
छिन्नमस्तां प्रशस्तामिष्टां ।
तामिष्टादात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिंतयामि ।।६।।
उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं ।
त्रैगुण्याज्जगतो यदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ।।
तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थसंसिद्धये ।
यस्याः स्मेरपदारविन्दयुगले लाभं भजन्तेऽमराः ।।७।।
अभिलषितपरस्त्रीयोगपूजापरोऽहं बहुविधजनभाव ।
रम्भसम्भावितोहम् ।।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीसंयुतोऽहं ।
गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहंम् ।।८।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा ।
सर्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ।।९।।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितो भवेत् ।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वांछितार्थप्रदायिनी ।।१०।।

धनं धान्यं सुतान् जायां हयं हस्तिनमेव च ।
वसुन्धरां महाविद्यामष्टसिद्धिर्लभेद्ध्रुवम् ।।११।।

वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघने रम्ये प्रलम्बोदरे ।
खर्वेऽनिर्वचनीयसर्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ॥
कर्त्रीं कुन्दरुचिं विचित्रकलितां ज्ञाने दधाने पदे ।
मातर्भक्तजनानुकम्पिनि महामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्मविरचितं छिन्नमस्ता स्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्री प्रचण्डचण्डिका स्तोत्रम्

आ दयित्रि परमेश्वरि वेदगर्भे
मातः पुरन्दरपुरान्तरलब्धनेत्रे ।
लक्ष्मीमशेषजगतां परिभावयन्तः सन्तो
भजन्ति भवतीन्धनदेशलब्ध्यै ॥१॥
लज्जानुगां विमलविद्रुमकान्तिकान्तां
कान्तानुरागरसिकाः परमेश्वरि त्वाम् ।
ये भावयन्ति मनसा मनुजास्त एते
सीमन्तिनीभिरनिशं परिभाव्यमानाः ॥२॥
मायामयीं निखिलपातककोटिकूट-
विद्राविणीं भृशमसंशयिनो भजन्ति ।
त्वां पद्मसुन्दरतनुं तरुणारुणास्यां
पाशांकुशाभयवराद्यकरां वरास्त्रैः ॥३॥
ते तर्ककर्कशधियः श्रुतिशास्त्रशिल्पैश्छन्दो-
भिशोभितमुखाः सकलागमज्ञाः ।
सर्वज्ञलब्धविभवाः कुमुदेन्दुवर्णां ये
वाग्भवे च भवतीं परिभावयन्ति ॥४॥
वज्रप्रणुन्नहृदयासमयद्रुहस्ते
वैरोचने मदनमन्दिरगास्यमातः ।

मायाद्वयानुगतविग्रहभूषिताऽसि
दिव्यास्त्रवह्निवनितानुगताऽसि धन्ये ।।५।।
वृत्तत्रयाष्टदलवह्निपुरः परस्य
मार्तण्डमण्डलगतां परिभावयन्ति ।
ये वह्निकूटसदृशीं मणिपूरकान्तस्ते
कालकंटकबिडम्बनचञ्चवः स्युः ।।६।।
कालागुरुभ्रमरचन्दनकुण्डगोल-
खण्डैरनंगमदनोद्भवमादनीभिः ।
सिंदूरकुंकुमपटीरहिमैर्विधाय सन्मण्डलं
तदुपरीह यजेन्मृडानीम् ।।७।।
चञ्चत्तडिन्मिहिरकोटिकरां विचेलामुद्य-
त्कबन्धरुधिरां त्रिभुजां त्रिनेत्राम् ।
वामे विकीर्णकचशीर्षकरे परे
तामीडे परं परमकर्तृकया समेताम् ।।८।।
कामेश्वरांगनिलयां कलया
सुधांशोर्विभ्राजमानहृदयामपरे स्मरन्ति ।
सुप्ताहिराजसदृशीं परमेश्वरस्थां
त्वामद्रिराजतनये च समानमानाः ।।९।।
लिंगत्रयो परिगतामपि
वह्निचक्रपीठानुगां सरसिजासनसन्निविष्टाम् ।
सुप्ताम्प्रबोध्य भवतीं मनुजा गुरूक्तहूंकार
वायुवशिभिर्मनसा भजन्ति ।।१०।।
शुभ्रासि शान्तिककथासु तथैव पीता
स्तम्भे रिपोरथ च शुभ्रतरासि मातः ।
उच्चाटनेप्यसितकर्मसुकर्मणि त्वं
संसेव्यसे स्फटिककान्तिरनन्तचारे ।।११।।

त्वामुत्पलैर्मधुयुतैर्मधुनोपनीतैर्गव्यैः
पयोविलुलितैः शतमेव कुण्डे ।
साज्यैश्चतोषयति यः पुरुषस्त्रिसंध्यं
षण्मासतो भवति शक्रसमो हि भूमौ ॥१२॥
जाग्रत्स्वपन्नपि शिवे तव मन्त्रराजमेवं
विचिन्तयति यो मनसाविधिज्ञः ।
संसारसागरसमुद्धरणे वहित्रं चित्रं
न भूतजननेपि जगत्सु पुंसः ॥१३॥
इयं विद्या वन्द्या हरिहरविरंचिप्रभृतिभिः ।
पुरारातेरन्तः पुरमिदमगम्यं पशुजनैः ॥
सुधामन्दानन्दैः पशुपतिसमानव्यसनिभिः ।
सुधासेव्यैः सद्भिर्गुरुचरणसंसारचतुरैः ॥१४॥
कुण्डे वा मण्डले वा शुचिरथ
मनुना भावयत्येव मन्त्री ।
संस्थाप्योच्चैर्जुहोति प्रसवसुफलदैः
पद्मपालाशकानाम् ॥
हैमं क्षीरैस्तिलैर्वा समधुककुसुमैर्मालतीबन्धु-
जातीश्वेतैरब्धंसकानामपि वरसमिधा संपदे सर्वसिद्ध्यै ॥१५॥
अन्धः साज्यं समांसं दधियुतमथ
वा योन्वहं यामिनीनां ।
मध्ये देव्यैददाति प्रभवति
गृहगा श्रीरमुष्यावखंडा ॥
आज्यं मांसं सरक्तं तिलयुतमथ
वा तण्डुलं पायसं वा ।
हुत्वा मांसं त्रिसंध्यं स भवति
मनुजोभूतिभिर्भूतनाथः ॥१६॥

इदं देव्या स्तोत्रं पठति मनुजो यस्त्रिसमयं ।
शुचिर्भूत्वा विश्वे भवति धनदो वासवसमः ।।
वशा भूपाः कान्ता निखिलरिपुहन्तुः सुरगणा ।
भवन्त्युच्चैर्वाचो यदिह ननु मासैस्त्रिभिरपि ।।१७।।

।। इति श्रीशंकराचार्यविरचितः प्रचण्डचण्डिकास्तवराजः समाप्तः ।।

श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम्

श्रीपार्वत्युवाच :

नाम्नां सहस्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम् ।
कथितं भवता शम्भोसद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ।।१।।
पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि ।
सहस्रनाम पाठेन अशक्तो यः पुमान् भवेत् ।।२।।
तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय ।

श्रीसदाशिव उवाच :

अष्टोत्तरशतं नाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ।।३।।
सस्रस्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चतम् ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीछिन्नमस्ता देवता मम सकलसिद्धिप्राप्तये पाठे विनियोगः ।

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी ।
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभञ्जिनी ।।४।।
महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी ।
क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला ।।५।।
कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी ।
वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी ।।६।।

डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता ।
डाकिनीसङ्गनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता ॥७॥
खाट्वाङ्गधारिणी खर्वा खङ्गखर्परधारिणी ।
प्रेतासना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी ॥८॥
छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी ।
घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी ॥९॥
योगिनी योग.नेरता जपयज्ञपरायणा ।
योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी ॥१०॥
योनिमुद्रा योनिगम्या योनियन्त्रनिवासिनी ।
यन्त्ररूपा यन्त्रमयी यन्त्रेशी यन्त्रपूजिता ॥११॥
कीर्त्या कपर्द्दिनी कालों कङ्काली कलकारिणी ।
आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा ॥१२॥
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी ।
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ॥१३॥
भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा ।
भवाराध्या भवनुता भवसागरतारिणी ॥१४॥
भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका ।
भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥१५॥
सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता ।
सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धासिद्धनिषेविता ॥१६॥
शुभदा सुभगा शुद्धा शुद्धसत्त्वा शुभावहा ।
श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी ॥१७॥
शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गलकारिणी ।
शिवा शान्ता शान्तिरूपा मृडानी मदनातुरा ॥१८॥
इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्लभम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१९॥

किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ।
मारणं मोहनं देवि ह्युच्चाटनमतः परम् ॥२०॥
स्तम्भनादिककर्माणि ऋद्धयः सिद्धयोऽपि च ।
त्रिकालपठनादस्य सर्वे सिद्ध्यन्त्नसंशयम् ॥२१॥
महोत्तमं स्तोत्रमिदं वरानने
मयेरितं नित्यमनन्युबुद्धयः ।
पठन्ति ये भक्तियुता नरोत्तमा
भवेन्नतेषां रिपुभिः पराजयः ॥२२॥

हे देवि ! यह परमदुर्लभ स्तोत्र मैंने तुम्हें बताया है । यह गोप्य से भी गोप्य है । इसको प्रयत्न से गुप्त रखना चाहिये । हे प्राणवल्लभे ! तुम्हारे सामने यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ ? हे देवि ! मारण, मोहन, उच्चाटन और स्तम्भन आदि कर्म, समस्त ऋद्धियाँ तथा सिद्धियाँ भी तीनों संध्याओं में इसका पाठ करने से सिद्ध हो जाती हैं । इसमें कोई संशय नहीं है । हे वरानने ! जो अनन्य बुद्धि वाले मनुष्य हैं वे मेरे कहे इस परमोत्तम स्तोत्र को नित्य भक्तिपुर्वक पढ़ते हैं, वे मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं । शत्रुओं से उनकी पराजय नहीं होती ।

॥ इति श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनानस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीछिन्नमस्ता सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्रीदेव्युवाच :

वद देव महादेव सर्वशास्त्रविदांवर ।
कृपां कुरु जगन्नाथ कथयस्व मम प्रभो ॥१॥
प्रचण्डचण्डिका देवी सर्वलोकहितैषिणी ।
तस्याश्च कथितं सर्वं स्तवं च कवचादिकम् ॥२॥
इदानीं छिन्नमस्ताया नाम्नां साहस्रकं शुभम् ।
त्वं प्रकाशय मे देव कृपया भक्तवत्सल ॥३॥

श्रीशिव उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि छिन्नायाः सुमनोहरम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनोहितम् ॥४॥

न वक्तव्यं च कुत्रापि प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
तच्छृणुष्व महेशानि सर्वं तत्कथयामि ते ॥५॥
विना पूजां विना ध्यानं विना जाप्येन सिद्ध्यति ।
विना ध्यानं तथा देवि विना भूतादिशोधनम् ॥६॥
पठनाद्देय सिद्धिः स्यात्सत्यंसत्यं वरानने ।
पुरा कैलासशिखरे सर्वदेवसभालये ॥७॥
परिपप्रच्छ कथितं तथा शृणु वरानने ॥८॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीप्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्रस्य भैरवऋषिः सम्राट्छन्दः प्रचण्डचण्डिका देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः ।

ॐ प्रचण्डचण्डिका चण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ।
चामुण्डा च सुचण्डा च चपला चारुदेहिनी ॥९॥
ललज्जिह्वा चलद्रक्ता चारुचन्द्रनिभानना ।
चकोराक्षी चण्डनादा चञ्चला च मनोन्मदा ॥१०॥
चेतना चितिसंस्था च चित्कला ज्ञानरूपिणी ।
महाभयङ्करी देवी वरदाभयधारिणी ॥११॥
भवाढ्या भवरूपा च भवबन्धविमोचिनी ।
भवानी भुवनेशी च भवसंसारतारिणी ॥१२॥
भवाब्धिर्भवमोक्षा च भवबन्धविघातिनी ।
भागीरथी भगस्था च भाग्यभोग्यप्रदायिनी ॥१३॥
कमला कामदा दुर्गा दुर्गबन्धविमोचिनी ।
दुर्द्दर्शना दुर्गरूपा दुर्ज्ञेया दुर्गनाशिनी ॥१४॥
दीनदुःखहरा नित्या नित्यशोकविनाशिनी ।
नित्यानन्दमयी देवी नित्यं कल्याणकारिणी ॥१५॥
सर्वार्थसाधनकरी सर्वसिद्धिस्वरूपिणी ।
सर्वक्षोभणशक्तिश्च सर्वविद्राविणी परा ॥१६॥

सर्वरञ्जनशक्तिश्च सर्वोन्मादस्वरूपिणी ।
सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥१७॥
सकला निष्कला सिद्धा कलातीता कलामयी ।
कुलज्ञा कुलरूपा च चक्षुरानन्ददायिनी ॥१८॥
कुलीना सामरूपा च कामरूपा मनोहरा ।
कमलस्था कञ्जमुखी कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥१९॥
कुलरूपा कोटराक्षी कमलैश्वर्यदायिनी ।
कुन्ती ककुद्मिनी कुल्ला कुरुकुल्ला करालिका ॥२०॥
कामेश्वरी काममाता कामतापविमोचिनी ।
कामरूपा कामसत्त्वा कामकौतुककारिणी ॥२१॥
कारुण्यहृदया क्रीं क्रीं मन्त्ररूपा च कोटरा ।
कौमोदकी कुमुदिनी कैवल्या कुलवासिना ॥२२॥
केशवी केशवाराध्या केशिदैत्यनिषूदिनी ।
क्लेशहा क्लेशरहिता क्लेशसङ्घविनाशिनी ॥२३॥
कराली च करालास्या करालासुरनाशिनी ।
करालचर्मासिधरा करालकलनाशिनी ॥२४॥
कङ्किनी कङ्कनिरता कपालवरधारिणी ।
खड्गहस्ता त्रिनेत्रा च खण्डमुण्डासिधारिणी ॥२५॥
खलहा खलहन्त्री च क्षरन्ती खगता सदा ।
गङ्गागौतमपूज्या च गौरीगंधर्ववासिनी ॥२६॥
गन्धर्वा गगणाराध्या गणा गन्धर्वसेविता ।
गणत्कारगणा देवी निर्गुणा च गुणात्मिका ॥२७॥
गुणता गुणदात्री च गुणगौरवदायिनी ।
गणेशमाता गम्भीरा गणना ज्योतिकारिणी ॥२८॥
गौराङ्गी च गयागम्यागौतमस्थानवासिनी ।
गदाधरप्रिया ज्ञेया ज्ञानगम्या गुहेश्वरी ॥२९॥

गायत्री च गुणवती गुणातीता गुणेश्वरी ।
गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी ॥३०॥
गणाध्यक्षनुता नित्या गणाध्यक्षप्रपूजिता ।
गिरीशरमणी देवी गिरीशपरिवन्दिता ॥३१॥
गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता ।
गुरुपूज्या गुरुयुता गुरुसेवनतत्परा ॥३२॥
गन्धद्वारा च गन्धाढ्या गन्धात्मा गन्धकारिणी ।
गीर्वाणपतिसम्पूज्या गीर्वाणपतितुष्टिदा ॥३३॥
गीर्वाणाधीशरमणी गीर्वाणाधीशवन्दिता ।
गीर्वाणाधीशसंसेव्या गीर्वाणाधीश हर्षदा ॥३४॥
गानशक्तिर्गानगम्या गानशक्तिप्रदायिनी ।
गानविद्या गानसिद्धा गानसन्तुष्टमानसा ॥३५॥
गानातीता गानगीता गानहर्षप्रपूरिता ।
गन्धर्वपतिसंहृष्टा गन्धर्वगुणमण्डिता ॥३६॥
गन्धर्वगणसंसेव्या गन्धर्वगणमध्यगा ।
गन्धर्वगणकुशला गन्धर्वगणपूजिता ॥३७॥
गन्धर्वगणनिरता गन्धर्वगणभूषिता ।
घर्घरा घोररूपा च घोरघुर्घुरनादिनी ॥३८॥
घर्मबिन्दुसमुद्भूता घर्मबिन्दुस्वरूपिणी ।
घण्टारवा घनरवा घनरूपा घनोदरी ॥३९॥
घोरसत्त्वा च घनदा घण्टानादविनोदिनी ।
घोरचाण्डालिनी घोरा घोरचण्डविनाशिनी ॥४०॥
घोरदानवदमनी घोरदानवनाशिनी ।
घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मनिषेविता ॥४१॥
घोरतत्त्वमयी देवी घोरतत्त्वविमोचिनी ।
घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मादिपूरिता ॥४२॥

घोरकर्मादिनिरता घोरकर्मप्रवर्द्धिनी ।
घोरभूतप्रमथिनी घोरवेतालनाशिनी ॥४३॥
घोरदावाग्निदमनी घोरशत्रुनिषूदिनी ।
घोरमन्त्रयुता चैव घोरमन्त्रप्रपूजिता ॥४४॥
घोरमन्त्रमनोभिज्ञा घोरमन्त्रफलप्रदा ।
घोरमन्त्रनिधिश्चैव घोरमन्त्रकृतास्पदा ॥४५॥
घोरमन्त्रेश्वरी देवी घोरमन्त्रार्थमानसा ।
घोरमन्त्रार्थतत्त्वज्ञा घोरमन्त्रार्थपारगा ॥४६॥
घोरमन्त्रार्थविभवा घोरमन्त्रार्थबोधिनी ।
घोरमन्त्रार्थनिचया घोरमन्त्रार्थजन्मभूः ॥४७॥
घोरमन्त्रजपरताः घोरमन्त्रजपोद्यता ।
ङकारवर्णनिलया ङकाराक्षरमण्डिता ॥४८॥
ङकारापररूपा च ङकाराक्षररूपिणी ।
चित्ररूपा चित्रनाडो चारुकेशी चलप्रभा ॥४९॥
चञ्चला चञ्चलाकारा चारुरूपा च चण्डिका ।
चतुर्वेदमयी चण्डा चण्डालगणमण्डिला ॥५०॥
चाण्डालच्छेदिनी चण्डतपोनिर्मूलकारिणी ।
चतुर्भुजा चण्डरूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥५१॥
चन्द्रिका चन्द्रकीर्तिश्च चन्द्रकान्तिस्तथैव च ।
चन्द्रास्या चन्द्ररूपा च चन्द्रमौलिस्वरूपिणी ॥५२॥
चन्द्रमालिप्रिया चन्द्रमौलि सन्तुष्टमानसा ।
चकोरबन्धुरमणी चकोरबन्धुपूजिता ॥५३॥
चक्ररूपा चक्रमयी चक्राकारस्वरूपिणी ।
चक्रपाणिप्रिया चक्रपाणिप्रीतिप्रदायिनी ॥५४॥
चक्रपाणिरसाभिज्ञा चक्रपाणिवरप्रदा ।
चक्रपाणिवरोन्मत्ता चक्रपाणिस्वरूपिणी ॥५५॥

चक्रपाणीश्वरी नित्यं चक्रपाणिनमस्कृता ।
चक्रपाणिसमुद्भूता चक्रपाणिगुणास्पदा ॥५६॥
चन्द्रावली चन्द्रवती चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
चन्दनार्चितपादाब्जा चन्दनान्वितमस्तका ॥५७॥
चारुकीर्तिश्चारुनेत्रा चारुचन्द्रविभूषणा ।
चारुभूषा चारुवेषा चारुवेषप्रदायिनी ॥५८॥
चारुभूषा भूषिताङ्गी चतुर्वक्त्रवरप्रदा ।
चतुर्वक्त्रसमाराध्या चतुर्वक्त्रसमाश्रिता ॥५६॥
चतुर्वक्त्रचतुर्वाहा चतुर्थी च चतुर्दशी ।
चित्रा चर्मण्वती चैत्री चन्द्रभागा च चम्पका ॥६०॥
चतुर्द्दशयमाकारा चतुर्दशयमानुगा ।
चतुर्दशयमप्रीता चतुर्दशयमप्रिया ॥६१॥
छलस्था छिद्ररूपा च छद्मदा छद्मराजिका ।
छिन्नमस्ता तथा छिन्ना छिन्नमुण्डविधारिणी ॥५२॥
जयदा जयरूपा च जयन्ती जयमोहिनी ।
जया जीवनसंस्था च जालन्धरनिवासिनी ॥६३॥
ज्वालामुखी ज्वालदात्री जाज्वल्यदहनोपमा ।
जगद्वन्द्या जगत्पूज्या जगत्त्राणपरायणा ॥६४॥
जगती जगदाधारा जन्ममृत्युजरापहा ।
जननी जन्मभूमिश्च जन्मदा जयशालिनी ॥६५॥
ज्वररोगहरा ज्वाला ज्वालामालाप्रपूरिता ।
जम्भारातीश्वरी जम्भारातिवैभवकारिणी ॥६६॥
जम्भारातिस्तुता जम्भारातिशत्रुनिषूदिनी ।
जयदुर्गा जयाराध्या जयकाली जयेश्वरी ॥६७॥
जयतारा ज्यातीता जयशङ्करवल्लभा ।
जयदा जह्नुतनया जलधित्रासकारिणी ॥६८॥

जलधिव्याधिदमनी जलधिज्वरनाशिनी ।
जंगमेशी जाड्यहरा जाड्यसंघनिवारिणी ॥६९॥
जाड्यग्रस्तजनातोता जाड्यरोगनिवारिणी ।
जन्मदात्री जन्महर्त्री जयघोषसमविन्ता ॥७०॥
जपयोगसमायुक्ता जपयोगविनोदिनी ।
जपयोगप्रिया जाप्या जपातीता जयस्वना ॥७१॥
जायाभावस्थिता जाया जायाभावप्रपूरिणी ।
जपाकुसुमसंकांशा जपाकुसुसपूजिता ॥७२॥
जपाकुसुमसम्प्रीता जपा कुसुममण्डिता ।
जपाकुसुमवद्भासा जपाकुसुमरूपिणी ॥७३॥
जमदग्निस्वरूपा च जानकी जनकात्मजा ।
झंझावातप्रमुक्ताङ्गी झोरझंकारवासिनी ॥७४॥
झंकारकारिणो झंझावातरूपा च झंकरी ।
टकाराणुस्वरूपा च टनटंकारनादिनी ॥७५॥
टंकारी टकुवाणी च ठकाराक्षररूपिणी ।
डिण्डिमा च तथा डिम्भा डिण्डुडिण्डिमनादिनी ॥७६॥
ढक्वामयी ढिलमयी नृत्यशब्दा विलासिनी ।
ढक्का ढक्केश्वरी ढक्काशब्दरूपा तथैव च ॥७७॥
ढक्कानादप्रिया ढक्कानादसन्तुष्टमानसा ।
णकारा णाक्षरमयी णाक्षरादिस्वरूपिणो ॥७८॥
त्रिपुरा त्रिपुरमयी त्रिशक्तिस्त्रिगुणात्मिका ।
तामसो च त्रिलोकेशी त्रिपुरा च त्रयीश्वरी ॥७९॥
त्रिविद्या च त्रिरूपा व त्रिवेदा च त्रिरूपिणी ।
तारिणी तरला तारा तारकारिप्रपूजिता ॥८०॥
तारकारिसमाराध्या तारकारिवरप्रदा ।
तारकारिप्रसूस्तन्वी तरुणी तरलप्रभा ॥८१॥

त्रिरूपा च त्रिपुरगा त्रिशूलवरधारिणी ।
त्रिशूलिनी तन्त्रमयी तन्त्रशास्त्रविशारदा ॥८२॥
तन्त्ररूपा तपोमूर्तिस्तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ।
तडित्तडिल्लताकारा तत्त्वज्ञानप्रदायिनी ॥८३॥
तत्त्वज्ञानेश्वरी देवी तत्त्वज्ञानप्रमोदिनी ।
त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेश्वरी ॥८४॥
तापविध्वंसिनी तापसंघनिर्मूलकारिणी ।
त्रासकर्त्री त्रासहर्त्री त्रासदात्री च त्रासहा ॥८५॥
तिथीशा तिथिरूपा च तिथिस्था तिथिपूजिता ।
तिलोत्तमा च तिलदा तिलप्रीता तिलेश्वरी ॥८६॥
त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिपुरी त्रिपुरात्मिका ।
त्रिकुटा त्रिकुटाकारा त्रिकूटाचलमध्यगा ॥८७॥
त्रिजटा च त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरसुन्दरी ।
तृतीया च त्रिवर्षा च त्रिविधा त्रिमतेश्वरी ॥८८॥
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणयन्त्रमध्यगा ।
त्रिसंध्या च त्रिसंध्याच्र्या त्रिपदा त्रिपदास्पदा ॥८९॥
स्थानस्थिता स्थलस्था च धन्यस्थलनिवासिनी ।
थकाराक्षररूपा च स्थूलरूपा तथैव च ॥९०॥
स्थूलहस्ता तथा स्थूला स्थैर्यरूपप्रकाशिनी ।
दुर्गा दुर्गार्तिहन्त्री च दुर्गबन्धविमोचिनी ॥९१॥
देवी दानवसंहन्त्री दनुजेष्ठनिषूदिनी ।
दारापत्यप्रदा नित्या शङ्करार्द्धाङ्गधारिणी ॥९२॥
दिव्याङ्गी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी ।
दीनदु:खहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी ॥९३॥
दीनमाता दीनसेव्या दीनदम्भविनाशिनी ।
दनुजध्वंसिनी देवी देवकी देववल्लभा ॥९४॥

दानवारिप्रियादीर्घा दानवारिप्रपूजिता ।
दीर्घस्वरा दीर्घतनुर्द्दीर्घदुर्गतिनाशिनी ॥९५॥
दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्द्दीर्घकेशी दिगम्बरा ।
दिगम्बरप्रियादान्ता दिगम्बरस्वरूपिणी ॥९६॥
दुःखहीना दुःखहरा दुःखसागरतारिणी ।
दुःखदारिद्र्यशमनी दुःखदारिद्र्यकारिणी ॥९७॥
दुःखदा दुस्सहा दुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी ।
देववामा देवसेव्या देवशक्तिप्रदायिनी ॥९८॥
दामिनी दामिनीप्रीता दामिनीशतसुन्दरी ।
दामिनीशतसंसेव्या दामिनीदामभूषिता ॥९९॥
देवताभावसन्तुष्टा देवताशतमध्यगा ।
दयार्द्रा च दयारूपा दयादानपरायणा ॥१००॥
दयाशोला दयासारा दयासागरसंस्थिता ।
दशविद्यात्मिका देवी दशविद्यास्वरूपिणी ॥१०१॥
धरणी धनदा धात्री धन्या धन्यपराशिवा ।
धर्मरूपा धनिष्ठा च धैया च धीरगोचरा ॥१०२॥
धर्मराजेश्वरी धर्मकर्मरूपा धनेश्वरी ।
धनुर्विद्या धनुर्गम्या धनुर्द्धरवरप्रदा ॥१०३॥
धर्मशीला धर्मलीला धर्मकर्मविवर्जिता ।
धर्मदा धर्मनिरता धर्मपाखण्डखण्डिनी ॥१०४॥
धर्मेशीधर्मरूपा च धर्मराजवरप्रदा ।
धर्मिणी धर्मगेहस्था धर्माधर्मस्वरूपिणी ॥१०५॥
धनदा धनदप्रीता धनधान्यसमृद्धिदा ।
धनधान्यसमृद्धिस्था धनधान्यविनाशिनी ॥१०६॥
धर्मनिष्ठा धर्मधीरा धर्ममार्गरता सदा ।
धर्मबीजकृतस्थाना धर्मबीजसुरक्षिणी ॥१०७॥

धर्मबीजेश्वरी धर्मबीजरूपा च धर्मगा ।
धर्मबीजसमुद्भूता धर्मबीजसमाश्रिता ॥१०८॥
धराधरपतिप्राणा धराधरपतिस्तुता ।
धराधरेन्द्रतनुजा धराधरेन्द्रवन्दिता ॥१०९॥
धराधरेन्द्रगेहस्था धराधरेन्द्रपालिनी ।
धराधरेन्द्रसर्वार्तिनाशिनीधर्मपालिनी ॥११०॥
नवीना निर्मला नित्या नागराजप्रपूजिता ।
नागेश्वरी नागमाता नागकन्या च नग्निका ॥१११॥
निर्लेपा निर्विकल्पा च निर्लोभा निरुपद्रवा ।
निराहारा निराकारा निरञ्जनरूपिणी ॥११२॥
नागिनी नागविभवा नागराजपरिस्तुता ।
नागराजगुणज्ञा च नागराजसुखप्रदा ॥११३॥
नागलोकगता नित्यं नागलोकनिवासिनी ।
नागलोकेश्वरी नागभागिनी नागपूजिता ॥११४॥
नागमध्यस्थिता नागमोहसंक्षोभदायिनी ।
नृत्यप्रिया नृत्यवती नृत्यगीतपरायणा ॥११५॥
नृत्येश्वरी नर्तकी च नृत्यरूपा निराश्रया ।
नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी ॥११६॥
नरमांसप्रिया नित्या नररक्तप्रिया सदा ।
नरराजेश्वरी नारीरूपा नारीस्वरूपिणी ॥११७॥
नारीगणार्चिता नारीमध्यगा नूतनाम्बरा ।
नर्मदा च नदीरूपा नदीसंगमसंस्थिता ॥११८॥
नर्मदेश्वरसम्प्रीता नर्मदेश्वररूपिणी ।
पद्मावती पद्ममुखी पद्मकिञ्जल्कवासिनी ॥११९॥
पट्टवस्त्रपरीधाना पद्मरागविभूषिता ।
परमा प्रीतिदा नित्या प्रेतासननिवासिनी ॥१२०॥

परिपूर्णरसोन्मत्ता प्रेमविह्वलवल्लभा ।
पवित्राशवनिःपूता प्रेयसीपरमात्मिका ॥१२१॥
प्रियव्रतपरा नित्या परमप्रेमदायिनी ।
पुष्पप्रिया पद्मकोशा पद्मधर्मनिवासिनी ॥१२२॥
फेत्कारिणी तन्त्ररूपा फेरुफेरवनादिनी ।
वंशिनी वंशरूपा च बगला कामरूपिणी ॥१२३॥
वाङ्मयी वसुधा वृष्या वाग्भवाख्या वरा नरा ।
बुद्धिदा बुद्धिरूपा च विद्या वादस्वरूपिणी ॥१२४॥
बाला वृद्धमयीरूपा वाणी वाक्यनिवासिनी ।
वरुणा वाग्वती वीरा वीरभूषणभूषिता ॥१२५॥
वीरभद्रार्चितपदा वीरभद्रप्रसूरपि ।
वेदमार्गरता वेदमन्त्ररूपा वषट्प्रिया ॥१२६॥
वीणावाद्यसमायुक्ता वीणावाद्यपरायणा ।
वीणारवा तथा वीणाशब्दरूपा च वैष्णवी ॥१२७॥
वैष्णवाचारनिरता वैष्णवाचारतत्परा ।
विष्णुसेव्या विष्णुपत्नी विष्णुरूपा वरानना ॥१२८॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता विश्वनिर्माणकारिणी ।
विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी ॥१२९॥
भैरवी भैरवाराध्या भूतभैरवसेविता ।
भैरवेशी तथा भीमा भैरवेश्वरतुष्टिदा ॥१३०॥
भैरवाधीशरमणी भैरवाधीशपालिनी ।
भीमेश्वरी भीममाता भीमशब्दपरायणा ॥१३१॥
भीमरूपा च भीमेशी भीमा भीमवरप्रदा ।
भीमपूजितपादाब्जा भीमभैरवपालिनी ॥१२३॥
भीमासुरध्वंसकरी भीमदुष्टविनाशिनी ।
भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिदा सदा ॥१३३॥

भयदाभयहन्त्री च अभयाऽभयरूपिणी ।
भीमनादा विह्वला चं भयभीतिविनाशिनी ॥१३४॥
[illegible]त्ता प्रम[illegible]पा च मदोन्मत्तस्वरूपिणी ।
मान्या मनोज्ञामाना च मङ्गला च मनोहरा ॥१३५॥
माननीया महापूज्या महिषी दुष्टमर्द्दिनी ।
महिषासुरहन्त्री च मातंगी मयवासिनी ॥१३६॥
माध्वी मधुमयी मुद्रा मुद्रिका मन्त्ररूपिणी ।
महाविश्वेश्वरी दूती मौलिचन्द्रप्रकाशिनी ॥१३७॥
यशःस्वरूपिणी देवी योगमार्गप्रदायिनी ।
योगिनी योगगम्या च चाम्येशी योगरूपिणी ॥१३८॥
यज्ञांगी च योगमयी जपरूपा जपात्मिका ।
युगाख्या च युगान्त च योनिमण्डलवासिनी ॥१३९॥
अयोनिजा योगनिद्रा योगानन्दप्रदायिनी ।
रमा रतिप्रिया नित्या रतिरागविवर्द्धिनी ॥१४०॥
रमणीराससम्भूता रम्या रासप्रिया रसा ।
रणोत्कण्ठा रणस्था च वरा रंगप्रदायिनी ॥१४१॥
रेवती रणजेत्री च रसोद्भूता रणोत्सवा ।
लतालावण्यरूपा च लवणाब्धिस्वरूपिणी ॥१४२॥
लवङ्गकुसुमाराध्या लोलजिह्वा च लेलिहा ।
वशिनी वनसंस्था च व[illegible]ष्पप्रिया वरा ॥१४३॥
प्राणेश्वरी बुद्धिरूपा बुद्धिदात्री बुधात्मिका ।
शमनी श्वेतवर्णा च शाङ्करी शिवभाषिणी ॥१४४॥
शाम्यरूपा शक्तिरूपा शक्तिविन्दुनिवासिनी ।
सर्वेश्वरी सर्वदात्री सर्वमाता च शर्वरी ॥१४५॥
शाम्भवी सिद्धिदासिद्धा सुषुम्नासुरभासिनी ।
सहस्रदलमध्यस्था सहस्रदलवर्त्तिनी ॥१४६॥

हरप्रिया हरध्येया हूंकारबीजरूपिणी ।
लंकेश्वरी च तरला लोममांसप्रपूजिता ॥१४७॥
क्षेम्या क्षेमकरी क्षामा क्षीरबिन्दुस्वरूपिणी ।
क्षिप्तचित्तप्रदा नित्या क्षौमवस्त्रविलासिनी ॥१४८॥
छिन्ना च छिन्नरूपा च क्षुधा क्षौत्काररूपिणी ।
सर्ववर्णमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥१४९॥
सर्वसम्पत्प्रदात्री च सम्पदापद्विभूषिता ।
सत्त्वरूपा च सर्वार्था सर्वदेवप्रपूजिता ॥१५०॥
सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वज्ञा सुरसात्मिका ।
सिन्धुर्मन्दाकिनी गंगा नदी सागररूपिणी ॥१५१॥
सुकेशी मुक्तकेशी च डाकिनी वरवर्णिनी ।
ज्ञानदा ज्ञानगगना सोममण्डलवासिनी ॥१५२॥
आकाशनिलया नित्या परमाकाशरूपिणी ।
अन्नपूर्णा महानित्या महादेवरसोद्भवा ॥१५३॥
मङ्गला कालिका चण्डा चण्डनादातिभीषणा ।
चण्डासुरस्य मथिनी चामुण्डा चपलात्मिका ॥१५४॥
चण्डी चामरकेशी च चलत्कुण्डलधारिणी ।
मुण्डमालाधरा नित्या खण्डमुण्डविलासिनी ॥१५५॥
खड्गहस्ता मुण्डहस्ता वरहस्ता वरप्रदा ।
असिचर्मधरा नित्या पाशांकुशधरा परा ॥१५६॥
शूलहस्ता शिवहस्ता घण्टानादविलासिनी ।
धनुर्वाणधराऽऽदित्या नागहस्ता नगात्मजा ॥१५७॥
महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी ।
रक्तरूपा रक्तगा च रक्तहस्ता भयप्रदा ॥१५८॥
असिता च धर्मधरा पाशांकुशधरा परा ।
धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥१५९॥

परस्था देवतामूर्तिः शर्वाणी शारदा परा ।
नानावर्णविभूषांगी नानारागसमापिनी ॥१६०॥
पशुवस्त्रपरीधाना पुष्पायुधधरा परा ।
मुक्तरञ्जितमालाढ्या मुक्ताहारविलासिनी ॥१६१॥
स्वर्णकुण्डलभूषा च स्वर्णसिंहासनस्थिता ।
सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा शाम्भवी शकटात्मिका ॥१६२॥
सर्वलोकेशविद्या च मोह सम्मोहकारिणी ।
श्रेयसी सृष्टिरूपा च छिन्नच्छद्मयीछला ॥१६३॥
छिन्नमुण्डधरा नित्या नित्यानन्दविधायिनी ।
नन्दा पूर्णा च रिक्ता च तिथयः पूर्णषोडशी ॥१६४॥
कुहूः संक्रान्तिरूपा च पञ्चपर्वविलासिनी ।
पञ्चबाणधरा नित्या पञ्चमप्रीतिदा परा ॥१६५॥
पञ्चपत्राभिलाषा च पञ्चामृतविलासिनी ।
पञ्चाली पञ्चमी देवी पञ्चरक्तप्रसारिणी ॥१६६॥
पञ्चबाणधरा नित्या नित्यदात्री दयापरा ।
पललादिप्रिया नित्याऽपशुगम्या परेशिता ॥१६७॥
परा पररहस्या च परमाप्रेमविह्वला ।
कुलीना केशिमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी ॥१६८॥
कुलाकुलस्वरूपा च कुलार्णवमयी कुला ।
रुक्मा च कालरूपा च कालकम्पनकारिणी ॥१६९॥
विलासरूपिणी भद्रा कुलाकुलनमस्कृता ।
कुबेरवित्तधात्री च कुमारजननी परा ॥१७०॥
कुमारीरूपसंस्था च कुमारीपूजनाम्बिका ।
कुरङ्गनयना देवी दिनेशास्याऽपराजिता ॥१७१॥
कुण्डली कदली सेना कुमार्गरहिता वरा ।
अनन्तरूपाऽनन्तस्था आनन्दसिन्धुवासिनी ॥१७२॥

इलास्वरूपिणी देवी ईईभेदभयङ्करी ।
इङ्गला पिङ्गला नाडी इकाराक्षररूपिणी ॥१७३॥
उमा उत्पत्तिरूपा च उच्चभावविनाशिनी ।
ऋग्वेदा च निराराध्या यजुर्वेदप्रपूजिता ॥१७४॥
सामवेदेन सङ्गीता अथर्ववेदभाषिणी ।
ऋकाररूपिणी ऋक्षा निरक्षरस्वरूपिणी ॥१७५॥
अहिदुर्गासमाचारा इकारार्णस्वरूपिणी ।
ॐकारा प्रणवस्था च ॐकारादिस्वरूपिणी ॥१७६॥
अनुलोमविलोमस्था थकारवर्णसम्भवा ।
पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥१७७॥
प्रत्येका दशसंख्या च षोडशी छिन्नमस्तका ।
षडङ्गयुवतीपूज्या षडङ्गरूपवर्जिता ॥१७८॥
षडक्त्रसंश्रिता नित्या विश्वेशी खड्गदालया ।
मालामन्त्रमयी मन्त्रजपमाता मदालसा ॥१७९॥
सर्वविश्वेश्वरी शक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी ।
इति श्रीछिन्नमस्तायाः नामसाहस्रमुत्तमम् ॥१८०॥
पूजाक्रमेण कथितं साधकानां सुखावहम् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं न संशयः ॥१८१॥
अर्द्धरात्रे मुक्तकेशो भक्तियुक्तो भवेन्नरः ।
जपित्वा पूजयित्वा च पठेन्नामसहस्रकम् ॥१८२॥
विद्यासिद्धिर्भवेत्तस्य षण्मासाभ्यासयोगतः ।
येन केन प्रकारेण देवीभक्तिपरो भवेत् ॥१८३॥
अखिलान्स्तम्भयेल्लोकान्राज्ञोऽपि मोहयेत्सदा ।
आकर्षयेद्देवशक्तिं मारयेद्देवि विद्विषम् ॥१८४॥
शत्रवो दासतां यान्ति पापानि यान्ति संक्षयम् ।
मृत्युश्च क्षयतां याति पठनाद्भाषणात्प्रिये ॥१८५॥

प्रशस्तायाः प्रसादेन किन्न सिद्ध्यति भूतले ।
इदं रहस्यं परमं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥१८६॥
धृत्वा बाहौ महासिद्धिः प्राप्यते नात्र संशयः ।
अनया सदृशी विद्या विद्यते न महेश्वरि ॥१८७॥
वारमेकं तु योधीते सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
कुलवारे कुलाष्टम्यां कुहूसंक्रान्तिपर्वसु ॥१८८॥
यश्चेमां पठते विद्यां तस्य सम्यक्फलं श्रृणु ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥१८९॥
भक्त्यास्तुत्वा महादेवि सर्वपापात्प्रमुच्यते ।
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९०॥
अष्टम्यां वा निशीथे च चतुष्पथगतो नरः ।
माषभक्तबलिं दत्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥१९१॥
सुदर्शवामवेद्यां तु मासत्रयविधानतः ।
दुर्जयः कामरूपश्च महाबलपराक्रमः ॥१९२॥
कुमारीपूजनं नाम मन्त्रमात्रं पठेन्नरः ।
एतन्मन्त्रस्य पठनात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९३॥
इति ते कथितं देवी सर्वसिद्धिपरं नरः ।
जप्त्वा स्तुत्वा महादेवीं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१९४॥
न प्रकाश्यमिदं देवि सर्वदेवनमस्कृतम् ।
इदं रहस्यं परमं गोप्तव्यं पशुसंकटे ॥१९५॥
इति सकलविभूतेर्हेतुभूतं प्रशस्तं ।
पठति य इह मर्त्यश्छिन्नमस्तास्तवञ्च ॥
धनद इव धनाढ्यो माननीयोनृपाणां ।
स भवति च जनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता ॥१९६॥

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे शिवपार्वतीसम्वादे श्रीछिन्नमस्ता-
सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रम्

श्रीपार्वत्युवाच :

श्रुतं पूजादिकं सम्यग्भवद्वक्त्राब्जनिःसृतम् ।
हृदयं छिन्नमस्तायाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥१॥

महादेव उवाच :

नाद्यावधि मया प्रोक्तं कस्यापि प्राणवल्लभे ।
यत्त्वया परिपृष्टोऽहं वक्ष्ये प्रीत्यै तव प्रिये ॥२॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भैरवऋषिः सम्राट्-छन्दः छिन्नमस्ता देवता हूं बीजं ॐ शक्तिः ह्रीं कीलकं शत्रुक्षयकरणार्थे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । सम्राट्छन्दसे नमो मुखे २ । छिन्नमस्तादेवतायै नमो हृदि ३ । हूं बीजाय नमो गुह्ये ४ । शक्तये नमः पादयोः ५ । ह्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ । इति ऋष्यादि न्यासः ।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १ । ॐ हूं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुं ४ । ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ हूं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानं :

रक्ताभां रक्तकेशीं करकमललसत्कर्तृकां कालकान्ति ।
विच्छिन्नात्मीयमुण्डासृगरुणबहुलोदग्रधारां पिबन्तीम् ॥
विघ्नाभ्रौघप्रचण्डश्वसनसमनिभां सेविता सिद्धसंघैः ।
पद्माक्षी छिन्नमस्तां छलकरदितिजच्छेदिनीं संस्मरामि ॥१॥

वन्देऽहऽछिन्नमस्तां तां छिन्नमुण्डधरां पराम् ।
छिन्नग्रीवोच्छटाच्छन्नां क्षौमवस्त्रपरिच्छदाम् ॥२॥

सर्वदा सुरसंघेन सेवितांघ्रिसरोरुहाम् ।
सेवे सकलसम्पत्त्यै छिन्नमस्तां शुभप्रदाम् ॥३॥
यज्ञानां योगयज्ञाय या तु जाता युगेयुगे ।
दानवान्तकरीं देवीच्छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥४॥
वैरोचनीं वरारोहां वामदेवविवर्द्धिताम् ।
कोटिसूर्यप्रभां वन्दे विद्युद्वर्णाक्षिमण्डिताम् ॥५॥
निजकण्ठोच्छलद्रक्तधारयाया मुहुर्मुहुः ।
योगिनीस्तुपर्यन्त्युग्रा तस्याश्चरणमाश्रये ॥६॥
हूमित्येकाक्षरं मन्त्रं यदीयं युक्तमानसः ।
यो जपेत्तस्य विद्वेषी भस्मतां याति तां भजे ॥७॥
हूं स्वाहेति मनुं सम्यक्यः स्मरत्यर्तिमान्नरः ।
छिनत्ति छिन्नमस्ता या तस्य बाधां नमामि ताम् ॥८॥
यस्याः कटाक्षमात्रेण क्रूरभूतादयो द्रुतम् ।
दूरतः संपलायन्ते छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥९॥
क्षितितलपरिरक्षाक्षान्तरोपा सुदक्षा
छलयुतखलकक्षाच्छेदने क्षान्तिलक्ष्या ।
क्षितिदितिजसुपक्षा क्षोणिपक्षायशिक्षा
जयतुजयतु चाक्षा छिन्नमस्तारिभक्षा ॥१०॥
कलिकलुपकलानां कर्त्तने कर्त्तृहस्ता
सुरकुवलयकाशा मन्दभानुप्रकाशा ।
असुरकुलकलापत्रासिकाऽम्लानमूर्ति-
र्जयतुजयतु काली छिन्नमस्ता कराली ॥११॥
भुवनभरणभूरिभ्राजमानानुभावा
भवभवविभवानां भारणोद्भातभूतिः ।
द्विजकुलकमलानां भासिनी भानुमूर्तिर्भवतु
भवतु वाणी छिन्नमस्ता भवानी ॥१२॥

मम रिपुगणमाशु छेतुमुग्रं कृपाणं सपदि
जननि तीक्ष्णं छिन्नमुण्डं गृहाण ।
भवतु तव यशोलं छिन्धि शत्रून् खलान्मे
मम च परिदिशेष्ट छिन्नमस्ते क्षमस्व ॥१३॥

छिन्नग्रीवा छिन्नमस्ता छिन्नमुण्डधराऽक्षता ।
क्षोदक्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥१४॥
वैरोचनी बरारोहा बलिदान प्रहर्षिता ।
बलिपूजितपादाब्जा वासुदेवप्रपूजिता ॥१५॥
इति द्वादशनामानि छिन्नमस्ताप्रियाणि यः ।
स्मरेत्प्रातः समुत्थाय तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥१६॥
यां स्मृत्वा सन्ति सद्यः सकलसुरगणाः सर्वदा सम्पदाढ्याः ।
शत्रूणां संघमाहत्यविशदवदनाः स्वस्थचित्ताः श्रयन्ति ॥
तस्या संकल्पवन्तः सरसिजचरणं सन्ततं संश्रयन्ति ।
साद्या श्रीशादिसेव्या सुफलतु सुतरा छिन्नमस्ता प्रशस्ता ॥१७॥
इदं हृदयमज्ञात्वा हंतुमिच्छति यो द्विषम् ।
कथं तस्याचिरं शत्रुर्नाशमेष्यति पार्वति ॥१८॥
यदीच्छेन्नाशनं शत्रोः शीघ्रमेतत्पठेन्नरः ।
छिन्नमस्ता प्रसन्ना हि ददाति फलमीप्सितम् ॥१९॥
शत्रुप्रशमनं पुण्यं समीप्सितफल प्रदम् ।
आयुरारोग्यदं चैव पठताम् पुण्यसाधनम् ॥२०॥

॥ इति श्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥

७ | अथ मातृकाभेदतन्त्रम्

ॐ नमो दुर्गायै

प्रथमः पटलः

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
पप्रच्छ परया भक्त्या भैरवं परमेश्वरम् ॥

चण्डिकोवाच :

त्रिपुरापूजनं नाथ स्वर्णरत्नैर्विभूषणैः ।
कलिकाले स्वर्णरत्नस्तप्तभावस्तथा मणिः ॥
केनोपायेन देवेश स्वर्णरत्नादि लभ्यते ।
तद्वदस्व विशेषेण यथा रत्नादिकं भवेत् ॥
यन्नोक्तं सर्वतन्त्रेषु तद्वदस्व दयानिधे ।

श्रीशङ्कर उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यथा रत्नादिकं भवेत् ।
मत्तेजसा पारदेन किं रत्नं नहि लभ्यते ॥
यथा सामुद्रकेणैव शुद्धसामुद्रके तथा ।
सामुद्रस्य प्रकारं तु तत् शृणुष्व प्रियम्वदे ॥
चीनतन्त्रानुसारेण पूजयेत् कालिकां परां ।
कालीतन्त्रोक्तविधिना सप्ताहं जपपूजनम् ॥
सत्ये चैकं तु त्रेतायां द्विगुणं द्वापरे त्रयम् ।
एवं सर्वत्र जानीयाच्चतुर्गुणजपः कलौ ॥

आनीय बहुयत्नेन सम्बलं तोलकद्वयम् ।
वसुराद्यं शिवं चाद्यं मायाविन्दुविभूषितम् ।।
बीजत्रयं चाष्टशतं प्रजपेत् सम्बलोपरि ।
अशीतितोलकं मानं कृष्णाधेनुसमुद्भवम् ।।
दुग्धमानीय यत्नेन अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
वस्त्रयुक्तेन सूत्रेण दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत् ।।
उत्तापं जनयेद्धीमान् मन्दमन्देन चाग्निना ।
विन्दुवेदाङ्गपर्यन्तं अर्धशेषं यथा भवेत् ।।
तदेवोत्तल्य तद्द्रव्यं तोयमध्ये विनिक्षिपेत् ।
ततः परीक्षा कर्तव्या प्रदद्यात् पावकोपरि ।।
निर्धूमः पावके द्रव्यः दृष्ट्वा उत्थाप्य यत्नतः ।
तत्रैव प्रजपेन्मन्त्रं सर्वबन्धमयात्मकम् ।।
आनीय बहुयत्नेन शुद्धं ताम्रं मनोहरम् ।
सार्ध्देन तोलकं ताम्रं वह्निमध्ये विनिक्षिपेत् ।।
यथा वह्निस्तथा ताम्रं दृष्ट्वा उत्थाप्य यत्नतः ।
गुन्जाप्रमाणं तद्द्रव्यं तत्क्षणाद्यदि योजयेत् ।।
सत्यंसत्यं हि गिरिजे रौप्यं भवति निश्चितम् ।

श्री चण्डिकोवाच :

गन्धहीनं भवेन्मद्यं केनोपायेन शङ्कर ।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि यदि स्नेहोस्ति मां प्रति ।।

श्री शिव उवाच :

शिवं वह्निसमारूढ वामनेत्रविभूषितम् ।
विन्दुनादं कलायुक्तं गन्धमादाय संलिखेत् ।।
उष्णतां परमुच्चार्यं चाष्टोत्तरशतं यदि ।
प्रजपेत् साधकश्रेष्ठो दुर्गन्धादिविनाशनम् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे प्रथमः पटलः ।।

द्वितीय पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

वद ईशान सर्वज्ञ सर्वतत्त्वविदाम्बर ।
यत्त्वया कथ्यते देव मम सङ्गे विहारतः ॥
कथं वा जायते पुत्रः शुक्रस्य कुत्र वा स्थितिः ।
वर्द्धमानं महालिङ्गं प्रवेशो वा भवेत् कथम् ॥
भीतियुक्ता त्वहं नाथ त्राहि मां भयसागरात् ।

श्रीशङ्कर उवाच :

मणिपूरं महापद्मं सुषुम्नामध्यसंस्थितम् ।
तस्य नालेन देवेशि नाभिपद्मं मनोहरम् ॥
रक्तत्रयं समायुक्तं सदा शुक्रविभूषितम् ।
ऊर्द्धनालं सहस्रारे अतः शुक्रविभूषितम् ॥
तस्मादेव स्तनद्वंद्वं वर्द्धते च दिने दिने ।
मध्यनालं सुषुम्नान्तं वृत्ताकारं शुशीतलम् ॥
आयोन्यग्रमधोनाले सदानन्दमयं शिवे ।
शृणु चार्वङ्गि सुभगे तन्मध्ये लिङ्गताडनम् ॥
यद्रूपं परमानन्दं तन्नास्ति भुवनत्रये ।
नाभिपद्मं तु यद्रूपं तत् शृणुष्व समाहितम् ॥
विन्दुनालमध्यदेशे सदा पद्मं विराजितम् ।
बाह्यदेशे चाष्टशतं चतुरस्रं तु तद्बहिः ॥
चतुर्द्वारसमायुक्तं सुवर्णाभं सुवृन्तकम् ।
तत्पत्रेण भवेत् पुष्पं वृन्तयुक्तं त्रिपत्रकम् ॥
प्रफुल्ले तु त्रिपत्रारे बाह्यं रुधिरदर्शनम् ।
तन्मध्ये च महेशानि यदि स्याल्लिंगताडनम् ॥

पद्ममध्ये गते शुक्रे सन्ततिस्तेन जायते ।
पुरुषस्य तु यच्छुक्रं शुक्रं वा चाधिकं भवेत् ।।
तदा कन्या भवेद्देवि विपरीतात् पुमान् भवेत् ।
उभयोस्तुल्यशुक्रेण क्लीवं भवति निश्चितम् ।।
श्रृणु चार्वङ्गि सुभगे पुष्पमाहात्म्यमुत्तमम् ।
मध्ये तच्छुक्रयोगेन वर्द्धते तद्दिने दिने ।।
एवं दिङ्मासस्प्राप्ते तत्पुष्पं वृन्तसंयुतम् ।
गच्छते परमेशानि व्यक्तो भवति सन्ततिः ।।

श्री शिव उवाच :

किञ्चद्रोगादिसम्भूते कृमिकीटादिसम्भवे ।
तस्या जीवं प्रणश्यन्ति सा नारी जीव्यते कथं ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

तस्य पुष्पस्य माहात्म्यं किं वक्तुं शक्यते मया ।
विन्दुस्थानं सहस्रं तु पुष्पमध्ये प्रियम्वदे ।।
बुद्बुदा यत्र तिष्ठन्ति तत्रैव सन्ततिर्भवेत् ।
एवं क्रमेण देवेशि सहस्रं सन्ततिर्यदा ।।
वर्द्धमानं महापुष्पं पीडा किञ्चिन्न जायते ।
मया सार्द्धं महेशानि विहारं कुरु यत्नतः ।।
विहारे यो भवेत् पुत्रो गणेशः स च कीर्तितः ।
अपरे परमेशानि तव पुत्रप्रसादतः ।।
पृथिव्यां जायते सृष्टिर्निर्विघ्नेन यथोचितम् ।
एवं श्रुत्वा ततो देवि शिवाकारेण वै तदा ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे द्वितीयः पटलः ।।

तृतीय पटलः

श्री देव्युवाच :

सर्वत्रैव श्रुतं नाथ भोगं चेन्द्रियपुष्टिदम् ।
भोगेन मोक्षमाप्नोति कथं वदसि योगभृत् ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

भोगेन लभते योगं भोगेन कुलसाधनम् ।
भोगेन सिद्धिमाप्नोति भोगेन मोक्षमाप्नोति ॥
तस्माद्भोगं सदा कार्यं बाह्यपूजा यथेच्छया ।
भोजनस्य विधानं यत्तत् श्रृणुष्व प्रियम्वदे ॥
मूलाधारे तु या शक्तिर्भुजगाकाररूपिणी ।
जीवात्मा परमेशानि तन्मध्ये वर्तते सदा ॥
भोजनेषु भवेत्तस्य निर्लिप्तो जीवसंज्ञकः ।
सैव साक्षाद्गुणमयी निर्गुणो जीव उच्यते ॥
जीवस्य भोजनं देवि भ्रान्तिः केवलसंशयः ।
गुणयुक्ता कुण्डलिनी चन्द्रसूर्याग्निरूपिणी ॥
मूलाधाराच्च तां देवीं आजिह्वान्तां विभावयेत् ।
शोधितान् मत्स्यमांसादीन् संमुखे स्थापयेद्बुधः ॥
मूलमन्त्रं समुच्चार्य जुहोमि कुण्डलीमुखे ।
अनेन मनुना देवि प्रतिग्रासं समुद्धरेत् ॥
प्रतिग्रासे परेशानि त्रयं कुर्याद्विचक्षणः ।
तदैव ब्रह्मरूपासौ सत्यं सत्यं सुरेश्वरि ॥
भुज्यते कुण्डली देवी इति चिन्तापरो हि यः ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य ज्ञानसिद्धिर्न चान्यथा ॥
एवं कृते ब्रह्मरूपः शिवरूपः स्वयं हरिः ।
योगसिद्धिर्भवेत्तस्य चाष्टसिद्धिर्भविष्यति ॥

शत्रुभिर्दीयते यस्मै कृत्रिमं दारुणं विषम् ।
भक्षणात्तत्क्षणाद्देवि अमृतत्वं न संशयः ।।
मन्त्रेण शोधितं द्रव्यं भक्षणादमृतं भवेत् ।
तदेव कालकूटं हि समुद्रमथने प्रिये ।।
तदाचारेण मनुना तत्क्षणात् खादितं मया ।
सर्पाकारा कुण्डलिनी या देवी परमा कला ।।
भुज्यते सर्परूपेण तत्रैव दारुणं विषम् ।
इति ते कथितं कान्ते भोजनस्य विधानकम् ।।
एतत् सर्वं महेशानि गोप्तव्यं पशुसङ्कटे ।

श्री देव्युवाच :

श्रृणु नाथ परानन्द परमेश कुलात्मक ।
वद मे परमेशान होमकुण्डं तु कीदृशम् ।।

श्री शिव उवाच :

मणिपूरस्य वाह्ये तु नाभिपद्मं मनोहरम् ।
अष्टपत्रं तथा वृत्तं तन्मध्ये कुण्डदुर्लभम् ।।
चतुर्हस्तादिकं देवि तत् कुण्डं कामरूपकम् ।
सर्वकुण्डस्य देवेशि विप्रः कर्ता विधीयते ।।
वर्तुलं बाहुजातस्य वैश्यस्य अर्द्धचन्द्रकम् ।
त्रिकोणं पादजातस्य होमकुण्डं सुरेश्वरि ।।
एवं कुण्डं महेशानि नालत्रयविभूषितम् ।
ऊर्द्धनालं सहस्रारामृतविन्दुविभूषितम् ।।
मध्ये नालं नाभिमध्ये मूलाधारे च सुन्दरि ।
आलिगाग्रमध्ये नालं सदानन्दमयं शिवे ।।
होमकुण्डमिदं देवि सर्वतन्त्रपरिष्कृतम् ।
येन होमप्रसादेन साक्षाद् ब्रह्ममयो भवेत् ।।

विप्रस्य चाहुतिर्होम विज्ञातव्यं चतुष्टयम् ।
क्षत्रियस्य त्रयं देवि वैश्यस्य चाहुतिद्वय ।।
पादजातस्य होमे तु दद्यादेकाहुतिं शिवे ।
चतुर्वर्णस्य होमेषु मुक्तिश्चापि चतुर्विधा ।।
महामोक्षं ब्राह्मणस्य सायुज्यं क्षत्रियस्य च ।
सारूप्यं चोरुजातस्य सालोक्यं शूद्रजातिषु ।।
बाह्य कुण्डं बाह्यहोमे एवं हि सुरवन्दिते ।
जातिभेदे कुण्डभेदं कुर्यात् साधकसत्तमः ।।
संन्यासमग्निहोमं च तावदेव कलौ युगे ।
इति ते कथितं कान्ते तंत्राणां सारमुत्तमम् ।।
न वक्तव्यं पशोरग्रे संशयो मे त्वयि प्रिये ।

श्री देव्युवाच :

मद्यदाने महापुण्यं सर्वतन्त्रे श्रुतं मया ।
जातिभेदं न कथितं इदानीं तत् प्रकाशय ।।

श्री महादेव उवाच :

सर्वयज्ञाधिपो विप्रः संशयो नास्ति पार्वति ।
सौत्रामण्यां कुलाचारे तत्वज्ञा ब्राह्मणादयः ।।
ब्राह्मणस्य महामोक्षं मद्यपाने प्रियम्वदे ।
ब्राह्मणः परमेशानि यदि पानादिकं चरेत् ।।
तत्क्षणाच्छिवरूपोऽसौ सत्यं सत्यं हि शैलजे ।
तोये तोयं यथा लीनं तेजसि तेजसं तथा ।।
घटे भग्नं यथाकाशं वायौ वायुर्यथा प्रिये ।
तथैव मद्यपानेन ब्राह्मणो ब्रह्मणि प्रिये ।।
लीयते नात्र सन्देहः परमात्मनि शैलजे ।
सायुज्यादि महामोक्षं नियुक्तं क्षत्रियादिषु ।।

सा नारी मद्यपानेन उक्ता देवी न संशयः ।
सूक्ष्मसूत्रे यथावह्निर्देहमध्ये यथा शिवः ॥
तपोरूपं वृहत्सूत्रं पूजारूपं तथा हरिः ।
संयुक्तं कारयेदत्र वर्द्धमानो महांकुशः ॥
मद्यपानं विना देवि तत्त्वज्ञानं न लभ्यते ।
अतएव हि विप्रेण मद्यपानं सदाचरेत् ॥
वेदमाता जपेनैव ब्राह्मणो नहि शैलजे ।
ब्रह्मज्ञानं यदा देवि तदा ब्राह्मण उच्यते ॥
देवानाममृतं ब्रह्म तदियं कौलिकी सुरा ।
सुरान्नं भोगमात्रेण बहिर्दीप्तो भवेन्नरः ।
शापमोचनमात्रेण सुरा मुक्तिप्रदायिनी ।
अतएव हि देवेशि ब्राह्मणः पानमाचरेत् ॥
स ब्राह्मणः स वेदज्ञः साग्निहोत्री स दीक्षितः ।
बहु किं कथ्यते देवि स एव त्रिगुणात्मकः ॥
मुक्तिमार्गमिदं देवि गोप्तव्यं पशुसङ्कटे ।
प्रकाशात् सिद्धिहानिः स्यान्निन्दनीयो न चान्यथा ॥

॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे तृतीयः पटलः ॥

चतुर्थ पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

कारणेन महामोक्षं निर्माल्येन शिवस्य च ।
श्रुतं देव पुराणेषु तव भक्तः सुरेश्वरः ॥
अग्राह्यं तव निर्माल्यं अग्राह्यं कारणं विभो ।
मृषावाक्यं महादेव कथं वदसि योगभृत् ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि निर्माल्यं परिपृच्चति ।
एतत्तु सर्वं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥

चतुरशीतिलक्षेषु योनिगर्ते तथैव हि ।
भ्रमणं कुरुते जीवस्ततो दुःखस्य भाजनम् ॥
एतन्मध्ये महाज्ञानं यदि स्याद्वीरवन्दिते ।
तदा मोक्षमवाप्नोति भ्रमणं केन वा भवेत् ॥
पापमुक्तो हि चाण्डालो निर्माल्यं गृह्यते यदा ।
तदा मोक्षो भवेत् सत्यं शिवरूपो न चान्यथा ॥
महापातकयुक्तोपि कारणं प्रपिबेद्यदि ।
तदा मुक्तिर्भवेत् सत्यं जातिभेदादिकं नहि ॥
सर्वजातिषु निर्वाणं ज्ञानेन परमेश्वरि ।
अतएव हि देवेशि गुप्तभावं मया कृतं ॥
गुप्तभावार्थं यद्वाक्यं परिहासार्थमेव हि ।
तत्तदर्थेन मद्वाक्यं न मिथ्या परमेश्वरि ॥
निर्वाणविषये देवि मद्यं परमकारणम् ।
मद्यपानं विना देवि महामोक्षं न लभ्यते ॥

श्रीचण्डिकोवाच :

गंगायां ज्ञानतो मोक्षं तथैव म्रियते यदि ।
गङ्गायाश्चाधिकं नाथ कारणं देवदुर्लभम् ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

पूर्णब्रह्ममयी देवि सुरा देवी न चान्यथा ।
तस्याश्च षोडशांशैका या गङ्गा सुरपूजिता ॥
तथैव तुलसी देवि शतांशैका न संशयः ।
विमूढो हि च यो मर्त्यस्तीर्थसेवां न चाचरेत् ॥
यथैव मालिकामध्ये महाशङ्खं विमोक्षदम् ।
तथैव कारणं देवि महामोक्षप्रदायकं ॥
कारणेन विना देवि मोक्षज्ञानादिकं न हि ।
महाशङ्खं बिना देवि न मन्त्रः सिद्धिदायकः ॥

साक्षाद्ब्रह्ममयी माला महाशङ्खाख्यया पुनः ।
शिलायन्त्रेषु वृन्दायां गङ्गायां सुरपूजिते ।।
नैवं स्पृशन्महाशङ्खं स्पर्शनात् काष्ठवद्भवेत् ।

श्रीपार्वत्युवाच :

गङ्गा तु कारणं वारि मद्यं परमकारणं ।
कारणस्पर्शमात्रेण काष्ठवन्मालिका कथं ।।
वद मे परमेशान इति मे संशयो हृदि ।

श्रीशङ्कर उवाच :

कारणं देवि देवेशि मोक्षदं सर्वजातिषु ।
तथा स्वर्गादिजनकं गङ्गातोयं न संशयः ।।
कारणे निवसेद्देवि महाकाली परा कला ।
महाविद्या वसेन्नित्यं महाशङ्खे च सर्वदा ।।
गङ्गायाः स्पर्शमात्रेण गङ्गायां लीयते ध्रुवम् ।
तत्क्षणे च महाशङ्खः काष्ठवन्नात्र संशयः ।।
शिलायन्त्रे तुलस्यादौ तथैव परमेश्वरि ।
महाशङ्खे च मालायां यो जपेत् साधकोत्तमः ।।
अष्टसिद्धिः करे तस्य स एव शम्भुराख्ययः ।
मौलौ गङ्गा स्थिता यस्य गङ्गास्नानेन तस्य किं ।।
वाराणसी कामरूपं हरिद्वारं प्रयागकम् ।
गण्डकीं च वदरिकां गंगासागरसंगमम् ।।
यस्य भक्तिर्महाशङ्खे तस्य दर्शनमात्रतः ।
तीर्थस्नानफलं सर्वं लभते नात्र संशयः ।।
इति ते कथितं कान्ते सारात्सारं सुदुर्लभं ।
न वक्तव्यं पशोरग्रे प्राणान्तेपि कदाचन ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे हरगौरीसंवादे चतुर्थः पटलः ।।

पंचम पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

पारदं भस्मनिर्माणं केनोपायेन शङ्कर ।
तदहं श्रोतुमिच्छामि तद्वदस्व कृपानिधे ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

पारदे भस्मनिर्माणे नानाविघ्नानि पार्वति ।
अतएव हि तत्रादौ शान्ति कुर्याद् द्विजोत्तमः ॥
वरयेत् कर्मकर्तारं वक्ष्यमाण विधानतः ।
पूजयेत् षोडशं लिङ्गं पार्थिवं पार्वतात्मजे ॥
षोडशेनोपचारेण तोडलोक्तविधानतः ।
भोगयुग्मं प्रदातव्यं मधुपर्कं सुरेश्वरि ॥
पञ्चामृतेन देवेशं स्नापयेच्छुद्धवारिणा ।
पुरुषस्य प्रमाणं च युग्मवस्त्रं निवेदयेत् ॥
चतुरंगुलविस्तारं रोप्यनिर्माणपीठकं ।
अलङ्कारं यथायोग्यं पुरुषाय निवेदयेत् ॥
अशक्तसंयुतं वापि दद्यान्मलयजं शिवे ।
षडङ्गधूपं देवेशि प्रदद्याच्च पुनः पुनः ॥
घृतयुक्तं तथा दीपं दद्यात् कल्याणहेतवे ।
नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाफलसमन्वितं ॥
शर्करासंयुतं कृत्वा पायसं विनिवेदयेत् ।
दद्यात्तोयं महेशानि विजयासंयुतं प्रिये ॥
षडक्षरं महामन्त्रं जपेदेकसहस्रकम् ।
प्रजपेत् साधकश्रेष्ठस्ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवं ॥
अथवा परमेशानि धनदां धनदायिनीं ।
पूजयेद्बहुयत्नेन षोडशेनोपचारतः ॥

द्वादशाहं जपेद्धीमान् दिक्सहस्रं ततो जपेत् ।
तद्दशांशं महेशानि होमं कुर्याद्विचक्षणः ॥
होमकर्मण्यशक्तश्चेद्द्विगुणं जपमाचरेत् ।
यदि प्रीता भवेत्सा हि तदा किं वा न सिध्यति ॥
प्रत्यहं परमेशानि कुबेरो दीयते वसु ।
भस्मनिर्माणकं कर्म विचित्रं तस्य किं शिवे ॥
गुरवे दक्षिणां दद्याद्यथा विभवविस्तरैः ।
ततः सिद्धो भवेन्मन्त्री नात्र कार्या विचारणा ॥

श्रीचण्डिकोवाच :

विधानं देवदेवेशि भस्मनिर्माणकर्मणि ।
सकृत्कृतेन रूपेण भस्मसाज्जायते विभो ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

आनीय पारदं देवि मृत्पात्रयुगले शिवे ।
पुष्पयुक्तेन सूत्रेण बध्नीयाद्बहुयत्नतः ॥
मृत्तिकया च रजसा धान्यस्य परमेश्वरि ।
लेपयेद्बहुयत्नेन रौद्रे शुष्कञ्च कारयेद् ॥
पुनश्च लेपयेद्धीमान् ततो वह्नौ विनिक्षिपेद् ।
अष्टमी नवमी रात्रौ निक्षिपेन्नैव सुन्दरि ॥
अथवा परमेशानि मृत्पात्रे स्थापयेद्रसं ।
वल्लीरसेन तद्द्रव्यं शोधयेद्वहुयत्नतः ॥
धृतनारीरसेनैव तथैव शोधनं चरेत् ।
एवं कृते तु गुटिकां यदि स्याद्दृढबन्धनं ॥
धूस्तुरं च समानीय मध्ये शून्यं च कारयेत् ।
कृष्णाथ तुलसीयोगे तथा घृतकुमारिका ॥
एवं कृते वह्नियोगे भस्मसाज्जायते किल ।

भस्मयोगे भवेत् स्वर्णं धनदायाः प्रसादतः ।।
विवर्णं जायते द्रव्यं यदि पूजां न चाचरेत् ।

श्रीचण्डिकोवाच :

स्वयंभू कीदृशं नाथ कुण्डगोलं च कीदृशं ।
सर्वकालोद्भवं नाथ कीदृशं वद शङ्कर ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

विवाहरहिता कन्या प्रथमे ऋतुसंयुता ।
तत् शोणितं महेशानि स्वयं भू नात्र संशयः ।।
भर्तरि विद्यमाने तु कन्यायाश्चैव सुन्दरि ।
तदुद्भवं कुण्डपुष्पं सर्वकार्यार्थसाधनं ।।
मृते भर्तरि या देवि या कन्या अन्यजा शिवे ।
तदुद्भवं गोलपुष्पं देववश्यकरं परं ।।
विवाहितायाः कन्यायाः पुरुषस्य तु ताडनात् ।
यदि पुष्पं समुद्भूतं वज्रं तत् परिकीर्तितं ।।
विवाहितायाः कन्यायाः प्रतिमासे तु यद्भवेत् ।
सर्वकालोद्भवं पुष्पं कथितं वीरवन्दिते ।।
सप्तक्रोशं वह्निमध्ये स्थापयेद्बहुयत्नतः ।
ततः उत्थापितंद्रव्यं स्वर्णपात्रे निधाय च ।।
प्रजपेत् परमेशानि प्रासादाख्यं महामनुं ।
ततः सिद्धो भवेन्मन्त्री नान्यथा मम भाषितं ।।
एतन्मन्त्रं महेशानि गजान्तकसहस्रकम् ।
जपित्वा पूजयेत् पश्चात् पार्थिवं शिवलिङ्गकं ।।
ततः परीक्षा कर्तव्या शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
शुद्धताम्रं वह्निमध्ये मृत्पात्रे तोलकं मितम् ।।
द्रवीभूते च ताम्रे च शुक्रमानं क्षिपेद्यदि ।
तत्क्षणात् परमेशानि स्वर्णं भवति निश्चितं ।।

गुञ्जाप्रमाणं तद्द्रव्यं भोजनं कुरुते यदि ।
सर्वरोगैः परित्यक्तो जायते मदनोपमः ।।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य जायते चिरजीवितः ।
प्रत्यहं परमेशानि शतनारीं रमेद्यदि ।।
वीर्यादिरहितं न स्यात्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
सवर्णं नैव पश्यामि यदि व्यालयुतो भवेत् ।।
तस्य वित्तं विलोक्यैव कुबेरोपि तिरस्कृतः ।
गानेन तुम्बुरुः साक्षाद्दानेन वासवो यथा ।।
महेश इव योगीशः निर्ऋतिरिव दुर्धरः ।
महाबलो महावीर्यो महासाहसिकः शुचिः ।।
महास्वच्छो दयावांश्च सर्वप्राणिहिते रतः ।
बहु किं कथ्यते देवि स एव गणनायकः ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे हरगौरीसंवादे पञ्चमः पटलः ।।

षष्ठ पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

वद ईशान सर्वज्ञ सर्वतत्वविदांवर ।
महारोगे महादुःखे महादारिद्रसङ्कटे ।।
नानाव्याधिगते वापि नानापीडादिसङ्कटे ।
राजध्वंसे राजभये कारागारगते पुनः ।।
तथा ग्रहपीडने च जलवह्निसमाकुले ।
केनोपायेन देवेश मुच्यते वद शङ्कर ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

श्रृणु चार्वङ्गि सुभगे यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
तत्तत् सर्वं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।।

या चाद्या परमा विद्या चामुण्डा कालिकास्मृता ।
योगमात्रेण सुभगे किं न सिध्यति भूतले ॥

श्रीचण्डिकोवाच :

राहुश्चाण्डाल विख्यातः सर्ववित् परमेश्वर ।
पुण्यकालं कथं देव तस्य स्पर्शे दिवाकरे ॥
निशाकरे तथा नाथ इति मे संशयो हृदि ।
कथयस्व मह. त्र पश्चादन्यं प्रकाशय ॥

श्रीशङ्कर उवाच :

शृणु चार्वङ्गि सुभगे प्रयोगं चोत्तमोत्तमं ।
ग्रहणं त्रिविधं देवि चन्द्रसूर्याग्निसंयुतम् ॥
शक्तेर्ललाटचक्रे च वह्निस्तिष्ठति सर्वदा ।
वामनेत्रे तथा चन्द्रो दक्षे सूर्यः प्रतिष्ठितः ॥
शम्भुनाथेन देवेशि रमणं क्रियते यदा ।
तथैव ग्रहणं देवि शक्तियुक्तः सदाशिवः ॥
वामनेत्रे चुम्बने च शशांकग्रहणं तदा ।
दक्षनेत्रे चुम्बने च भास्करंग्रहणं तदा ॥
ललाटचुम्बने चाग्निग्रहणं परमेश्वरि ।
शिवबीजं यतो वह्निरतो दृश्यं सुरेश्वरि ॥
शिवशक्तेः समायोगः काल ब्रह्ममयं शिवे ।
अतएव महेशानि राश्यादीन्न विचारयेत् ॥
तिथिनक्षत्रयोगे च यथायोगं महेश्वरि ।
तदेव परमेशानि राश्यादिगणनं चरेत् ॥
शिवशक्तिसमायोगात् सर्वंब्रह्ममयं जगत् ।
मासपक्षतिथीनां च नोच्चार्यं परमेश्वरि ॥
दृष्टिमात्रेण जप्तव्यं तदा सिद्धिर्भवेद् ध्रुवं ।
तत्कालं परमं कालं विज्ञेयं वीरवन्दिते ॥

तत्र यद्यत्कृतं कर्म अनन्तफलमीरितं ।
पूर्वं च कथितं सर्वं बहु किं कथ्यतेऽधुना ।।
एतत्सु गुप्तभेदं हि तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।
न वक्तव्यं पशोरग्रे प्राणन्तेऽपि सुरेश्वरि ।।
एतत्तत्वं प्रयत्नेन ब्रह्मा जानाति माधवः ।
प्रगोप्तव्यं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।।

श्रीचण्डिकोवाच :

चामुण्डाया महामन्त्रं कीदृशं वद शङ्कर ।
आराधनं कीदृशं वा तद्वदस्व दयानिधे ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

शृणु चार्वङ्गि सुभगे चामुण्डामन्त्रमुत्तमम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते ।।
कालीबीजयुगं देवि कूर्चबीजं ततः परम् ।
त्र्यक्षरी परमा विद्या चामुंडाकालिका स्वयं ।।
सप्ताहं पूजयेद्देवीमुपचारैश्च षोडशैः ।
पूजान्ते प्रजपेन्मन्त्रं त्रिसहस्रं वरानने ।।
रात्रौ तु पञ्चतत्वेन पूजयेत् परमेश्वरीं ।
तथा रात्रौ जपेन्मन्त्रं कुलशक्तिसमन्वितं ।।
यन्त्रनिर्माणयोग्यं हि पीठं कुर्यात् सुविस्तरं ।
भोगयुग्मं प्रदातव्यं मधुपर्कं यथोचितं ।।
शक्तेर्यथा विधेयं स्याद्युवत्याः परमेश्वरि ।
तथा वस्त्रं प्रदातव्यं सर्वकल्याणहेतवे ।।
अलंकारं यथायोग्यं तत्र तत्र नियोजयेत् ।
नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाद्रव्यसमन्वितं ।।
सामिषान्नं प्रदातव्यं परमान्नं सशर्करम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या बलिदानं ततः परम् ।।

प्रत्यहं परमेशानि आद्यन्ते वारुणीं हरेत् ।
वारुणीं मातृकां देवि मदिरां चेति यावतत् ॥
साङ्गे जाते महेशानि चाथवा वारुणीं हरेत् ।
एवं कृते महासिद्धि लभते नात्र संशयः ॥
धनार्थी धनमाप्नोति पुत्रार्थी पुत्रवान् भवेत् ।
विवादे जयमाप्नोति राजद्वारे जयी भवेत् ॥
सर्वत्र विजयी भूत्वा देवीपुत्र इव क्षितौ ।
रोगेभ्यो घोररूपेभ्यः पूजयित्वा प्रमुच्यते ॥
इच्छासिद्धिर्भवेत्तस्य सर्वसिद्धिर्न चान्यथा ।
कारागारगते देवि मुच्यते नात्र संशयः ॥
प्रयागं परमेशानि सारं परमदुर्लभं ।
अतिस्नेहेन देवेशि तव स्थाने प्रकाशितम् ॥
अथवा परमेशानि पठेच्चण्डीं पुरातनीं ।
पूजयेच्चण्डिकादेवीं सुगन्धिपुष्पसंयुतैः ॥
धूपदीपेन गन्धेन नैवेद्येन सुरेश्वरि ।
अवश्यं पञ्चतत्वेन पूजयेच्चण्डिकां परां ॥
आदावृष्यादिसूक्तेन चाद्यन्ते परमेश्वरि ।
पञ्चतत्वं समानीय शोधयेन्मन्त्रवित्तमः ॥
तर्पणं च ततः कृत्वा चार्घ्यपात्रे विनिःक्षिपेत् ।
अर्घ्योदकेन संप्रोक्ष्य पूजयेत् पीठदेवताम् ॥
प्रणवं च समुद्धृत्य मायाबीजं ततः परं ।
प्रभां मायां जयां सूक्ष्मां विशुद्धां नन्दनीं तथा ॥
सुप्रभां विजयां सर्वसिद्धिदां परिपूजयेत् ।
वज्रनखदंष्ट्रायुधाय हुँ देवि फडित्यपि ॥
नमोऽन्तेनैव मन्त्रेण आसनं च समर्चयेत् ।
गुरुपंक्ति पूजयित्वा पुनर्ध्यानं समाचरेत् ॥

आवाहनं ततो मुद्रां जीवन्यासं प्रपूजनम् ।
षडंगेन तु संपूज्य परिवारान् प्रपूजयेत् ।।
शङ्खनिधि पद्मनिधि तथा ब्राह्म्यादिकं यजेत् ।
इन्द्रादींश्चैव वज्रादीन पूजयेत् साधकोत्तमः ।।
प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत् साधकोत्तमः ।
पुनर्देवीं महेशानि पञ्चतत्वेन पूजयेत् ।।
प्राणायामं ततः कृत्वा गुरुमंत्रेष्टदेवताम् ।
ऐक्यं विभाव्य देवेशि मूलमन्त्र जपेत् सुधीः ।।
प्राणायामं ततः कृत्वा कारणादीन् समाहरेत् ।
तस्यै दत्वा स्वयं पीत्वा पठेच्चण्डीं सुरेश्वरीं ।।
साङ्गे याते तु माहात्म्यं पुनः पानं समाचरेत् ।
ततस्तु प्रपठेद्धीमान् क्रमेण परिपूजयेत् ।।
समाप्ते तु विलोमेन पुनर्मन्त्रं जपेत् शतं ।
यदि भाग्यवशाद्देवि शक्तियोगो भवेन्नरः ।।
तत्क्षणाद्धि विजानीयात् सर्वसिद्धिः करे स्थिता ।
एवं कृत्वा महेशानि यदि पाठं समाचरेत् ।।
माहात्म्यं तस्य पाठस्य न वक्तुं शक्यते मया ।
पंचवक्त्रेण देवेशि किं मया कथ्यतेऽधुना ।।
सकृत् पाठेन देवेशि किं पुनर्ब्रह्म केवलम् ।
अवश्यं लभते शान्ति मम वाक्यं मृषा कदा ।।
षोडशेनोपचारेण प्रथमं पूजनं चरेत् ।
द्वितीये पञ्चतत्वेन पूजयेच्चण्डिकां प्रिये ।।
सहस्रावृत्तिपाठेन यत्फलं लभते नरः ।
सकृत् पाठस्य देवेशि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः ।

या चंडी मधुकैटभादिदलनी या माहिषोन्मादिनी
या धूम्रेक्षणचंडमुंडमथनी या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः शुंभनिशुंभदैत्यदलनी या स्वर्गलक्ष्मीः परा
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥
ध्यानमेतच्चंडिकायाः शृणुष्व वीरवंदिते ।
शृणुष्व तं महेशानि त्रैलोक्येषु च दुर्लभं ॥
वेदाद्यं वाग्भवं मायां कामबीजं ततः परम् ।
स्थिरमायां महामायां कामबीजं ततौ नमः ॥
नवाक्षरं महामन्त्रं जपेदादौ शतं प्रिये ।
विपरीतं महामन्त्रं पाठान्ते तु शतं जपेत् ॥
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ऋषिच्छन्दः सुदुर्लभं ।

ॐ सप्तशती महास्तोत्रस्य मेधातिथि ऋषिर्गायत्र्यनुष्टुप् बृहती पंक्ति त्रिष्टुभ् जगत्युष्णिं महत्यश्छन्दांसि महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वती देवतास्तवकम् । ऐं ह्रीं क्लीं बीजं क्रों शक्तिर्ममात्मककामसिद्ध्यर्थे चंडीपाठे विनियोगः ॥

प्रणवेन महेशानि षडङ्गन्यासमाचरेत् ।
इति ते कथितं कान्ते चंडीपाठस्य लक्षणम् ॥
सावर्णिः सूर्यतनयः सावर्णिर्भविता मनुः ।
एतन्मात्रं पठेद्देवि किंचिन्न्यूनाधिकं नहि ॥
वारत्रयं पठेद्देवि स्थाप्यते तद्दिनत्रयम् ।
महारोगे महादुःखे राजपीडादिदारुणे ॥
नानाव्याधिगते वापि राज्यनाशे तथा भये ।
ग्रहपीडादिसंजाते ब्रह्महत्यादिपातके ॥
एवं पाठेन देवेशि मुच्यते नात्र संशयः ।
बहु किं कथ्यते देवि सर्वशान्ति लभेन्नरः ॥

सर्वशङ्काविनिर्मुक्तो जायते मदनोपमः ।
एवं कृते महेशानि यदि सिद्धिर्न जायते ।।
पुनस्तेनैव कर्तव्यं तदा सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरपार्वतीसंवादे षष्ठः पटलः ।।

सप्तम पटलः

श्री शंकर उवाच :

अथातः संप्रवक्ष्यामि त्रिपुरामन्त्रमुत्तमम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते ।।
त्रिपुरा त्रिविधा देवि बाला प्रोक्ता तथा शिवे ।
तथैव भैरवी देवी नित्यातन्त्रे मयोदिता ।।
इदानीं सुन्दरीं देवीं शृणु पार्वति सादरम् ।

श्री पार्वत्युवाच :

महामन्त्रं श्रुतं नाथ वामकेश्वरतन्त्रके ।
प्रातःकृत्यादि देवेश आराधनक्रमं वद ।।

श्री शंकर उवाच :

प्रातरुत्थाय मंत्रज्ञः सहस्रारे निजं गुरुं ।
पूर्वोक्तध्यानमाचर्य पूजयेद्बहुयत्नतः ।।
तथा च श्रीगुरोर्ध्यानं गुप्तसाधनतन्त्रके ।
कथितं च मया पूर्वं मन्त्रं शृणु वरानने ।।
वाग्वीजं च महामायां विष्णुशक्ति समुच्चरेत् ।
हसखफ्रें तथानन्दभैरवस्य मनुर्मतः ।।
तस्य शक्तेर्मनुः पश्चात् ततश्चैव हसौः स्मृतः ।
श्रीगुरोस्ततथा शक्तेर्मन्त्रमेतत् सुरेश्वरि ।।
श्रीगुर्वानन्दनाथान्तः स्वाहान्तः शक्तिरीरिता ।
वाग्बीजादि समुच्चार्य अमुकानन्दनाथ च ।।

श्रीपादुकां समुच्चार्य पूजयामि नमस्ततः ।
वाग्बीजं च शम्भुपत्नी तदुत्तरे हरप्रियां ॥
भूतबीजं समुच्चार्य प्रवदेच्च तदात्मकं ।
समर्पयामि देवेशि पूजाविधिरिति प्रिये ॥
ततश्चाष्टाक्षरं मन्त्रं अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
जपं समर्पयित्वा तु नमेदञ्जलिना प्रिये ॥

श्री देव्युवाच :

स्तुतिं च कवचं नाथ श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतं ।
श्रीगुरोः कवचं स्तोत्रं त्वया प्रोक्तं पुरा प्रभो ॥
इदानीं श्रीगुरोः स्तोत्रं कवचं मयि कथ्यतां ।
यस्य विज्ञानमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते ॥

श्री शिव उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं परमगोपनं ।
यस्य श्रवणमात्रेण संसारान्मुच्यते नरः ॥
नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते हरपूजिते ।
ब्रह्मविद्यास्वरूपायै तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
भवबन्धनपारस्य तारिणी जननी परा ।
ज्ञानदा मोक्षदा नित्या तस्यै श्रीगुरुवे नमः ॥
श्रीनाथ वामभागस्था सर्वदा सुरपूजिता ।
सदा विज्ञानदात्री च तस्यै श्रीगुरवे नमः ॥
सहस्रारे महापद्मे सदानन्दस्वरूपिणी ।
महामोक्षप्रदा देवि तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
ब्रह्मविष्णुस्वरूपा च महारुद्रस्वरूपिणी ।
त्रिगुणात्मस्वरूपा च तस्यै नित्यं नमो नमः ॥

चन्द्रसूर्याग्निरूपा च सदाघूर्णितलोचना ।
स्वनाथं च समालिग्य तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
इदं स्तोत्रं महेशानि यः पठेद्भक्तिसंयुतम् ।
स सिद्धि लभते नित्यं सत्यं सत्यं न संशयः ॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु गुरुपूजापुरःसरम् ।
स एव धन्यो लोकेस्मिन् देवीपुत्र इव क्षितौ ॥

॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरगौरीसंवादे शक्तिरूपिणीगुरोः स्तोत्रं समाप्तं ॥

श्री शङ्कर उवाच :

स्तोत्रं समाप्तं देवेशि कवचं शृणु सादरं ।
यस्य श्रवणमात्रेण वागीशसमतां बजेत् ॥
स्त्रीगुरोः कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।
तदाख्या देवता प्रोक्ता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥
क्लीं वीजं मे शिरः पातु तदाख्यातं ललाटकं ।
क्लीं बीजं चक्षुषोः पातु सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥
वकारं मे नितम्बं च रकारं जठरं तथा ।
रींकारं पादयुगलं ह्सौः सर्वाङ्ग मेऽवतु ॥
ह्सौर्लिङ्गं च लोमं च केशं च परिरक्षतु ।
श्रीं बीजं पातु पूर्वे च ह्रीं बीजं दक्षिणेऽवतु ॥
श्रीं बीजं पश्चिमे पातु उत्तरे भूतसम्वरं ।
श्रीं पातु चाग्निकोणे तु तदाख्या नैऋते ऽवतु ॥
देव्यम्बा पातु वायव्यां शम्भोः श्रीपादुकां तथा ।
पूजयामि तथा चोर्ध्वं नमश्चाधः सदावतु ॥
इति ते कथितं कान्ते कवचं परमाद्भुतं ।
गुरुमन्त्रं पठित्वा च कवचं प्रपठेद्यदि ॥
स सिद्धः सगणः सोपि शिवः साक्षान्न संशयः ।
पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं मन्त्रविग्रहं ॥

पूजाफलं लभेत्तस्य सत्यं सत्यं सुरेश्वरि ।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभां गतः ।
विवादे जयमाप्नोति मम तुल्यो न संशयः ॥
सहस्रारे भावयन् तं त्रिसंध्यं यः पठेद्यदि ।
स एव सिद्धो लोकेऽस्मिन् निर्वाणपदमीहते ॥
समस्तमङ्गलं नाम कवचं परमाद्भुतं ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ॥
देयं शिष्याय शान्ताय चान्यथा पतनं भवेत् ।
अभक्तेभ्योपि देवेशि पुत्रेभ्योपि न दर्शयेत् ॥
इदं कवचमज्ञात्वा दशविद्यां च यो जपेत् ।
स नाप्नोति फलं तस्य परे च नरकं व्रजेत् ॥

॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरगौरीसंवादे गुरोः स्त्रीकवचं समाप्तं ॥

समाप्तं कवचं देवि किमन्यत् श्रोतुमिच्छसि ।
तव स्नेहानुबन्धेन किं मया न प्रकाशितं ॥
कूर्चबीजं समुच्चार्य प्राणमन्त्रं ततः परं ।
अनेन वायुयोगेन कुण्डलीं क्रमणं चरेत् ॥
अष्टोत्तरशतं मूलमन्त्रं जप्त्वा नमेत् सुधीः ।
स्नानकर्म ततः कृत्वा संध्यां कृत्वा पुरोदिताम् ॥

श्री देव्युवाच :

संध्यायाः कीदृशं ध्यानं वदस्व परमेश्वर ।
श्रीविद्याविषये नाथ विशेषो मयि कथ्यतां ॥

श्री शिव उवाच :

ध्यायेच्च सुन्दरीं देवीं त्रिविधां विन्दुरूपिणीं ।
प्रभाते च गुरुं देवीं मध्याह्ने च सदात्मिकां ॥

सायाह्ने शक्तिरूपां च त्रिविधां विन्दुरूपिणीं ।
पूजाकाले महादेवीं ध्यानानुरूपिणीं शिवां ।।
वाग्भवेनेन्दुमाहेशीं शुक्लवर्णां विचिन्तयेत् ।
शक्तिवीजस्वरूपां च स्वर्णवर्णं विचिन्तयेत् ।।
प्रभाते शुक्लवर्णाभां मध्यान्हे..............।
सायान्हे रक्तवर्णाभां भावयेत्साधकोत्तमः ।।
.........महेशानि संध्यां कुर्याद्विचक्षणः ।
शिवपूजां ततः...............परदेवताम् ।।
त्रिविधा परमा विद्या महाविद्या...........।
पतिपूजां बिना पूजां न गृह्णाति कदाचन ।।
अत...........आदौ लिंगं प्रपूजयेत् ।
पञ्चक्षरं पञ्चवक्त्रं पूजयेद्‌बहुयत्नतः ।।
ततस्तु पूजयेद्देवीं त्रिपुरां मोक्षदायिनीं ।

पार्वत्युवाच :

किमाधारे यजेच्छम्भुं कृपया वद शङ्कर ।
आधाररभेदे देवेश साधकः फलभाग् भवेत् ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

पूजयेत्पार्थिवे लिंगे पाषाणलिंगके तथा ।
स्वर्णलिंगेऽथवा देवि रौप्ये ताम्रे च कांस्यके ।।
पारदे वाथ गङ्गायां स्फाटिके मर्कतेऽपि वा ।
कार्यभेदे लौहलिंगं भस्मनिर्माणलिंगके ।।
बालुकानिर्मिते लिंगे गोमये वाथ पूजयेत् ।
पार्थिवे पूजनं देवि तोडोलाख्ये मयोदितं ।।
संस्कारं च बिना देवि पाषाणादौ न पूजयेत् ।
संस्कार च प्रवक्ष्यामि विशेष इह यद्भवेत् ।।

रौप्यं च स्वर्णलिंगं च स्वर्णपात्रे निधाय च ।
तस्मादुत्तोल्य तद्द्रव्यं दुग्धमध्ये दिनत्रयं ।।
ततो वेदोक्तविधिना संस्कारं च समाचरेत् ।।

श्रीदेव्युवाच :

लिंगप्रमाणं देवेश कथयस्व मयि प्रभो ।
पार्थिवे च शिलादौ च विशेषोयत्र भावयेत् ।।

श्री शिव उवाच :

मृत्तिकांतोलकं ग्राह्यमथवा तोलकद्वयं ।
एतदन्यं न कर्तव्यं कदाचिदपि सुन्दरि ।।
शिलादौ परमेशानि स्थूलं च फलदायकम् ।
अंगुष्ठमात्रं देवेशि यद्वा हेमाद्रिमानकम् ।।
क्रमेण परमेशानि फलं बहुविधं लभेत् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरपार्वतीसंवादे समाप्तः पटलः ।।

अष्टम पटलः

श्री पार्वत्युवाच :

शृणु नाथ परानन्द परापरकुलात्मक ।
त्वां विना त्राणकर्ता च मम ज्ञाने न वर्तते ।।
शिवबीजं महादेव शिवरूपं न चान्यथा ।
लिंगरूपं कथं देव तद्वदस्व दयानिधे ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

यथा ज्योतिर्मयं लिंगं कैलासशिखरे मम ।
तस्यैव षोडशांशकं काश्यां विश्वेश्वरस्थितं ।।
पूर्वबीजं महेशानि शिवरूपं न चान्यथा ।
शिलामध्ये च यच्चक्रं लक्ष्मीनारायणं स्मृतं ।।

पारदस्य शतांशैकं लक्ष्मीनारायणं नहि ।
प्रकारं विष्णुरूपं च आकारं कालिका स्वयं ।।
रेफं शिवं दकारं च ब्रह्मरूपं न चान्यथा ।
पारदं परमेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।।
यो जपेत्पारदं लिंगं स एव शम्भुराख्ययः ।
आजन्ममध्ये यो देवि एकधा यदि पूजयेत् ।।
स एव धन्यो देवेशि स ज्ञानी स तु तत्ववित् ।
स ब्रह्मवेत्ता स धनी स राजा भुवि पूजितः ।।
अणिमादिविभूतीनामीश्वरः साधकोत्तमः ।
स्त्रियः स्वभावचपला गोपितुं नैव शक्यते ।।
अतएव हि देवेशि विरता भव पार्वति ।

श्री देव्युवाच :

कथयस्व कृपनाथ करुणा यदि वर्तते ।
तव वाक्यं बिना नाथ क उक्तः कश्च शब्दितः ।।

श्री शिव उवाच :

पारदं मम बीजं हि ताडनं नैव कारयेत् ।
ताडनाद्वित्तनाशः स्यात्ताडनात्सुतहीनता ।।
ताडनाद्रोगयुक्तः स्यात्ताडनान्मरणं भवेत् ।।

श्री पार्वत्युवाच :

एतद्विघ्नादिकं नाथ सत्यमेव न संशयः ।
विघ्नादिरहितं नाथ कथयस्व दयानिधे ।।

श्री शिव उवाच :

पारदे शिवनिर्माणे नानाविघ्नं यतः शिवे ।
अतएव हि तत्रादौ शान्तिस्वस्त्ययनं चरेत् ।।
द्वादशं पार्थिवं लिंगं उपचारैश्च षोडशैः ।
पट्टादिसूत्रनिर्माणं रचितं शुक्लमेव च ।।

पुरुषस्य यथायोग्यं वस्त्रयुग्मं निवेदयेत् ।
भोगयोग्यं प्रदातव्यं मधुपर्कं सुरेश्वरि ॥
अलंकारं यथाशक्ति दद्यात् कल्याणहेतवे ।
पूजयेद्बहुयत्नेन बिल्वपत्रेण पार्वति ॥
तोडोलोक्तेन विधिना प्रत्येकमयुतं जपेत् ।
आदौ पञ्चाक्षरं मन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत् ॥
पूजान्ते प्रजपेत्पश्चात् प्रासादाख्यं महामनुं ।
दक्षिणान्तं समुच्चार्य हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥
ताम्बूलं च तथा मत्स्यं वर्जयेन्न कदाचन ।
अस्मिन् तन्त्रे हविष्यान्नं ताम्बूलं मीनमुत्तमम् ॥
होमयेत्परमेशानि दशांशं वा शतांशकम् ।
होमस्य दक्षिणा कार्या तदा विघ्नैर्न लिप्यते ॥
ततः परस्मिन् दिवसे पारदमानयेत् सुधीः ।
तस्योपरि जपेन्मन्त्रं सर्वबन्धनवात्मकम् ॥
व्योमबीजं शिवान्तं च वर्णाद्यं बिन्दुमस्तकं ।
वायुबीजं च त्रितयं त्रितयं त्र्यंबकं प्रिये ॥
इदं मन्त्रं महेशानि प्रजपेदौषधोपरि ।
पारदे प्रजपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं यदि ॥
तदैवौषधियोगेन बन्धो भवति नान्यथा ।
ततः परस्मिन् दिवसे शृणु मत्प्राणवल्लभे ॥
वरयेत्कर्मकर्त्तारं यथोक्तविभवावधि ।
सुवर्णचम्पकाकारं कर्णयुग्मे निवेदयेत् ॥
चतुष्कोणेषु तं स्वर्णं ग्रीवायां सुमनोहरम् ।
हस्तद्वये महेशानि दद्याद्वलययुग्मकम् ॥
वलयं शुक्लवर्णं च अंगुरीयं तथैव च ।
तस्मै दद्यात् पीतवस्त्रं क्षौमवस्त्रयुगं शिवे ॥

एवं कृते महेशानि शिवरूपं विचिन्तयेत् ।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विधानं शृणु पार्वति ।।
प्रस्तरो परि संस्थाप्य झिण्टीपत्ररसेन च ।
प्रस्तरे च समालोड्य कुर्यात् कर्दमवत् प्रिये ।।
निर्माणयोग्यं तत्रैव यदि स्याद्वीरवंदिते ।
तदा निर्माय तं लिगं पुनर्दृढ़तरं चरेत् ।।
स्वपुष्पसंयुते वस्त्रे अंगारे च करीषके ।
किंचिदुष्णं प्रकर्तव्यं अतो दृढ़तरो भवेत् ।।
ततो निर्माय तं लिगं पुनर्दृढ़तरो भवेत् ।
विना चौषधियोगेन भस्मं भवति तत्क्षणात् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरगौरीसंवादे अष्टमः पटलः ।।

नवम पटलः

श्री शिव उवाच :

भस्मप्रकारं देवेशि शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
कर्तव्यं रचयेदादौ यथोक्तविभवावधि ।।
सौवर्णं मौक्तिकं युक्तं कर्णयुग्मे निवेदयेत् ।
हस्तयुग्मे च वलयं अंगुरीयं तथैव च ।।
ताड़द्वयं बाहुयुग्मे शुद्धकांचननिर्मितम् ।
ग्रीवायां दापयेत् स्वर्णं चतुष्कोणं मनोहरं ।।
वस्त्रयुग्मं पट्टसूत्रनिर्मितं च सुशोभनम् ।
उष्णीशं पीतवस्त्रं च परीधानं च वाससं ।।
एवं हि वरयेद्देवि कर्मयोग्यं निवेदयेत् ।
चिन्तयेच्छिवरूपं च चिन्तयेत्त्रिगुणात्मकम् ।।
ततः परस्मिन् दिवसे शान्तिस्वस्त्ययनं चरेत् ।
निर्मितं शुद्धवर्णेन बिल्वपत्रेण सुन्दरि ।।

सहस्रसंख्यया जप्यं पार्थिवं द्वादशं यजेत् ।
षोडशेनोपचारेण पट्टवस्त्रयुगेन च ॥
अलङ्कारैर्विचित्रैश्च पूजयेत् परमेश्वरि ।
भोगयोग्यं प्रदातव्यं मधुपर्कं शुचिस्मते ॥
स्वर्णासनेन संस्थाप्य प्रत्येकं पूजनं चरेत् ।
पूजान्ते प्रजपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं सुधीः ॥
षडक्षरं महामन्त्रं ततः प्रासादसंज्ञकम् ।
दिक्सहस्रं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं हुनेत् प्रिये ॥
होमस्य द्रव्यं देवेशि शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
बालुकानिर्मिते वापि कुण्डे वा परमेश्वरि ॥
द्वात्रिंशदंगुलीमानं विस्तृतं तत्समं प्रिये ।
षोडशांगुलीमानं हि कुण्डं कुर्यात् सुलक्षणं ॥
तदूर्द्धे परमेशानि वेदनत्रांगुलीं शिवे ।
एवं हि स्वर्णकुंभं च ताम्रकुम्भासमर्थिना ॥
एतदन्यतरं कुम्भं स्थापयेद्वेदिकोपरि ।
पट्टवस्त्रेण युग्मेन वेष्ठयेद्बहुयत्नतः ॥
होमयेद्बिल्वपत्रेण यथोक्तविधिना शिवे ।
त्रिमध्वक्तेन विधिना ततः सिद्धो भवेद् ध्रुवं ॥
ततश्च दक्षिणा देया यथोक्तविभवावधि ।
सर्वद्रव्यसमं पुण्यं द्विगुणं वा प्रदापयेत् ॥
दक्षिणाविहीनो यज्ञः सिद्धिदाने च मोक्षदः ।
अतएव महेशानि दक्षिणा विभवावधि ॥
वराहवत्समानीय जन्ममात्रेपि सुन्दरि ।
पारदं तोलकं मानं भक्षयेद्बहुयत्नतः ॥
पुनस्तोलकमानं हि मातृदुग्धं ततः परम् ।
पुनश्च भक्षयेद्धीमान् ततो दुग्धं तु भक्षयेत् ॥

ततस्तद्वत् समानीय नवद्वारं प्रयत्नतः ।
सूत्रयोगेन देवेशि बन्धं कुर्यात् प्रयत्नतः ।।
ततश्चाहलकी मन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत् ।
गजप्रमाणं देवेशि दीर्घप्रस्थं तु खातकम् ।।
करीषकेण देवेशि पूर्णं कुर्यात्तु खातकम् ।
तन्मध्ये स्थापयेद्वत्सं सन्दह्य च प्रयत्नतः ।।
वह्निस्थिते महेशानि न स्पृशेत् कुण्डमुत्तमम् ।
कुण्डेषु शीतले प्राप्ते उत्थाप्य वहुयत्नतः ।।
सर्वप्रकाशकं मन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत् ।
विश्वेश्वरं प्रवक्ष्यामि श्रृणु पार्वति सादरम् ।।
पारदं तोलकं मानं ताम्रपात्रे तु लेपयेत् ।
चूर्णं कुर्यान्महेशानि गंधकं सार्द्धतोलकम् ।।
समाच्छाद्य प्रयत्नेन चूर्णेन परमेश्वरि ।
सन्दहेद्बहुयत्नेन मन्दमन्देन वह्निना ।।
कृष्णवर्णं वेणुयुक्तं दृष्ट्वा उत्थाप्य सुन्दरि ।
रतिप्रमाणं तद्द्रव्यं भक्षयेद्यदि सुन्दरि ।।
सत्यं सत्यं सर्वारिष्टं भक्षणान्नाशमाप्नुयात् ।
अनुपानमुष्णतोयं मत्स्यादीन् परिवर्जयेत् ।।
एवं प्रयोगं देवेशि न कुर्यात् पुत्रवान् गृही ।
प्रथमे दिवसे पुत्रान् द्वितीयदिवसे धनम् ।।
तृतीयदिवसे शक्तिं नाशयामि न संशयः ।
चतुर्थे दिवसे रोगं पञ्चमे शोकमाप्नुयात् ।।
अतएव महेशानि शान्तिस्वस्त्ययनं चरेत् ।
पूर्वोक्तविधिना मन्त्री चतुर्गुणमथाचरेत् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरगौरीसंवादे
नवमः पटलः ।।

दशम पटलः

श्री देव्युवाच :

नरश्चेति गुरुर्नाथ मन्त्रं वर्णात्मकं तथा ।
ध्यानानुरूपिणं देव एकत्वं वा कथं भवेत् ।।

श्री शङ्कर उवाच :

गुरुवक्त्रान्महामन्त्रं लभते साधकोत्तमः ।
यद्देयो जायते बीजस्तस्य मूर्तिर्भवेद्ध्रुवम् ।।
देवतायाः शरीरं तु बीजादुत्पद्यते प्रिये ।
गुरोराज्ञानुसारेण चान्यमूर्तिस्तु जायते ।।
गुर्वादिभावनाद्देवि भावसिद्धिः प्रजायते ।
अतएव महेशानि चैकत्वं परिकथ्यते ।।

श्री देव्युवाच :

यच्चाक्षरं महादेव तदाकारं विचिन्तयेत् ।
अचक्षुषो महादेव ध्यानं वा कीदृशं भवेत् ।।

श्री शिव उवाच :

शब्दब्रह्ममयं देवि मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ।
आकाररहिते देवि यथा ध्यानादिकं भवेत् ।।
तथैवोच्चारणेनैव भक्तियुक्तेन चेतसा ।
सत्यं सत्यं महेशानि प्रत्यक्षं नात्र संशयः ।।

श्री देव्युवाच :

पशुप्रदाने वाक्यं तु कीदृशं वद शङ्कर ।
येन वाक्येन देवेश काली तुष्टा भवत्यपि ।।
मृगे महिषे चोष्ट्रे च पशुशब्दं न योजयेत् ।
छागले च तथा सिंहे व्याघ्रे च परमेश्वरि ।।

पशुशब्दं योजयित्वा महादेव्यै निवेदयेत् ।
पशुभावस्थितो मन्त्रो महिषो दीयते यदि ।।
बलिदानं प्रवक्तव्यं न मांस भक्षयेन्नर: ।
सम्ययक् फलं न लभते दशांशं लभते प्रिये ।।
महिषादि प्रदातव्यं दिव्यवीरमते स्थित: ।
स एव सिद्धिमाप्नोति फलं सम्यक् प्रियंवदे ।।
पशुदानं विना देवि पूजयेन्न कदाचन ।
तथा च नित्यपूजायां यदि शक्तो भवेन्नर: ।।
केवलं बलिदानेन सिद्धो भवति नान्यथा ।
निर्धन: परमेशानि यदि पूजादिकं चरेत् ।।
वत्सरान्ते प्रदातव्यं बलिमेकं सुरेश्वरि ।
अन्यथा नैव सिद्धि: स्यादाजन्मावधि पूजनात् ।।
बलिदानं महायज्ञं कलिकाले तु चण्डिके ।
अश्वमेधादिकं यज्ञं कलौ नास्ति महेश्वरि ।।
केवलं बलिदानेन अश्वमेधफलं लभेत् ।
यज्ञावशेषं यद्द्रव्यं भोजनीयं न चान्यथा ।।
यज्ञावशेषभोगेन स यज्ञो नात्र संशय: ।
न भक्षयेद्यदि मोहेन न यज्ञफलभाग् भवेत् ।।
त्याज्यं द्रव्यं कथं देवि यतो देव्यै निवेदयेत् ।
ब्रह्मरूपं महातन्त्रं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ।।
स पूत: सर्वपापेभ्यो यदि चैकक्षरं श्रुतम् ।
महाशक्तियुतो भूत्वा शृणोति पठनं यदि ।।
किं तस्य ध्यानपूजायां तीर्थस्नानेन तस्य किं ।
शब्दब्रह्ममयं ज्ञात्वा समस्तं यदि चण्डिके ।।
केवलं श्रवणेनैव स सिद्धो नात्र संशय: ।
अष्टादशपुराणानां श्रवणे चैव यत्फलम् ।।

चतुर्वेदेन चाङ्गेन श्रवणे यत्फलं लभेत् ।
अस्य मन्त्रस्य देवेशि कलां नार्हन्ति षोडशीं ॥
ब्रह्मरूपमिदं तन्त्रं सारात्सारतरं परम् ।

॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे शिवदुर्गासंवादे दशमः पटलः ॥

एकादश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

प्रासादमण्डलं वापि यदि देव्यै निवेद्यये ।
विधानं तस्य माहात्म्यं वद मे परमेश्वर ॥

श्री शंकर उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि येन प्रासादमुत्सृजेत् ।
तस्यैव पश्चिमे भागे वेदिकीं चतुरस्त्रिकां ॥
प्रकुर्याद्बहुयत्नेन वस्त्रेण वेष्टनं चरेत् ।
कुम्भयुग्मे क्षौमवस्त्रं रक्तवस्त्रं निवेदयेत् ॥
ईशानन्येच यजेद्देवीं आग्नेय्यामग्निदेवतम् ।
चतुःषष्ट्युपचारेण पूजयेदिष्टदेवतां ॥
अभावे पूजयेद्देवीं तदर्धेन प्रयत्नतः ।
अथवा परमेशानि यथाशक्त्युपचारतः ॥
पूजयेद्बहुयत्नेन ततो होमादिकं चरेत् ।
आगमोक्तविधानेन कुर्यात्तत्र कुशण्डिकां ॥
त्रिमधवक्तेन देवेशि बिल्वपत्रेण होमयेत् ।
सहस्रं होमयेन्मन्त्री शतन्यूनं न कारयेत् ॥
अद्येत्यादि समुच्चार्य सौरमासं समुच्चरेत् ।
तिथिगोत्रं चामुकोऽहं धर्मार्थकाममेव च ॥
प्राप्तये परमेशानि ततो मूलं समुच्चरेत् ।
देवतायैः नमः पश्चाद्दक्षिणां दापयेद् गुरौ ॥

कुम्भतोयेन देवेशि स्नापयेद् यजमानकम् ।
शान्त्यादीन् स समुच्चार्य शान्ति कुर्यात्ततो गुरुः ॥
सर्वादौ गुरुदेवस्य वरणं कारयेद्बुधः ।
सुवर्णचम्पकाकारं कर्णयुग्मे निवेदयेत् ॥
चतुष्कोणयुतं स्वर्णं ग्रीवायां परिधापयेत् ।
उष्णीशं च ततो दद्यात् कण्ठे मालां निधापयेत् ॥
ताडयुग्मं ततो बाहौ वलयं मणिबन्धके ।
अंगुल्यामंगुरी देया दिव्यवस्त्रं निवेदयेत् ॥
एवं हि वरणं कृत्वा कर्मयोग्यं विचिन्तयेत् ।
गुरुं वा गुरुपुत्रं वा वरयेद्यत्नतः सुधीः ॥
सदस्यं च प्रकर्तव्यं तन्त्रधारं च तत्र वै ।
ब्रह्माणं न हि कर्तव्यं केवलं वरयेद् गुरुम् ॥
गुरुभृत्यो महेशानि भैरवो नात्र संशयः ।
स्वीयेन परिधायेन वाससा तोषयेद् गुरुम् ॥
स्वयं होता भवेद्विप्रो गुरोराज्ञानुसारतः ।
मायाबीजं समुच्चार्य आधारशक्तये नमः ॥
अनेन मनुना देवि देव्याः संस्कारमाचरेत् ।
भुवस्वेत्यादिमन्त्रेण घटयुग्मेऽभिमन्त्रितम् ॥
अस्त्रान्ते नैव मूलेन उष्णीशं परियोजयेत् ।
वेदोक्तं नैव स्मृत्युक्तं न मन्त्रं योजयेत्सुधीः ॥
एवं कूपादिदानेषु कर्तव्यं परमेश्वरि ।
अन्यत्सर्वं समानं हि प्रासादादिस्थले पुनः ॥
कूपादियोजनं कुर्याद्यष्टिकाष्ठविनिर्मितं ।
चतुर्हस्तप्रमाणं च मध्यभागेन पोतनम् ॥
मेलमन्त्रं समुच्चार्य ततो वह्निवधूं न्यसेद् ।
ततो यष्टिं समुच्चार्य पोतयामि वदेत्सुधीः ॥

तत्र सन्तरणं धेनुं नैव कुर्याद्विचक्षणः ।
धेनुसन्तरणेनैव फलहानिः प्रजायते ॥
स्वर्णरौप्यं प्रवालं च दक्षिणां परियोजयेत् ।
स्नापायित्वा कुम्भतोयैः शान्ति कुर्यात्ततो गुरुः ॥
अनेनैव विधानेन कूपाद्युत्सर्गमाचरेत् ।
वापीकूपतडागोदि ह्यनेनोत्सर्गमाचरेत् ॥
दीर्घिकां च पुष्करिणीं ह्यनेनैव जलाशयं ।
उदकं परया भक्त्या महादेव्यै निवेदयेत् ॥
(उत्सृज्य परया भक्त्या--इति पाठान्तरं ।)
पुरुषं सप्तमं काण्डे पितृवंशे च मातरि ॥
सप्तमं पुरुषं काण्डे मातुवंशे सम प्रिये ।
कैलासे निवसेन्नित्यं देव्या वरप्रसादतः ॥
स्वयं देवस्वरूपश्च जीवन्मुक्तो न संशयः ।
अश्वमेधसहस्रेण वाजपेयशतेन च ॥
यत्फलं लभते देवि तस्माल्लक्षगुणं भवेत् ।
मेरुतुल्यं सुवर्णं तु ब्राह्मणे वेदपारगे ॥
दत्वा यत्फलमाप्नोति तस्य कोटिगुणं भवेत् ।
पूर्णशस्येन देवेशि सप्तद्वीपां वसुन्धरां ॥
प्रदद्याद्बहुयत्नेन ब्राह्मणे वेदपारगे ।
तस्य कोटिगुणं पुण्यं अनेन परमेश्वरि ॥
सदक्षिणं व्रतं सर्वं दानं यद्वेदपारगे ।
तस्य कोटिगुणं पुण्यमनेन परमेश्वरि ॥

श्री पार्वत्युवाच :

यज्ञसूत्राधारणे तु भूपूज्यो नात्र संशयः ।
इदानीं यज्ञसूत्रस्य विधानं मयि कथ्यतां ॥

श्री शंकर उवाच :

यज्ञसूत्रस्य यन्मानं तच्छृणुष्व वरानने ।
ऋग्वेदी धारयेत् सूत्रं नाभेरूर्द्धं स्तनादधः ।।
यजूषां सूत्रमानं च परमाश्चर्यं हि शैलजे ।
बाहुमूलप्रमाणेन यज्ञसूत्रं द्विजातिभिः ।।
धारणीयं प्रयत्नेन नान्यद्रूपं कदाचन ।
सामगस्य यज्ञसूत्रं त्रिविधं परमेश्वरि ।।
ब्रह्मरंध्रान्नाभिदेशपर्यन्तं यज्ञसूत्रकं ।
अथवापि च ग्रीवायामारोप्य नाभि संस्पृशेत् ।।
तस्मात् पृष्ठे मेरुदण्डपर्यन्तं यज्ञसूत्रकं ।
अथर्वी धारयेत् सूत्रं सामगस्य प्रमाणतः ।।
अथवा धारयेद्यज्ञसूत्रं परममोहनं ।
आज्ञाचक्रान्नाभिदेशपर्यन्तं यज्ञसूत्रकं ।।
एतत्संकेतमज्ञात्वा यः कुर्यात् सूत्रधारणं ।
स चाण्डालसमो देवि यदि व्याससमो भवेत् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे श्रीदुर्गाशिवसंवादे एकादशः पटलः ।।

द्वादश पटलः

श्रीशङ्कर उवाच :

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पूजाधारं सुदुर्लभं ।
शालग्रामे मनौ यन्त्रे प्रतिमायां जले घटे ।।
पुस्तिकायां च गंगायां शिवलिंगे प्रसूनके ।

तद्यथा—

शालग्रामे शतगुणं मनौ तद्वत् फलं लभेत् ।
यन्त्रे लक्षगुणं प्रोक्तं मूर्तौ लक्षं सुलोचने ।।
घटे चैकगुणं प्रोक्तं जले चैकगुणं प्रिये ।
पुस्तिकायां सहस्रं तु गंगायां तत्समं फलं ।।

शिवलिङ्गे ह्यनन्तं हि विना पार्थिवलिङ्गके ।
पुष्पयन्त्रे महेशानि पूजनात् सर्वसिद्धिभाक् ।।
शालग्रामे च पूजायां न लिखेद्यंत्रमुत्तमम् ।
प्रतिमायां च पूजायां न लिखेद्यंत्रमुत्तमम् ।।
प्रतिमायाश्च पुरतो घटं स्थाप्य प्रयत्नतः ।
परिवारान् यजेत्तत्र घटे तु परमेश्वरि ।।
मन्त्राधिष्ठितदेवांश्च घटवक्त्रे च पूजयेत् ।
समस्तदेवतारूपं घटं च परिचिन्तयेत् ।।
सुरद्रुमस्वरूपोऽयं घटो हि परमेश्वरि ।
महायन्त्रं तु देवेशि यदि कुर्याच्च साधकः ।
तत्र मूर्तिः न कुर्याच्च कदाचिदपि मोहतः ।
यदि मूर्ति प्रकुर्यात्तु तत्र यन्त्रं न कारयेद् ।।
यदि कुर्यात्तु मोहेन यजेद्वारद्वयं प्रिये ।
द्विगुणं पूजनं तत्र द्विगुणं बलिदानकम् ।।
द्विगुणं प्रजपेन्मन्त्रं द्विगुणं होमयेत् सुधीः ।
अन्यथा विफला पूजा विफलं बलिदानकम् ।।
सर्वं हि विफलं यस्मात्तस्माद् यन्त्रं न कारयेत् ।
इति ते कथितं कान्ते पूजाधारं सुदुर्लभम् ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे श्रीदुर्गाशिवसंवादे द्वादशः पटलः ।।

त्रयोदश पटलः

अथातः संप्रवक्ष्यामि शिवलिङ्गस्य लक्षणम् ।
पार्थिवे शिवपूजायां सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।।
पाषाणे शिवपूजायां द्विगुणं फलमीरितम् ।
स्वर्णलिङ्गे च पूजायां शत्रूणां नाशनं मतम् ।।

सर्वसिद्धीश्वरो रौप्ये फलं तस्माच्चतुर्गुणम् ।
ताम्रे पुष्टिं विजानीयात् कांश्ये च धनसञ्चयः ।।
पारदस्य च माहात्म्यं पुरैव कथितं मया ।
गङ्गायां च लक्षगुणं लाक्षायां रोगवान् भवेत् ।।
स्फाटिके सर्वसिद्धिः स्यात्तथा मारकते प्रिये ।
लौहलिङ्गे रिपुनाशं काभदं भस्मलिंगके ।।
बालुकायां काम्यसिद्धिर्गोमये रिपुहिंसनम् ।
स्वर्णलिंगस्य माहात्म्यं सर्वकामार्थमोक्षदम् ।।
आधारभेदे यत्पुण्यं चाधिकं कथितं तु ते ।
अतिरिक्तफलान्येतदाधारस्य सुलोचने ।।
शिवस्य पूजनाद्देवि चतुर्वर्गाधिपो भवेत् ।
अष्टैश्वर्ययुतो मर्त्यो शम्भुनाथस्य पूजनात् ।।
स्वयं नारायणः प्रोक्तो यदि शम्भुं प्रपूजयेत् ।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः संस्थिताः सदा ।।
तेषां पूजा भवेद्देवि शम्भूनाथस्य पूजनात् ।
स्वर्णपुष्पसहस्रेण यत्फलं लभते नरः ।।
तस्माल्लक्षगुणं पुण्यं भग्नैकबिल्वपत्रके ।
भग्नैकबिल्वपत्रस्य सहस्रैकेन भागतः ।।
मेरुतुल्यसुवर्णेन तत्फलं नहि लभ्यते ।
शुद्धाशुद्धविचारोपि नास्ति तत्शिवपूजने ।।
येन केन प्रकारेण बिल्वपत्रैः प्रपूजयेत् ।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा स नरः शिव एव हि ।।
ब्रह्माण्डमध्ये ये देवास्तद्बाह्ये यश्च देवताः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्ति केवलं शिवपूजनात् ।।
पुष्पं गन्धं जलं द्रव्यं लिंगोपरि नियोजयेत् ।
लिंगमध्ये महावह्निः सैव रुद्रः प्रकीर्तितः ।।

रुद्रोपरि क्षिपेद् यद्यत्तदेव भस्मतां गतं ।
साक्षाद् होमो महेशानि शिवस्य पूजनाद् भवेत् ।।
कुशाग्रमानं यत्तोयं तत्तोयेन यजेद्यदि ।
सत्यं सत्यं हि गिरिजे तज्जलं सागरोपमं ।।
पुष्पं च मेरुसदृशं लिङ्गोपरि नियोजनात् ।
लिङ्गस्य मस्तके देवि यदन्नं परितिष्टति ।।
तदन्नस्य च दाने च क्षितिदानफलं लभेत् ।
एकेन तंडुलेनैव यदि लिङ्ग प्रपूजयेत् ।।
ब्रह्माण्डपात्रसम्पूर्णमन्नदानफलं लभेत् ।
एकया दूर्वया वापि योऽर्चयेच्छिवलिङ्गकम् ।।
सर्वदेवस्य शीर्षे तु चार्घ्यदानफलं लभेत् ।
सामान्यतोयमानीय यदि स्नायान्महेश्वरं ।।
सार्द्धत्रिकोटितीर्थस्य स्नानस्य फलभाग् भवेत् ।

श्री चण्डिकोवाच :

तारिणी ब्रह्मणः शक्तिस्त्रिपुरा वैष्णवी तथा ।
कथं शाङ्कभरी तारा त्रिपुरा शांभवी कथं ।।

श्री शिव उवाच :

शालीदेहस्वेदजाता सावित्र वेदमातृका ।
त्रिवर्गदात्री सा देवी ब्रह्मणः शक्तिरेव च ।।
गुप्तरूपा महाविद्या शैवी सैकजटा परा ।
तस्माल्लक्ष्मी वैष्णवी या त्रिवर्गफलदायिनी ।।
गुप्तरूपा महाविद्या श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।
शाम्भवी परमा या सा त्रिपुरा मोक्षदायिनी ।।
एकैव हि महाविद्या नाम मात्रं पृथक् पृथक् ।
तथैव पुरुषश्चैव नाममात्रविभेदतः ।।

श्रीचण्डिकोवाच :

मन्त्रच्चारणमात्रेण तद्धत्मा तन्मयो भवेत् ।
कथं वा वातुल: सोऽपि कथं वा रोगवान् भवेत् ।।

श्री शिव उवाच :

मन्त्रच्छन्नाद्वातुलत्वं रोगो देहे न जायते ।
मन्त्रच्छन्नं महेशानि आत्मा देवि समाहित ।।
अर्भक्ति चाक्षरे भ्रान्ति लुप्तस्थिरं तथैव च ।
ह्रस्वदीर्घश्च कथनं स्वप्ने तु चाष्टधा स्मृत: ।।
अभक्त्या नैव सिद्धि: स्यात् कल्पकोटिशतैरपि ।
एवं मन्त्रश्चान्यथावा चेति भ्रान्त्या च वातुल: ।।
लुप्तवर्णे बुद्धिनाशश्छिन्ने लाभो भवेत् किल: ।
ह्रस्वोच्चरे व्याधियुक्तो दीर्घजापे वसुक्षय: ।।
कथने मृत्युमाप्नोति स्वप्नेऽपि चैव शैलजे ।
कालिकायाश्च ताराया मंत्रोऽपि ज्वलदग्निवत् ।।
विप्रजपेन देवेन प्रेमभावेन चेतसा ।
यदि मन्त्रं हरेद्देवि शृणु साधकलक्षणम् ।।
सर्वाङ्गे वै भवेज्ज्वाला देहमध्ये विशेषत: ।
तोये सत्यं न जायंते तथैवौषधसेवने ।।
सदा वातुलवत् सर्वं प्रत्यक्षो स्वप्नवद् भवेत् ।
वर्षमध्ये त्रिवर्षे वा मृत्युस्तस्य न सशय: ।।

श्रीचण्डिकोवाच :

मन्त्रच्छन्नं चाष्टविधं तव वक्त्राच्छ्रुतं मया ।
यदि देवाद्भवेद्देव तस्योपायं वदस्व मे ।।

श्री शङ्कर उवाच :

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरात् ।
यदि भक्तिर्भवेद्देवि तस्य सिद्धिरदूरत: ।।

गुरुणा तत्सुतेनैव साधकेन वरानने ।
अक्षरे दूषणं हित्वा पुनर्मन्त्रं प्रकाशयेत् ।।
लुप्तव ; समुत्थाप्य पुनर्मन्त्रं प्रकाशयेत् ।
चक्रभेदेन षट्केन तथैव योनिमुद्रया ।।
एकोच्चारे जपेन्मन्त्रं लक्षमेकं वरानने ।
गुर्वादिना महेशानि छिन्नदोषनिकृन्तनम् ।।
गुरुणा लक्षजापेन तन्मन्त्रं श्रावयेत्त्रिधा ।
दूषणं ह्रस्वदीर्घस्य शान्तिश्चात्र न संशयः ।।
गुरुणा तत्सुतेनैव साधकेनैव शैलजे ।
उक्तमार्गेण देवेशि जपेल्लक्षचतुष्टयम् ।।
तद्दशांशं हुनेत् पश्चात् तर्पणादि समाचरेत् ।
ततो यदि च नैवाभूत् साधकः स्थिरमानसः ।।
चतुर्गुणं हि कर्तव्यं शिष्यस्य मुक्तिहेतवे ।
यदि मृत्युर्भवेत्तस्य तथापि मुक्तिभाग् भवेत् ।।
कथनस्य दोषशान्तिर्भवत्येव न संशयः ।
स्वप्नेऽपि मन्त्रकथने श्मशानसाधनं चरेत् ।।
कुजवारे शनौ वारे प्रथमे गमनं चरेत् ।
सप्ताहं वा यजेद्देवीं तुरीयं वा दिनं यजेत् ।।
श्मशानसाधनं वक्ष्ये शृणु चैकाग्रचेतसा ।
स्वर्णं रौप्यं तथा वस्त्रं दत्वा वरणमाचरेत् ।।
स्वर्णपीठं प्रदातव्यं मधुपर्कं यथोदितम् ।
राजपत्नी येन तुष्टा तोषयेत्तेन वाससा ।।
अलङ्कारं यथायोग्यं तत्र तस्य नियोजयेत् ।
नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाद्रव्यसमन्वितम् ।।
सामिषान्नं गुडं छागं सुरापिष्टकपायसम् ।
भोग्यद्रव्यं जले दद्याद्यदि भोक्ता न तिष्ठति ।।

एवं पूजां समर्प्यादौ शिवपूजां समाचरेत् ।
षोडशैरुपचारैश्च लिङ्गे तु चैकविंशति ।।
अष्टोत्तरशतेनैव बिल्वपत्रैः सचन्दनैः ।
प्रत्येकं पूजयेन्मन्त्रं गजान्तकसहस्रकम् ।।
सहस्रं होमयेत् पश्चाद्बिल्वपत्रैर्वरानने ।
एवं कृते लभेच्छान्ति दीर्घायुर्नात्रसंशयः ।।

।। इति मातृकाभेदतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे त्रयोदशः पटलः ।।

चतुर्दश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

शृणु नाथ परानन्द परापर जगत्पते ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि मालायाः कीदृशो जपः ।।
का माला कस्य देवस्य तद्वदस्व समाहितः ।

श्रीशङ्कर उवाच :

वैष्णवे तुलसीमाला गजदन्तैर्गणेश्वरे ।
कालिकाया महामन्त्रं जपेद्रुद्राक्षमालया ।।
तारायाश्च जपेन्मन्त्री महाशङ्खाख्यमालया ।
महाशङ्खाख्यमालायां सर्वां विद्यां जपेत् सुधीः ।।
अकस्माद्वै महासिद्धिर्महाशंखाख्यमालया ।
तथैव सकला विद्या महाशंखे वसेत् सदा ।।
स्फाटिकी सर्वदेवस्य प्रवालैः सकलां जपेत् ।
स्वर्णरौप्यसमुद्भूतां सर्वदेवेषु योजिताम् ।।
कालिकायाश्च सुन्दर्या रुद्राक्षे प्रजपेत् सदा ।
भैरव्याः प्रजपेन्मन्त्री शङ्खपद्माख्ययोः प्रिये ।।
श्मशानधुस्तूरैर्मालां जपेद् धूमावती विधौ ।
इति ते कथितः कान्ते महामालाविनिर्णयः ।।

अथ ग्रन्थिं प्रवक्ष्यामि शृणु कान्ते समाहिता ।
येन माला सुसिद्धा च नृणां सर्वफलप्रदा ॥
मालायाश्चाधिका कान्ते ग्रन्थिश्चैका फलप्रदा ।
एकपञ्चाशिकायां च मालायां परमेश्वरि ॥
ब्रह्मग्रंथियुतां मालां सार्द्धद्वितयवेष्टिताम् ।
सर्पादवेष्टनं देवि नागपाशमनोहरम् ॥
सर्वदेवस्य मालायां सर्वत्र परमेश्वरि ।
ब्रह्मग्रन्थिं विधायेत्थं नागपाशमथापि वा ॥
मालायामधिकां देवि चैकां ग्रन्थिं प्रदापयेत् ।
मूलेन ग्रथनं कुर्यात् प्रणवेनाथ वा प्रिये ॥
ग्रन्थिमध्ये च गुटिकां कुर्यादतिमनोहराम् ।
सूत्रद्वयं महेशानि मीलनं कारयेत्ततः ॥
मेरुं च ग्रथनं कुर्यात्तदूर्ध्वे ग्रंथिसंयुतम् ।
एवं मालां विनिर्माय गोपयेद्बहुयत्नतः ॥
कम्पनं धूननं शब्दं नैवं तत्र प्रकाशयेत् ।
करभ्रष्टं तथा छिन्नं महाविघ्नस्य कारणम् ॥
कम्पने सिद्धिहानिः स्याद्धूननं बहुदुःखदम् ।
शब्दे जाते भवेद्रोगं करभ्रष्टाद्विनाशकृत् ॥
छिन्ने सूत्रे भवेन्मृत्युस्तस्माद्यत्नपरो भवेत् ।
एवं ज्ञात्वा महेशानि शान्तिस्वस्त्ययनं चरेत् ॥
कम्पने यो जपेन्मन्त्रं यदि सिद्धिं प्रयच्छति ।
यत्नेन गुरुमानीय द्वात्रिंशदुपचारतः ॥
कुम्भस्थापनकं कृत्वा पूजयेदिष्टदेवताम् ।
ततो हुनेद्बिल्वपत्रैरष्टोत्तरशताहुतिम् ॥
त्रिमध्वक्तेन विधिना धूननेऽपि च सुन्दरि ।

सशब्दे जल्पमाने च ह्येवं कुर्याद्विचक्षणः ॥
करभ्रष्ठे तथा छिन्न पुरश्चरणमाचरेत् ।
जपाद्यन्ते यजेद्देवीं षोडशैरुपचारकैः ॥
प्रत्यहं प्रजपेन्मन्त्रं प्रत्यहं बलिदानकम् ।
पञ्चाङ्गस्य प्रमाणेन सर्वकर्म समापयेत् ॥
दरिद्रः परमेशानि यदि विघ्नपरायणः ।
आद्यन्ते महती पूजा दिक्सहस्रं जपेन्मनुम् ॥
सहस्रैकं हुनेत् पश्चात् सर्वविघ्नोपशान्तये ।
कुम्भतोयैः स्नापयित्वा पुनर्मालां प्रदापयेत् ॥
अनेनैव विधानेन विघ्नजालैर्न लिप्यते ।
॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे हरगौरीसंवादे चतुर्दशः पटलः ॥

पञ्चदश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच :

मन्त्रधारणमात्रेण तत्क्षणात्तन्मयो भवेत् ।
जीवात्मा कुण्डलीमध्ये प्रदीपकलिका यथा ॥
निजेष्टदेवतारूपा देहसंस्था च कुण्डली ।
भुज्यते सैव देहस्था का चिन्ता साधकस्य च ॥
तन्मे ब्रूहि महादेव यद्यहं तव वल्लभा ।

श्रीशङ्करउवाच :

भोगस्तु त्रिविधो देवि दिव्यवीरपशुक्रमात् ।
निर्लिप्तो दिव्यभावस्थः कुण्डली भुज्यते यतः ॥
आजिह्वान्ता कुण्डलिनी वीरस्य वीरवन्दिते ।
महादेव्याः प्रीतये च प्रसादं भुज्यते पशुः ॥
द्विजातेर्दिव्यभावश्च सदा निर्वाणदायकः ।
विप्रो वीरश्च निर्वाणी भवत्येव न संशयः ॥

सायुज्यादिमहामोक्षं नियुक्तं क्षत्रियादिषु ।
पशुना भक्तियुक्तेन प्रसादं भुज्यते यदि ।।
स्वर्गभोगी भवत्येव मरणे नाधिकारिता ।
जन्मान्तरमवाप्नोति महादेव्याः प्रसादतः ।।

दिव्यवीरमते दृष्टिर्जायते नात्र संशयः ।
दिव्यवीरप्रसादेन निर्वाणी नात्र संशयः ।।

प्रसादभोगी यो देवि स पशुर्नात्र संशयः ।
मरणे नाधिकारोऽस्ति पशुभावस्थितस्य च ।।
नैव मुक्तिर्भवेत्तस्य जन्म चाप्नोति निश्चितम् ।

श्रीचण्डिकोवाच :

वद मे परमेशान दिव्यवीरस्य सम्मतम् ।
यत्कृते दिव्यवीरस्य महामुक्तिर्भविष्यति ।।

श्रीशङ्कर उवाच :

साक्षाद्ब्रह्ममयी देवी चाभिशप्ता च वारुणी ।
शापमोचनमात्रेण ब्रह्मरूपधरा परा ।।
निवेदनान्महादेव्यै तत्तद्देवी भवेत् किल ।
मूलाधारात्कुण्डलिनीमाजिह्वान्तां हि भावयेत् ।।
तन्मुखे दानमात्रेण ज्ञानवान् साधको भवेत् ।
यथैव कुण्डली देवी देहमध्ये व्यवस्थिता ।।
तथैव चाचलां ध्यायेत् कलार्द्धं स्वेष्टदेवताम् ।
कुण्डल्या समभागेन शक्तिवक्त्रे प्रदापयेत् ।।
आत्मोत्सृष्टं महापूतं तन्मुखात् परमामृतम् ।
अवश्यमेव गृह्णीयात्तदात्मानं वरानने ।।
उत्सृष्टादिविचारोऽपि कदाचिन्नास्ति ब्रह्मणि ।
गङ्गातोयं परंब्रह्म प्रसादं कस्य तद्वद ।।

गङ्गासागरतोयं वा प्रसादं कस्य वा भवेत् ।
शृणु जाये महामाये तज्जले स्नानमात्रतः ।।
मुक्तिभागी भवेन्मर्त्यस्तज्जले चावगाहनात् ।
पदादिमस्तकान्तं वै स्नानकाले प्रमज्जति ।।
पादस्पर्शेन दोषाय परंब्रह्मणि शैलजे ।
परमात्मनि लीने च तथैव परमेश्वरि ।।
इति ते कथितं कान्ते दिव्यवीरस्य लक्षणम् ।
वीरतन्त्रे योनितन्त्रे माहात्म्यं कथितं मया ।।
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि वीरिकायाश्च लक्षणम् ।
दिव्यशक्तिर्वीरशक्तिर्गुरुशक्तिस्तथा परा ।।
कुलशक्तिः कामिनी च नवशक्तिः कुमारिका ।
श्रीगुरुं पूजयेद्भक्त्या स्वदेहदानपूर्वकम् ।।
अन्यथा तस्य देहस्य निग्रहो जायते ध्रुवम् ।
सप्तजन्मनि सा देवि पुक्वशी पतिवर्जिता ।।
शिवं नत्वा स्वकान्तं च पूजासाधनमाचरेत् ।
कदाचिन्न यजेच्चान्यं पुरुषं परमेश्वरि ।।
अन्यस्य पूजनाच्चण्डि सर्वनाशो भवेद् ध्रुवम् ।
कान्तस्यायुर्विहीनत्वं पुत्राणां नाशमाप्नुयात् ।।
धननाशो भवेन्नित्यं देव्याः क्रोधश्च जायते ।
अवश्यं पूजयेन्नित्यं गुरुदेवं सनातनम् ।।
भद्राभद्रविचारं च या करोति गुरुस्थले ।
तस्या मन्त्रं क्रोधयुक्तं विपत्तिश्च पदे पदे ।।
वरं जनमुखान्निन्दा वरं प्राणान् परित्यजेत् ।
तथापि पूजयेच्चैवं साक्षान्निर्वाणदायकं ।।
सदाभक्ति च कापट्यं वर्जयेद् गुरुपूजने ।
श्रीगुरोस्तेजसं भक्त्या यदि धारणमाचरेत् ।।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं काशी सा नात्र संशयः ।
अभक्त्या परमेशानि यदि धारणमाचरेत् ॥
जपपूजादिकं तस्य वर्द्धते तेजसादिकम् ।

श्री चण्डिकोवाच :

सपत्नीकं यजेद्देवं गुरुं निर्वाणदायकम् ।
तस्यासङ्गं परित्यज्य कथमात्मनि योजनम् ॥

श्री शङ्कर उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुरोराज्ञानुसारतः ।
धारयेत्तेजसं भक्त्या स्वयं लिप्साविवर्जिता ॥
गुरुपत्न्याश्चात्मजश्च श्रीगुरोरात्मयोषितः ।
गुरुपत्नी गुरुः साक्षात् गुरुपुत्रो न संशयः ॥
एकस्य पूजनात् कान्ते उभयोः पूजनं भवेत् ।
गुरुपुत्रो गणेशश्च गुरुपुत्रो षडाननः ॥
एकं गुरुसुतं कान्ते पूजने या सदा रता ।
अन्यं गुरुसुतं भक्त्या पूजयेन्न कदाचन ॥
वीरं वा दिव्यमूर्ति वा कदाचिन्न हि पूजनात् ।
एकस्य पूजनाद्देवि महासिद्धीश्वरो भवेत् ॥
उभयोस्त्रीणि चत्वारि या नारी पूजनं चरेत् ।
तस्याः समस्तं विफलं ध्यानादिजपपूजनम् ॥
यदि भाग्यवशाद्देवि एकं गुरुसुतं लभेत् ।
मनोज्ञं शास्त्रवेत्तारं निग्रहानुग्रहे रतम् ॥
सुन्दरं यौवनोन्मत्तं गुरुतुल्यं न संशयः ।
प्राणान्तेऽपि च कर्तव्यं पूजनं मोक्षदायकम् ॥
न यजेद् यदि मोहेन सैव पापालया भवेत् ।

॥ इति मातृकाभेदतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे पञ्चदशः पटलः ॥

●●

प्रत्येक तन्त्र मन्त्र प्रेमी के लिये आवश्यक रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय

प्रमाणिक तन्त्र-साहित्य का हिन्दी में अभिनव प्रकाशन

विद्या वारिधि आचार्य पं. राजेश दीक्षित द्वारा सम्पादित

हिन्दू तन्त्र शास्त्र



प्राचीन एवं प्रामाणिक हिन्दू शास्त्रों में उल्लिखित विभिन्न कामनाओं के पूरक प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

सजिल्द मूल्य 45/-

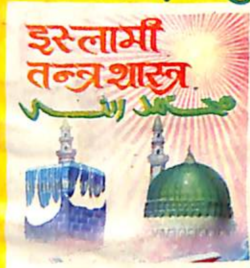
जैन तन्त्र शास्त्र



प्राचीन एवं प्रामाणिक जैन ग्रन्थों के संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

सजिल्द मूल्य 45/-

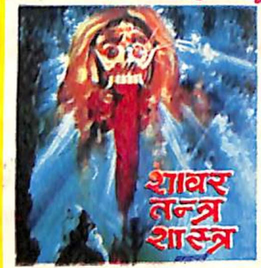
इस्लामी तन्त्र शास्त्र



प्राचीन ग्रन्थों तथा चमत्कारी आमिलों द्वारा संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले इस्लामी प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

सजिल्द मूल्य 45/-

शावर तन्त्र शास्त्र



प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों तथा गुप्त साधकों द्वारा प्राप्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले शावर प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

सजिल्द मूल्य 45/-

चारों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च 10/- आर्डर के साथ १०/- पेशगी भेजना आवश्यक है।

दीप पब्लिकेशन्स, अस्पताल रोड आगरा-3